www.terapanthinfo.com

इस अंक में

अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 56 ■ अंक : 1 ■ 1-15 नवम्बर, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

❐ **सदस्यता शुल्क :**
- एक प्रति : बारह रु.
- वार्षिक : 300 रु.
- त्रैवार्षिक : 700 रु.
- दस वर्षीय : 2000 रु.

❐ **विज्ञापन सहयोग :**
- द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

❐ **सम्पर्क सूत्र :**
अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली–110002

दूरभाष : (011) 23233345
फैक्स : (011) 23239963

E-mail : anuvrat_mahasamiti@yahoo.com
Website : anuvratinfo.org

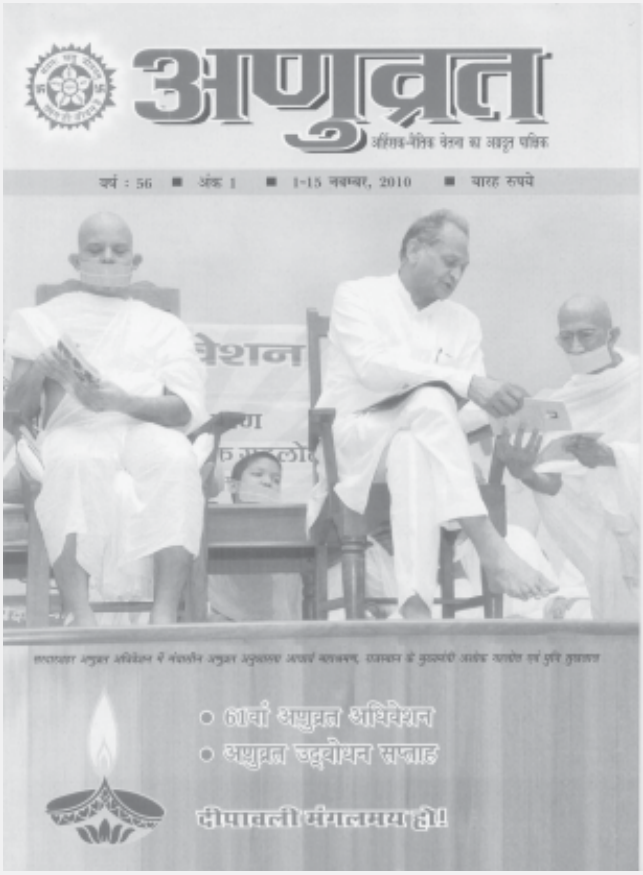

◆ चरित्र-निर्माण का आंदोलन	*आचार्य तुलसी*	3
◆ अणुव्रत की विकास यात्रा	*आचार्य महाप्रज्ञ*	6
◆ भावी जीवन का निर्माण	*आचार्य महाश्रमण*	9
◆ सरलता ही जीवन है	*जनार्दन शर्मा*	11
◆ देखना आसमान बदलेगा	*डॉ. सरोजकुमार वर्मा*	12
◆ रूढ़ि उन्मूलन में आचार्य तुलसी का योगदान	*मुनि राकेशकुमार*	15

■ **स्तंभ**

◆ संपादकीय	2
◆ राष्ट्र चिंतन	10
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की	16
◆ अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह	17-38
◆ 61 वां अणुव्रत अधिवेशन	39-40

www.terapanthinfo.com

बढ़े स्वस्थ जीवन जीने की दिशा में

आजादी के इन छः दशकों में बहुत कुछ बदला है। मनुष्य बदला है, समाज बदला है, संस्कृति बदली है और विचार बदले हैं। विकास की गगनचुम्बी अट्टालिकाएँ खड़ी हुई है, लम्बे-चौड़े-सपाट राष्ट्रीय राजमार्गो पर कभी न रुकने वाला यातायात हिलोरे ले रहा है, श्वेत-शिक्षा-संचार क्रांति के सामने अतीत बौना साबित हो रहा है, सुख-सुविधाओं का अंबार लगा है। इस चकाचौंध को देख लगता है स्वर्ग को धरती पर उतारा जा रहा है और मनुष्य उसकी दूधिया रोशनी में नहा रहा है। इतना विकास, फिर भी मन अशांत है। विकास की अनगिनत पगडंडियों के मध्य कहीं कुछ छूट चला है जो स्वर्ग की नैसर्गिक आभा पर काला दाग लगा रहा है। तभी तो सर्वोच्च न्यायालय ने सरकारी तंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार पर चिंता जताते हुए कहा है **'भ्रष्टाचार पर कोई अंकुश नहीं रह गया है। पैसे दिए बिना कोई काम ही नहीं होता। आयकर, बिक्रीकर और एक्साइज विभाग में जम कर भ्रष्टाचार होता है। सरकार भ्रष्टाचार को कानूनी रूप क्यों नहीं दे देती? इससे हर मामले में दी जाने वाली रकम तय हो जायेगी। प्रत्येक व्यक्ति को मालूम हो जाएगा कि उसे कितनी घूस देनी है। लाचार ऐसे सरकारी अधिकारी, जिन्हें हम दोषी तक नहीं ठहराएंगे क्योंकि महंगाई भी तो बहुत बढ़ गई है!**

भ्रष्टाचार का यह मायाजाल दस-बीस करोड़ लोगों में शिष्टाचार के रुप में पाँव पसार चुका है जिसके दुष्परिणाम शेष 90 करोड़ लोगों को भोगना पड़ रहा है। भ्रष्टाचार में लिप्त दस-बीस करोड़ लोगों में राजनेता, सरकारी तंत्र एवं व्यापारी प्रमुख है जिन्होंने अपने स्वार्थ के लिए भ्रष्ट आचरण को प्रश्रय दिया और देखते-देखते मालामाल हो गए। कॉमनवैल्थ खेल 2010 की आयोजना में 800 हजार करोड़ रुपया जिस तरह से राजनेताओं-अधिकारियों-व्यापारियों ने आपस में बाँटा उसे देख सारा देश स्तब्ध रह गया। ऐसा लगा कि 'कामन' याने सभी की और 'वैल्थ' याने राशि हमारी ही है, खेलों से हमारा क्या लेना देना। खेल तो हो जाएंगे, हो गए, सभी की राशि है उसकी बंदरबांट कर लो। राजनेताओं ने इस खेल में जो कुछ किया है उससे साफ है कि भ्रष्टाचार की जड़े 'ऊपर' से है। जब तक इन ऊपर वालों को सबक नहीं मिलेगा, भ्रष्ट आचरण का यह खेल रुकेगा नहीं।

सर्वोच्च न्यायालय के माननीय न्यायाधीशों को भी यह मालूम है कि प्रत्येक सरकारी कार्यालय में काम करवाने का निश्चित सुविधा शुल्क है जिसका भुगतान करने के उपरांत ही फाईल आगे सरकती है, बढ़ती है। अच्छा ही हुआ कि माननीय न्यायाधीशों ने इस सत्य को उजागर कर दिया। जो सत्ता के शीर्ष पर बैठे हैं उनकी भी स्थिति यही है कि यदि कोई कार्य करवाना है तो पहले नजराना चुकाओ, सांसद मद से जितना लेना चाहो ले लो पर उसका कुछ हिस्सा हमारी भेंट चढ़ाओ, हमें भी तो चुनाव लड़ना है, खर्चों का प्रबंध करना है। अधिकारी, राजनेताओं की दुहाई देकर तथा सरकारी तंत्र अधिकारियों की दुहाई देकर दोनों हाथों से जनता का दोहन कर रहे हैं और जनता विवश है देने को।

स्वतंत्र भारत में शीघ्र ही नैतिक पतन की स्थिति आयेगी इसका अंदाजा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने 1950 के दशक में ही कर लिया था इसलिये उन्होंने भारतीय आजादी की प्रसववेला में नए मनुष्य और स्वस्थ समाज निर्माण के सपने के साथ अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्त्तन किया। अणुव्रत विचार क्रांति को जन-जन तक पहुँचाने के लिए राष्ट्रव्यापी पदयात्राएँ की और नैतिक मूल्यों के महत्व को प्रतिपादित करते हुए सादगी एवं संयमित जीवन जीने का उद्घोष किया। आचार्य तुलसी के स्वप्न को धरती पर उतारने के लिए आवश्यक है कि हम एक स्वर से संयम ही जीवन है का उद्घोष कर बढ़ते भ्रष्ट आचरण पर अंकुश लगाने की पहल करें। अणुव्रत एक आचार संहिता है जो जीवन में व्याप्त दुर्बलताओं को परिष्कृत कर स्वस्थ जीवन जीने की दिशा देता है। सभी को प्रकाश पर्व की हार्दिक शुभकामनाएं

जन-जन को गले लगाकर प्रेम के दीप जलाएं।
भ्रष्टाचार के गहन तिमिर को सब मिल दूर भगाएं।।

• डॉ. महेन्द्र कर्णावट

www.terapanthinfo.com

चरित्र-निर्माण का आंदोलन

आचार्य तुलसी

नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। विचार से आचार प्रभावित होता है और आचार का प्रभाव विचारों पर होता है। विचार और आचार की समन्विति ही जीवन है, किंतु विचार जगत् में उथल-पुथल मचे बिना आचरण की बात पैदा नहीं हो सकती। इसलिए अणुव्रत ने सबसे पहले विचार-क्रांति की ओर ध्यान केंद्रित किया। अणुव्रत का एकमात्र उद्देश्य है जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयम और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करना।

संसार में दो प्रकार के व्यक्ति हैं। प्रथम कोटि के व्यक्ति वे हैं, जो अंधकार से प्रकाश की ओर जाना चाहते हैं। दूसरी कोटि में वे व्यक्ति आते हैं, जो अंधकार में जीते हैं और अंधकार में ही जीना पसन्द करते हैं। ऐसे व्यक्तियों के जीवन में कोई क्रांति घटित नहीं हो सकती। क्रांति की बात वहाँ पैदा होती है, जहाँ अंधकार को छोड़ आलोक की यात्रा पर प्रयाण किया जाता है।

क्रांति दो तरह की होती हैं। सीधी, समतल सड़क पर सपाट गति की तरह एक क्रांति आती है और घुमावदार ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर कुछ झटकों को महसूसते हुए दूसरी तरह की क्रांति आती है। सपाट गति में कोई घटना नहीं होती, इसलिए उसमें कोई अप्रत्याशित परिवर्तन नहीं आता। कोई भी अघटना हमारी स्थूल आँखों की पकड़ में नहीं आ सकती। फिर भी उसमें धीरे-धीरे जो परिवर्तन आता है, वह समाज की तस्वीर को ही बदल देता है। आकस्मिक रूप से किसी भी मोड़ पर कोई झटका लगता है, उससे एक बार तो बहुत बड़ा परिवर्तन-सा प्रतीत होता है, किंतु उसके स्थायित्व के बारे में आश्वस्ति नहीं मिलती। बहुत-सी क्रांतियाँ इसीलिए अर्थहीन हो जाती हैं कि वे क्षणिक चमत्कार दिखाकर अपने प्रभाव को समाप्त कर देती हैं। कुछ घटनाएं स्थायी हो सकती हैं, किंतु वह सब निर्भर करता है, समकालीन परिस्थितियों और जनता की मनःस्थितियों पर।

हिंसा और भ्रष्टाचार की धधकती हुई ज्वाला मानवीय मूल्यों को जिस रूप में भस्मसात् कर रही है, यह एक बड़ी घटना है। इसके प्रतिबिम्ब बहुत लोगों की आँखों में हैं। इसका परिणाम एकदम सामने आता है, इसलिए इसकी त्रासदी भयावह है किंतु अणुव्रत की चिंगारी ने चुपचाप जो काम किया है, वह किसी की दृष्टि का केंद्र बने या नहीं, पर ईमानदारी का तकाजा है कि अहिंसा, शांति, पवित्रता और चरित्र के क्षेत्र में नयी धारा के उद्गम अणुव्रत का समुचित मूल्यांकन हो और इसी दृष्टि से उसके विगत कर्तृत्व और भावी संभावनाओं पर एक तटस्थ किंतु आलोचनात्मक अध्ययन किया जाए।

चरित्र-निर्माण का आंदोलन

अणुव्रत एक आंदोलन है, इसलिए यह गत्यात्मक है। अणुव्रत चरित्र निर्माण की प्रक्रिया है, इसलिए इसमें स्थितिपालकता भी है। इस आंदोलन की पृष्ठभूमि में एक नीतिमान पीढ़ी के निर्माण का सपना था। यह स्वप्न देखा था हमने सन् 1949, छापर चातुर्मास में। उस समय भारत स्वतंत्र हुआ था। भारतीय लोग स्वतंत्रता की खुशी में झूम रहे थे। उस समय उनके सामने कोई लक्ष्य नहीं था, दिशा नहीं थी, महत्त्वाकांक्षा नहीं थी और साधन सामग्री भी नहीं थी, जिसके द्वारा वे बेहतर जिंदगी जीने की बात सोच सकें। उस समय एक ऐसे सचेतन प्रयास की जरूरत थी, जो व्यक्ति-व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वायत्तता की अनुभूति देकर अपनी खोयी हुई अस्मिता और नैतिक मूल्यों का बोध करा सके। हमारे मन में उस समय कोई बहुत बड़ी कल्पना और योजना नहीं थी, पर एक सुचिंतित प्रक्रिया के आधार पर थोड़े से कार्यकर्त्ताओं के साथ सरदारशहर की धरती पर हमने अपना अभियान शुरू कर दिया।

नैतिक उन्नति का आधार है नैतिक विचार। विचार से आचार प्रभावित होता है और आचार का प्रभाव विचारों पर होता है। विचार और आचार की समन्विति ही जीवन है, किंतु विचार जगत् में उथल-पुथल मचे बिना आचरण की बात पैदा नहीं हो सकती। इसलिए अणुव्रत ने सबसे पहले विचार-क्रांति की ओर ध्यान केंद्रित किया। अणुव्रत का एकमात्र उद्देश्य है जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयम और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करना। जिस समय जातीयता, प्रांतीयता, वर्ण-व्यवस्था, भाषा आदि को लेकर संकीर्ण मनोवृत्ति वाले लोगों में एक प्रकार का अंतर्द्वन्द्व चल रहा था, उस समय अणुव्रत ने मानवतावादी दृष्टिकोण लेकर लोक-जीवन में चारित्रिक मूल्यों की प्रतिष्ठा देने का संकल्प व्यक्त किया। इस संकल्प की पूर्ति के लिए अणुव्रत-यात्राओं का दौर प्रारंभ हुआ।

www.terapanthinfo.com

हमारे पास गृहस्थ कार्यकर्त्ता सीमित थे, इसलिए हमने साधु-साध्वियों को इस दृष्टि से तैयार किया। उनकी पद-यात्रा का विस्तार हुआ। कश्मीर से कन्याकुमारी तक अणुव्रत के कार्यक्रम होने लगे।

वह समाज और देश सौभाग्यशाली होता है, जिसमें मानवता या नैतिकता की चर्चा होती रहती है। वे लोग भी कम सौभाग्यशाली नहीं होते, जिन्हें ऐसी चर्चा सुनने के अवसर उपलब्ध होते हैं। उन लोगों का सौभाग्य और अधिक होता है, जिनको ऐसी चर्चाओं की प्रस्तुति करने का मौका मिलता है। अणुव्रत आंदोलन विशुद्ध अर्थ में नैतिक आंदोलन है। एक दृष्टि से यह आत्मदर्शन का आंदोलन है। सामाजिक संदर्भों में यह अपराध-चेतना को बदलने का आंदोलन है। अणुव्रत परिणाम से अधिक प्रवृत्ति की चिंता करता है। प्रवृत्ति नहीं रहेगी तो परिणाम अपने आप समाप्त हो जायेगा। हमारे समाज या देश में अपराध बढ़ रहे हैं, यह जितनी चिंता का विषय है, उससे अधिक चिन्तनीय बिन्दु तो यह है कि अपराध क्यों बढ़ रहे हैं? अपराध के कारणों को समझकर उनकी रोकथाम के लिए प्रयत्न हो तो नैतिक मूल्यों का अवतरण निःसंदेह अपने आप ही संभव हो जायेगा।

सम्यक् दर्शन, सम्यक् संकल्प और सम्यक् आचरण अणुव्रत का यह त्रिसूत्री कार्यक्रम व्यक्ति के जीवन में अकल्पित क्रान्ति ला सकता है। व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में अनेक लोगों ने ऐसा अनुभव किया है।

क्रांति के चरण

अणुव्रत ने विचार और आचार-दोनों क्षेत्रों में क्रांति के बीज बोये हैं। जहाँ जहाँ वे बीज अंकुरित हुए हैं, अणुव्रत के प्रति लोगों का दृष्टिकोण बदला है। वैचारिक दृष्टि से अणुव्रत की भूमिका काफी सशक्त है। हर समझदार और विवेकी व्यक्ति इसकी उपयोगिता से सहमत है। अपने आपको नास्तिक मानने वाले लोग भी अणुव्रत की नीति और आचार संहिता से प्रभावित हैं। क्योंकि अणुव्रत ने युग की चुनौतियों का सामना कर समाज में चरित्र की प्रतिष्ठा की है। अणुव्रत की आस्था व्यक्ति-निर्माण में है। व्यक्ति जितना नैतिक और आचारनिष्ठ होगा, समाज उतना ही उन्नत, संस्कृत और समृद्ध होगा। व्यक्ति की आचार-निष्ठा और नैतिकता का जीवन्त साक्ष्य होता है उसका अपना मन और व्यवहार। यदि वह चरित्र को सर्वाधिक मूल्य देता है तो किसी भी स्थिति में अवांछनीय तरीकों से व्यवसाय नहीं करेगा। यदि वह चरित्र को अपना जीवन मानता है तो सत्यनिष्ठा और धर्मनिष्ठा से कतराकर अपने स्वीकृत सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ नहीं करेगा।

अणुव्रत की आस्था व्यक्ति-निर्माण में है। व्यक्ति जितना नैतिक और आचारनिष्ठ होगा, समाज उतना ही उन्नत, संस्कृत और समृद्ध होगा। व्यक्ति की आचार-निष्ठा और नैतिकता का जीवन्त साक्ष्य होता है उसका अपना मन और व्यवहार। यदि वह चरित्र को सर्वाधिक मूल्य देता है तो किसी भी स्थिति में अवांछनीय तरीकों से व्यवसाय नहीं करेगा। यदि वह चरित्र को अपना जीवन मानता है तो सत्यनिष्ठा और धर्मनिष्ठा से कतराकर अपने स्वीकृत सिद्धांतों के साथ खिलवाड़ नहीं करेगा।

आचार के क्षेत्र में जो काम किया है, उसके सब आंकड़ों का सर्वांगीणता के साथ प्रस्तुतीकरण हो तो वह संसार की एक नयी घटना हो सकती है। किंतु अणुव्रत-कार्य का संपूर्ण आकलन न होने के कारण उसका पूरा विवरण प्राप्त करना संभव नहीं है। फिर भी साधारण रूप में एक विहंगावलोकन किया जाए तो कुछ निष्कर्ष इस रूप में निकलते हैं-

- मानवीय एकता का विकास।
- सहअस्तित्व की भावना का विकास।
- सांप्रदायिक सद्भावना का विकास।
- राष्ट्रीय चरित्र का विकास।
- धर्म के क्रांतिकारी स्वरूप का विकास।

राष्ट्रीय चरित्र के संदर्भ में तीन बातें महत्त्वपूर्ण हैं।

- राजनैतिक बुराइयाँ।
- सामाजिक कुरूढ़ियाँ।
- दुर्व्यसन।

राजनीति से अलिप्त रहकर भी अणुव्रत ने राजनीति पर प्रभाव छोड़ा है। दलबदल की नीति, स्वार्थपरता और वोटों के विक्रय पर अणुव्रत ने जितना तीखा प्रहार किया है, शायद ही किसी आंदोलन ने किया हो। संसदीय अणुव्रत मंच द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सांसदों को जो खरी-खरी बातें सुनने को मिली, उनकी पलकें झुक गयीं। उस वातावरण ने वहाँ उपस्थित सभी सासंदों को अपना आत्म-निरीक्षण करने के लिए विवश कर दिया।

सामाजिक कुरूढ़ियों से समाज इतना जर्जर और सत्त्वहीन बन जाता है कि वह युग की किसी चुनौती को झेल ही नहीं सकता। विज्ञान और अंधविश्वासों के चौखटे में पनपने वाली न जाने ऐसी कितनी कुरूढ़ियाँ हैं, जो सामाजिक विकास के आगे बाधाएं बनकर खड़ी हो जाती हैं। जन्म, विवाह, मृत्यु आदि जीवन के ऐसे कौन-से प्रसंग हैं, जिनसे संबंधित परम्पराओं के खिलाफ अणुव्रत के बगावती चरण आगे बढ़े। फलतः आज भारत की धरती पर अणुव्रत से संस्कारित परिवारों में अशिक्षा, पर्दा, मृत्यु भोज, मृत्यु के प्रसंग में प्रथा रूप में रोना, बाल-विवाह, वृद्ध-विवाह, विधवा स्त्री अवमानना आदि

www.terapanthinfo.com

परम्पराएं चरमराकर टूट गयी हैं। दहेज और प्रदर्शन की समस्या आज भी ज्वलन्त है। अणुव्रत इस दिशा में भी सतर्क है। अणुव्रती परिवारों में दहेज का ठहराव किसी भी स्थिति में नहीं होता। इसके साथ-साथ सैकड़ों-सैकड़ों युवक युवतियों ने हजारों लोगों की साक्षी से यह संकल्प स्वीकारा है कि वे जीवन भर कुंवारापन ओढ़कर रह सकेंगे, पर जहाँ दहेज की मांग होगी, वहाँ शादी नहीं करेंगे।

जिस दिन समाज में किसी प्रकार की रूढ़ि नहीं रहेगी, और नये सिरे से जन्म लेने वाली रूढ़ि को पनपने का अवसर नहीं मिलेगा, वह दिन अणुव्रत के इतिहास में विशिष्ट दिन होगा।

अणुव्रत का एक अभियान है व्यसन मुक्ति। कुछ लोगों की दृष्टि में मादक तथा नशीले पदार्थों का सेवन सांस्कृतिक उच्चता, सभ्यता और स्तर का प्रतीक है। किन्तु यह वास्तविकता नहीं है। ऐसे पदार्थों का सेवन करने वाले व्यक्ति अपनी उच्चता, सभ्यता और स्तर को विवादास्पद बना लेते हैं। मादक पदार्थ शरीर, मन और मस्तिष्क पर बुरा प्रभाव छोड़ते ही हैं, धार्मिक या आध्यात्मिक दृष्टि से भी उनके उपयोग का कोई औचित्य नहीं है। अणुव्रत ने व्यक्तिगत और सामूहिक रूप में व्यसन-मुक्ति के लिए व्यापक अभियान चलाया। इस अभियान में हजारों व्यक्ति शराब, सिगरेट, अफीम, जुआ आदि दुर्व्यसनों की गिरफ्त से मुक्त हुए। इससे उनको अन्य लाभों के साथ आर्थिक लाभ भी मिलता है। अति मात्रा में शराब, सिगरेट, अफीम आदि का सेवन करने वाले लोग जब इनको छोड़ देते हैं, तब उनके परिवार में जो खुशी होती है, वह अनिर्वचनीय होती है।

युवा पीढ़ी पर प्रभाव

धर्म नेताओं और धार्मिक बुजुर्गों को युवा पीढ़ी की धर्मनिरपेक्षता पर बड़ी चिंता है। उनकी दृष्टि में यह समय का दोष है, शिक्षा का दोष है और संस्कारों का दोष है। किन्तु मैं इस स्थिति को लेकर कभी चिंतित नहीं होता। मेरे अभिमत से युवा पीढ़ी को धर्म से नहीं, धर्म के नाम पर चलने वाले ढकोसलों से परहेज है। वह चरित्र का नहीं, रूढ़ क्रियाकाण्डों का विरोधी है। अणुव्रत ने धर्म को जिस रूप से व्याख्यायित और निरूपित किया है, कोई भी युवा उससे विमुख नहीं हो सकता। यही कारण है हमारी धर्म-सभाओं में सैकड़ों-हजारों युवक-युवतियाँ जिज्ञानुभाव से निरन्तर उपस्थित होते हैं। अपनी चारित्रिक उज्ज्वलता के प्रति वे जागरूक भी रहते हैं। युवा पीढ़ी की शक्ति को सही दिशा में नियोजित करने की अपेक्षा है, वास्तव में यह एक कार्यकारी पीढ़ी है।

धर्म के क्रियाकाण्डी रूप को बदलने के लिए अणुव्रत ने धर्मक्रांति के पाँच सूत्र दिये-

1. बौद्धिकता
2. प्रायोगिकता
3. समाधानपरकता
4. वर्तमान प्रधानता
5. धर्म सद्भावना

इन सूत्रों से धर्म के क्षेत्र में व्याप्त चिंतनहीनता, रूढ़िता, अंधविश्वास, परलोक-सुधार और साम्प्रदायिक कट्टरता के भाव विगलित हुए हैं। धर्म की वैज्ञानिकता और वर्तमान जीवन में उससे प्राप्त होने वाले लाभ का अनुभव हो जाए तो कोई भी प्रबुद्ध विचारक या युवक धर्म से विमुख नहीं जा सकता।

अणुव्रत के सिद्धांत ऊँचे हैं, पर संकल्प करने मात्र से तो वे जीवनगत होते नहीं। आदमी नैतिक बनना चाहता है पर परिस्थितियों का दबाव आते ही उसका मन बदल जाता है। ऐसी स्थिति में अणुव्रत का उद्देश्य फलित नहीं हो सकता। इस समस्या को समाधान देने के लिए अणुव्रत के साथ प्रेक्षाध्यान का कार्यक्रम जोड़ा गया। प्रेक्षाध्यान का प्रयोग करने से ग्रन्थियों के स्राव बदलने लगते हैं। उस रासायनिक परिवर्तन का प्रभाव मनुष्य की आदतों पर पड़ता है। अनेक व्यक्तियों ने इस प्रयोग से अपने जीवन में अद्भुत रूपान्तरण अनुभव किया है। इस दृष्टि से यह माना जा सकता है कि अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान एक-दूसरे के पूरक हैं। अणुव्रत आंदोलन को रचनात्मक आंदोलन का रूप देने में प्रेक्षाध्यान तक की अहम भूमिका है।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत की विकास यात्रा

आचार्य महाप्रज्ञ

दुनिया में अनेक प्रकार के लोग होते हैं। कुछ लोग अतीत की यात्रा में खोए रहते हैं। कुछ वर्तमान को बहुत मूल्य देते हैं और कुछ लोग भविष्य की कल्पना में डूबे रहते हैं। ऐसे व्यक्ति बहुत कम होते हैं, जो त्रैकालिक होते हैं। आचार्य तुलसी उन व्यक्तियों की सूची में अग्रणी हैं, जो त्रैकालिक होते हैं। उन्होंने अतीत का अनुसंधान किया, वर्तमान को समझने का प्रयत्न किया और अंगुलियां हमेशा युग की नब्ज पर रखीं। भविष्य को उन्होंने एक दूरद्रष्टा की दृष्टि से देखा और उसकी आहट अनुभव की। ऐसे त्रैकालिक चिंतन करने वाले व्यक्ति बहुत कम होते हैं। अणुव्रत उसी त्रैकालिक सूझबूझ का परिणाम है।

पंडित जवाहरलाल नेहरू से आचार्य तुलसी की बात हो रही थी। पंडितजी ने कहा 'आचार्यजी! आप बताएं कि आप क्या चाहते हैं?' आपकी मांग क्या हैं? आचार्यश्री ने कहा हमारी कोई मांग नहीं है। हम कोई चाह लेकर आपके पास नहीं आए हैं। हम तो आप को कुछ देने आए हैं।

पंडित नेहरू को बहुत अजीब-सा लगा। वे आचार्यश्री को कुछ देर तक गौर से देखते रहे। उनके पास जो भी आता था, उसकी कुछ मांग होती थी। उन्हें पहली बार कोई आदमी मिला, जो स्वयं चलकर कुछ देने आया था। देने की बात कही तो पंडितजी ने आश्चर्य से आचार्यश्री की ओर देखा। आचार्यश्री ने कहा 'पंडितजी! देखिए, हिंदुस्तान अभी-अभी आजाद हुआ है। महात्मा गांधी अब रहे नहीं। उनका इस देश की जनता के दिल-दिमाग पर बड़ा प्रभाव था। उनकी

छत्रछाया में मानवीय मूल्यों की स्थापना की दृष्टि से लोग आश्वस्त थे। उनके बाद लोगों की यह अनुभूति कायम रहेगी, ऐसा विश्वासपूर्वक नहीं कहा जा सकता। सत्ता और धन-वैभव आदमी को अनियंत्रित और उच्छृंखल बना देता है। फिर भारत तो अभी नवोदित राष्ट्र है। आशंका इस बात की है कि लोगों में सत्ता और पदप्राप्ति की लालसा जागेगी। राजनीति और अर्थ के क्षेत्र में लोग नैतिक मूल्यों की ओर से बेपरवाह हो जाएंगे। ऐसी स्थिति में मूल्यों का ह्रास होगा। इस पर आपने भी चिंतन किया होगा। हमने भी किया है और इसी दृष्टि से हमने मानव सुधार का एक छोटा-सा आंदोलन शुरू किया है। चारित्रिक स्तर नीचे की ओर न जाएं, चारित्रिक मूल्य यथावत रहें, इसके लिए अणुव्रत के अंतर्गत हमने एक आचार-संहिता तैयार की है। राष्ट्र-निर्माण की दृष्टि से मेरा संघ, मेरे साधु-साध्वियां आपका सहयोग करेंगे, यह बताने के लिए हम आपके पास आए हैं।

पंडितजी ने ऐसी बात सुनी, जिसकी उन्हें कल्पना नहीं थी। उस समय राष्ट्र निर्माण का सपना उनकी आंखों में था। आचार्यश्री की बात सुनकर उनका मन प्रसन्न हो गया। प्रसन्न मन से उन्होंने कहा 'आचार्यजी! आपका प्रयास सराहनीय है। हम आपके इस कार्य में पूरी तरह सहयोगी रहेंगे।'

इसीलिए मैंने कहा 'आचार्य तुलसी त्रैकालिक व्यक्तित्व के धनी थे। वर्तमान में जीते थे, किंतु भविष्य को उन्होंने कभी अपनी आंखों से ओझल नहीं किया। अणुव्रत आंदोलन उस त्रैकालिक प्रज्ञा और प्रतिभा की फलश्रुति है। अणुव्रत केवल नैतिकता नहीं है। मानवता, नैतिकता और अहिंसा तीनों का समन्वय है। अगर मानवता नहीं है तो नैतिकता नहीं होगी और नैतिकता के बिना अहिंसा की कल्पना नहीं की जा सकती। अणुव्रत का प्रारंभ ही अहिंसा के साथ हुआ है। मैं मानवीय एकता में विश्वास रखूंगा। इसके मूल हार्द में अहिंसा का बीज छिपा है।

अबीबुर्रहमान, जो अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य विचारक हैं, चिंतक हैं। उन्होंने कहा 'आचार्यश्री ने अहिंसा के क्षेत्र में बहुत कुछ किया है। मैं समझता हूं हमने कुछ नया नहीं किया। हमने तो वही किया, जो हमारा कर्त्तव्य था। अणुव्रत का मुख्य सूत्र है मानव जाति की एकता का सम्मान करना। यह कोई नया सूत्र नहीं। हमने तो अपना अभियान भी मानव को केन्द्र में रखकर शुरू किया। उसके कल्याण के लिए जो भी जरूरी है, अणुव्रत के अंतर्गत आ जाता है। सबसे पहली बात है मानव जाति में विश्वास। इसी के संदर्भ में एक संकल्प है मैं जाति और संप्रदाय के आधार पर किसी को अस्पृश्य नहीं मानूंगा, हिंसा नहीं करूंगा।

मानवता, नैतिकता, अहिंसा इनको कभी बांटा नहीं जा सकता। एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। एक को छोड़ देते हैं, तो दूसरा अधूरा रह

www.terapanthinfo.com

'आचार्य तुलसी त्रैकालिक व्यक्तित्व के धनी थे। वर्तमान में जीते थे, किंतु भविष्य को उन्होंने कभी अपनी आंखों से ओझल नहीं किया। अणुव्रत आंदोलन उस त्रैकालिक प्रज्ञा और प्रतिभा की फलश्रुति है। अणुव्रत केवल नैतिकता नहीं है। मानवता नैतिकता और अहिंसा-तीनों का समन्वय है।

जाता है। इसलिए अणुव्रत को एक धर्म कहा जा सकता है। ऐसा धर्म, जिसके साथ कोई संप्रदाय या खेमा जुड़ा हुआ नहीं है। संप्रदाय का मतलब यह है कि कोई जैन है तो उसका बेटा भी जैन हो जाता है। वैष्णव है तो उसकी संतान भी वैष्णव होती है। इसी तरह मुसलमान का बेटा, मुसलमान और ईसाई का बेटा ईसाई। पर अणुव्रती बाप का बेटा भी अणुव्रती हो, उसकी संहिता को वह अंगीकार करेगा, स्वीकार करेगा। यह स्वीकरण है, कोई परंपरा नहीं है। समझ-बूझकर लिया गया व्रत है। यह सावधिक नहीं, पूर्णकालिक है। अणुव्रत के पीछे न कोई परंपरा है, न संप्रदाय है। मानव जाति के विकास का ऐसा पथदर्शन है, जिसके आलोक में आदमी अपना मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

अणुव्रत की अपेक्षा शाश्वत है और दूसरी चीजों की अपेक्षा सामयिक होती है दूसरी चीजों की कभी अपेक्षा होती है, कभी नहीं होती। अणुव्रत की तो हर कदम पर अपेक्षा है। समाज अतीत में भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। जहां समाज है, वहां नैतिकता की अपेक्षा हर समय रहेगी। बिना नैतिकता के कोई समाज लंबे समय टिक नहीं सकता। इसलिए अणुव्रत को असांप्रदायिक और शाश्वत धर्म कहा जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन के साथ ही प्रचार-प्रसार की दृष्टि से एक पत्र का प्रकाशन शुरू हुआ। अणुव्रत के नाम से वह आज भी प्रकाशित हो रहा है। उसका नया अंक अभी आया। डॉ. महेन्द्र कर्णावट इसके संपादक हैं। अणुव्रत के संस्कार इन्हें विरासत में मिले हैं। मैंने अभी कहा था कि जरूरी नहीं कि अणुव्रती का बेटा अणुव्रती हो, किंतु कहीं-कहीं ऐसा भी होता है। देवेन्द्रजी शुरू से ही अणुव्रत के साथ जुड़े रहे हैं। उन्होंने अपने पूरे परिवार को अणुव्रत के संस्कार दिये हैं। महेन्द्र डॉक्टर है, किंतु यह उसकी पेशे से पहचान है। उसकी वास्तविक पहचान यह है कि वह अणुव्रती है। अणुव्रत पर देवेन्द्रजी के साथ मिलकर इसने बहुत साहित्य लिखा। अगर अणुव्रत के इतिहास को जानना है तो अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित साहित्य को देखिए। अणुव्रत की पूरी यात्रा से आप अवगत हो जाएंगे। श्रम तो लगा, किंतु बहुत उपयोगी कार्य हुआ है।

एक बात मैं आपको बता दूं कि अणुव्रत का पूर्व रूप रहा है 'जनपथ'। बहुत वर्षों तक अणुव्रत के प्रचार-प्रसार के लिए 'जनपथ' का प्रकाशन होता रहा। डॉ. मूलचंद सेठिया, जो प्रबुद्ध साहित्यकार हैं, हमारे समाज के प्रखर विद्वान और चिंतक हैं। राजस्थान यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर रहे हैं, उन्होंने जनपथ का संपादन किया था। पहले आचार्य तुलसी के सान्निध्य में विचार गोष्ठियां होती थीं। उन गोष्ठियों में बहुत सारे प्रवक्ता जो प्रायः हर कौम के होते थे, उसमें भाग लेते थे। मुक्त चर्चा होती थी और लोगों के विचार सामने आते थे। दिल्ली में बहुत व्यापक स्तर पर ऐसी विचार परिषदें आयोजित होतीं। बड़े-बड़े वक्ता और विचारक भाग लेते। जैनेन्द्रजी, यशपालजी, सत्यदेव विद्यालंकार, रतनलाल जोशी जैसे कितने ही विद्वान, विचारक और पत्रकारिता से जुड़े लोग उसमें भाग लेते। अणुव्रत की विकास यात्रा में सहयोगी रहे इन लोगों को कभी विस्मृत नहीं किया जा सकता। जनपथ के बाद इसका विकसित रूप आया-अणुव्रत।

अणुव्रत के रूप में निरंतर निखार आता रहा। हर संपादक ने अपनी दृष्टि के अनुसार इसे नया रूप देने की कोशिश की। अभी यह अच्छी साज-सज्जा और सामग्री के साथ प्रकाशित हो रहा है। इस संदर्भ में अभी सम्मान का भी प्रसंग आया। अणुव्रत लेखक मंच अणुव्रत के अंतर्गत ही एक प्रवृत्ति है। लेखन की दृष्टि से जिस रचनाकार का उत्कृष्ट सहयोग रहता है, अणुव्रत महासमिति प्रतिवर्ष उसे 'अणुव्रत लेखक' के रूप में सम्मानित करती है। इस बार का सम्मान डॉ. कृष्णकुमार रत्तू को दिया गय। डॉ. रत्तू ने अणुव्रत के संदर्भ में काफी गहराई से काम किया है। उन्होंने अहिंसा यात्रा पर भी विस्तार से लिखा है। अणुव्रत लेखक के रूप में पुरस्कृत होना उनके लिए बहुत छोटी बात है। जो काम उन्होंने किया, वह बहुत बड़ा है। जयपुर दूरदर्शन के साथ जुड़े हुए व्यक्ति हैं। मीड़िया से जुड़ा आदमी गंभीर लेखन से भी जुड़ा हो, यह आश्चर्य की ही बात है। मैं व्यंग्य के रूप में नहीं कर रहा हूं, व्यंग्य करना मुझे अभीष्ट भी नहीं। ऐसा देखा जा रहा है कि गंभीरता पूरी तरह से इस क्षेत्र से गायब होती जा रही है, सनसनीखेज और चटपटी वृत्ति ज्यादा हावी है।

मुंबई प्रवास में मुंबई दूरदर्शन के निदेशक मेरे पास आए और दूरदर्शन कार्यालय में आने का अनुरोध किया। उनके अनुरोध पर मैं वहां गया भी। मैंने उनसे कहा 'आप मीडिया के लोग पब्लिक को जो दृश्य और श्रव्य सामग्री परोसते हैं, उसे जनभोग्य नहीं कहा जा सकता। दूरदर्शन पर आज जो दिखाया जा रहा है, उसे किसी भी दृष्टि से उचित नहीं कहा जा सकता। आप कह सकते हैं कि जनता का उसके बिना आकर्षण नहीं बनता। लेकिन क्या लोगों को आकर्षित करना ही दूरदर्शन का एकमात्र

www.terapanthinfo.com

ध्येय है? यह जो नंगापन दिखाया जा रहा है, इससे आप जनता को तो आकर्षित कर सकते हैं, किंतु दूरगामी परिणाम की दृष्टि से यह ठीक नहीं है। इस आकर्षण का परिणाम आप रोज बढ़ती जा रही आपराधिक प्रवृत्ति के रूप में देख ही रहे हैं। मीडिया अपनी इस नीति पर पुनर्विचार करें।'

मैं चाहता हूं कि मीडिया धर्म, नैतिकता, मानवीय मूल्य और अहिंसा जैसे विषयों पर भी अपना ध्यान केंद्रित करे। एक संतुलन तो रहे। अगर ऐसा नहीं किया गया तो भावी पीढ़ी को पथभ्रष्ट करने के उत्तरदायी आप होंगे।

बीकानेर चातुर्मास से पहले ही आचार्य तुलसी का स्वर्गवास हो गया। उस समय अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष स्व. सीताशरण शर्मा हमारे पास आए और बोले 'आचार्यश्री! अब अणुव्रत का क्या होगा? आचार्य तुलसी तो रहे नहीं। अब कौन इसे संरक्षण देगा, कौन मार्गदर्शन करेगा।' यह बात उन्होंने बहुत निराश मन से कही।

मुझे उनकी बात सुनकर बहुत आश्चर्य हुआ। मैंने कहा 'अणुव्रत का क्या होगा? यह बात आपके मन में आई कैसे? अणुव्रत कोई बच्चा नहीं, कि उसका बाप चला गया तो वह लावारिस हो जाए। अणुव्रत तो अब जन-जन का हो चुका है। तेरापंथ और आचार्य तुलसी का होने के कारण अब वह मेरा है। हमारे यहां जो कुछ भी चलता है, वह परंपरा से चलता है। पूज्य कालूगणी की संपदा एक दिन आचार्य तुलसी की गोद में आ गई थी। उसी तरह आचार्य तुलसी का सर्वस्व अब मेरे पास में है। गुरुदेव ने अणुव्रत का तो प्रारंभ से लेकर आज तक सब कुछ मेरे ही कंधों पर डाल रखा था। अब उनके बाद मेरी जिम्मेदारी और बढ़ गई है। आप देखते रहें। पांच वर्ष बाद अणुव्रत का क्या से क्या होता है, आप यह देख लीजिएगा।'

सीताशरणजी नहीं रहे। आज होते तो देखते कि अहिंसा यात्रा के द्वारा अणुव्रत ने कितनी बड़ी ऊंचाई प्राप्त की है। मैं मानता हूं कि जो शाश्वत होता है, वह त्रैकालिक होता है। उसकी अपेक्षा हमेशा रहती है। उसे कोई नकार नहीं सकता। एक दिन महरौली के इसी स्थान पर आचार्य तुलसी का स्वागत और अभिनंदन हो रहा था। अनेक वक्ता आचार्यश्री के सम्मान में बोले। गुरुदेव ने अपने वक्तव्य में कहा 'आप लोगों ने मेरी और अणुव्रत की प्रशंसा में इतना कुछ कहा। इतने अभिनंदनपत्र और सम्मानपत्र भेंट किये। आप बताएं मैं इन्हें कहां रखूं? मेरे पास तो हाथ भर की भी जगह नहीं है।'

अणुव्रत के पीछे न कोई परंपरा है, न संप्रदाय है। मानव जाति के विकास का ऐसा पथदर्शन है, जिसके आलोक में आदमी अपना मार्ग प्रशस्त कर सकता है। अणुव्रत की अपेक्षा शाश्वत है और दूसरी चीजों की अपेक्षा सामयिक होती है दूसरी चीजों की कभी अपेक्षा होती है, कभी नहीं होती। अणुव्रत की तो हर कदम पर अपेक्षा है। समाज अतीत में भी था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। जहां समाज है, वहां नैतिकता की अपेक्षा हर समय रहेगी। बिना नैतिकता के कोई समाज लंबे समय टिक नहीं सकता। इसलिए अणुव्रत को असांप्रदायिक और शाश्वत धर्म कहा जा सकता है।

मैं कहता हूं मुझे आपकी प्रशंसा नहीं चाहिए और आपका समर्थन भी नहीं चाहिए। आप अगर अणुव्रत के कार्य में सहभागी बनते हैं तो मैं आपका स्वागत और अभिनंदन करूंगा। केवल प्रशंसा से क्या होगा। प्रशंसा शब्दों का ही व्यापार तो है। दुनिया में यह व्यापार बहुत चलता है। आप अणुव्रत के कार्य में सहभागी बनें, यही मेरा स्वागत है। वक्ता, लेखक, श्रोता सभी इस बात का ध्यान रखें कि अणुव्रत की प्रशंसा न करें। जो स्वयं प्राणवान है, उसकी प्रशंसा की जरूरत नहीं। वह किसी के समर्थन की भी अपेक्षा नहीं रखता। अपेक्षा इस बात की है आप स्वयं अणुव्रती बने। अणुव्रत के अनुरूप अपने जीवन को ढालें।

बहुत वर्ष पहले की बात है। अणुव्रत के कार्यकर्ताओं ने दिल्ली में 'मैत्री दिवस' का आयोजन किया था। समाज के प्रमुख कार्यकर्ता जयचन्दलालजी दफ्तरी, हणूतमलजी सुराणा, प्रभुदयालजी डाबड़ीवाल, पारसभाई जैन, जयसुखलाल हाथी आदि ने उस कार्यक्रम को बहुत व्यापक रूप दिया था। प्रथम राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू उस कार्यक्रम में स्वयं शामिल हुए थे। आचार्य तुलसी के साथ उनकी आत्मीयता और श्रद्धा का सूत्र जुड़ा हुआ था। राजेन्द्र बाबू बोलने के लिए खड़े हुए तो उन्होंने कहा 'आचार्यजी! आप मुझे कोई पद देना चाहें तो अणुव्रत समर्थक का पद दें। मैं उसे स्वीकार करूंगा।

आचार्यश्री ने कहा 'राजेन्द्र बाबू! हम आपको 'अणुव्रत समर्थक' का पद नहीं, 'अणुव्रती' का पद देना चाहेंगे। भारत का प्रथम राष्ट्रपति अणुव्रती होगा तो राष्ट्र के नागरिकों पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ेगा।'

मैं भी आचार्यश्री की भाषा में कहना चाहूंगा कि आज अणुव्रत को प्रशंसा और समर्थन का नहीं, अणुव्रती बनने की जरूरत है। सहभागिता की जरूरत है। सक्रिय अणुव्रती बनकर और इस कार्य में सहयोग देकर आप अपना स्वयं का और समाज तथा देश का बहुत भला करेंगे।

अणुव्रत अधिवेशन दिल्ली :
11 नवंबर 2005 को प्रदत्त उद्‌बोधन

www.terapanthinfo.com

भावी जीवन का निर्माण

आचार्य महाश्रमण

महात्मा बुद्ध ने राजा प्रसेनजित से कहा चार प्रकार के मनुष्य होते हैं। 1. अंधकार से अंधकार की ओर जाने वाले। 2. अंधकार से प्रकाश की ओर जाने वाले। 3. प्रकाश से अंधकार की ओर जाने वाले। 4. प्रकाश से प्रकाश की ओर जाने वाले। पहले प्रकार के मनुष्य पापी कुल में जन्म लेकर अपना सारा जीवन पाप और दुराचार में बिताते हैं। दूसरे प्रकार के अंतर्गत आने वाले मनुष्य पापी कुल में जन्म लेकर भी अपने जीवन का सुधार कर लेते हैं, शील और सदाचार का जागरूकता से पालन करते हैं। तीसरी श्रेणी के मनुष्य, जिनका जन्म अच्छे संस्कारों वाले परिवार में होता है, किन्तु संगति के कारण मार्ग-भ्रष्ट हो जाते हैं। चौथे प्रकार के मनुष्य सदाचारी और संस्कारी कुल में ही जन्म लेते हैं और उनका भावी जीवन भी उसी सांचे में ढलता है।

हर बालक अपने जन्म के साथ नाना प्रकार के संस्कार लेकर आता है। भावी जीवन के निर्माण में में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहता है। जन्म के बाद निर्माण का क्रम शुरू होता है। निर्माण की अनेक प्रक्रियाओं में एक सशक्त प्रक्रिया है शिक्षा। शिक्षा व्यक्ति के संस्कारों के स्तर को बहुत ऊंचा उठा सकती है, बशर्ते कि शिक्षा का उद्देश्य सम्यक् हो। दसवेआलियं में ज्ञान-प्राप्ति के चार उद्देश्य बताए गए हैं

- मुझे श्रुत प्राप्त होगा, इसलिए मुझे अध्ययन करना चाहिए।
- मैं एकाग्रचित बनूंगा, इसलिए मुझे अध्ययन करना चाहिए।
- मैं स्वयं को सही मार्ग में स्थित करूंगा, इसलिए मुझे अध्ययन करना चाहिए।
- मैं स्वयं सन्मार्ग में स्थित होकर दूसरों को सन्मार्ग में स्थापित करूंगा, इसलिए मुझे अध्ययन करना चाहिए।

एक गृहस्थ की भूमिका में जीने वाले व्यक्ति के लिए अध्यात्म ही सबकुछ नहीं होता। उसके लिए जीविका-प्राप्ति भी आवश्यक होती है। शिक्षा का उद्देश्य है विद्यार्थी को योग्य बना देना। योग्यता दर्शाने के लिए अनेक बिन्दुओं को स्पष्ट किया जा सकता है। व्यक्ति ज्ञान-सम्पन्न बने, चरित्र-सम्पन्न बने, स्वास्थ्य-सम्पन्न बने, आत्मनिर्भर और आत्म-नियंत्रित बने। जीवन के सम्यक् निर्माण के लिए ज्ञान का विकास आवश्यक है। ज्ञान-सम्पन्न बनना अच्छी बात है, किन्तु ज्ञान के साथ-साथ आदमी में आचार का भी विकास होना चाहिए। आचार-विहीन व्यक्ति विद्वान बन जाने के बाद भी उस प्रतिष्ठा को प्राप्त नहीं कर सकता, जिस प्रतिष्ठा को कम वैदुष्य वाला, किन्तु आचार-सम्पन्न व्यक्ति प्रापत कर सकता है। आचार-युक्त ज्ञान का विकास विद्यार्थी को योग्य बना सकता है। विद्यार्थी में ईमानदारी के प्रति निष्ठा जाग जाए, विनम्रता का भाव जाग जाए और नशामुक्त जीवन जीने का संकल्प जाग जाए तो वह एक अच्छा नागरिक अथवा आचार-सम्पन्न नागरिक बन सकता है।

सौराष्ट्र के दीक्सर गांव में एक व्यापारी आया और गली-गली में घूमकर कहने लगा 'सवा रुपए में स्वर्ग ले लो।' आप सवा रुपये में स्वर्ग जा सकते हैं, बशर्ते कि मेरी पुड़िया पर अमल करें। सुबह से शाम तक 'सवा रुपये में स्वर्ग' की रटन लगाता हुआ घूमता रहा, किन्तु किसी ने उसकी पुड़िया नहीं खरीदी। अन्त में 'रामा' नाम का एक बुनकर व्यापारी उसके पास आया और उस पुड़िया को खरीद लिया। उसमें दो वाक्य लिखे थे

- असत्य नहीं बोलना।
- असत्य व्यापार नहीं करना।

बुनकर रामा ने सोचा जो मैंने सवा रुपये में खरीदा है, उस पर आचरण करूंगा। आज के बाद कभी मिथ्या नहीं बोलूंगा और तौल-माप आदि में बेईमानी नहीं करूंगा। अब तक प्रायः कपड़ा बुनने के बाद जो सूत बचता, वह अपने पास रख लेता। इससे असत्य और चोरी का पाप लगता रहता था। पुड़ि खरीदने के बाद रामा बुनकर किसी का कपड़ा बुनने के लिए सूत लाता, बुनने के बाद जो शेष बचता, वह कपड़े के साथ पुनः लौटा देता। धीरे-धीरे उसके प्रामाणिक और सत्यवादी व्यवहार से लोग परिचित होने लगे। वह रामा बुनकर 'रामा भक्त' के नाम से प्रसिद्धि पाने लगा। सत्य-आचरण के कारण लोग उसे सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। भक्त कह कर उसकी इज्जत करने लगे।

विद्यार्थी में प्रारंभ से ही ईमानदारी के संस्कार जाग जाएं तो वह एक अच्छा इन्सान बन सकता है। जीवन में प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है और विकास के द्वार उद्घाटित कर सकता है।

विनीत विद्यार्थी गुरु की दृष्टि के अनुसार आचरण करता है। गुरु की आज्ञा का पालन करने के लिए तत्काल तत्पर हो जाता है। उसमें ननु न च का तो प्रश्न ही नहीं रहता। गोस्वामी तुलसीदासजी का कथन है

चरित्र-सम्पन्नता के लिए ईमानदारी, विनम्रता आदि को अपने आचार व्यवहार में लाए और स्वास्थ्य-सम्पन्नता के लिए नियमित आसन प्राणायाम, ध्यान आदि के प्रयोग किए जाएं और साथ में नशामुक्ति का अभ्यास भी चले। अगर विद्यार्थी अच्छे होंगे तो आशा की जा सकती है कि हमारे देश का भविष्य सुंदर होगा।

माता-पिता अरु गुरु की वाणी।
बिनहि विचार करिय हित जानी।।

माता-पिता और गुरु की वाणी पर विचार किए बिना ही, उसमें अपना हित समझकर, उसे स्वीकार कर लेना चाहिए, कार्य संपादित कर लेना चाहिए। आगम में कहा गया 'आसे जहा सिक्खिए वम्मधारी' जैसे बख्तर-युक्त शिक्षित अश्व रणभूमि में शत्रुओं को भेदता हुआ निकल जाता है, उसी प्रकार विनीत शिष्य या विद्यार्थी गुरु-दृष्टि की आराधना करता हुआ संसार-समुद्र को पार पा लेता है।

घोड़े चार प्रकार के होते हैं एक घोड़ा वह होता है, जो लगाम खींचने के बाद जब तक चाबुक नहीं लगता, वह नहीं चलता। दूसरा घोड़ा वह होता है, जो चाबुक के उठाते ही चल पड़ता है। तीसरा घोड़ा लगाम खींचते ही चलना शुरू कर देता है और चौथे प्रकार का घोड़ा वह होता है जो एड़ लगते ही वहां से प्रस्थान कर देता है।

विद्यार्थी के भी चार प्रकार किए जा सकते हैं पहला विद्यार्थी वह होता है जो गुरु को कठोर अनुशासन करने के लिए विवश कर देता है। दूसरा विद्यार्थी गुरु के अनुशासन का इच्छुक रहता है। तीसरा विद्यार्थी गुरु की आज्ञा और निर्देश का पालन करने वाला होता है और चौथे प्रकार का विद्यार्थी गुरु के इंगित और आकार को पहचानने वाला होता है, अर्थात् गुरु की मानसिक और शारीरिक चेष्टाओं को समझकर तत्काल कार्य संपादित करने के लिए तत्पर हो जाता है। ऐसे सुशिक्षित व्यक्ति अपने विनय के द्वारा बहुत-कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

विद्यार्थी नशामुक्त रहे। जब विद्यार्थी के दिमाग पर नशा छा जाता है तब उसका विवेक आवृत हो जाता है। विद्यार्थीकाल से ही व्यक्ति यह संकल्प करे कि मैं जीवन-पर्यन्त नशा नहीं करूंगा। जीवन में अनेक अवरोध, प्रतिकूल परिस्थितियां आ सकती हैं, किन्तु आदमी का मनोबल और संकल्पबल इतना मजबूत हो कि उसे कोई भी स्थिति विचलित न कर सके। एक बार यदि नशे की आदत बन जाती है तो फिर उसे छोड़ना मुश्किल हो जाता है। नशे से अर्थ की बर्बादी होती है, स्वास्थ्य की बर्बादी होती है और दिमाग भी शिथिल होने लगता है।

मद्यपान करने वाले व्यक्तियों का चित्त भ्रांत हो जाता है। भ्रांत/विकृत चित्त वाला व्यक्ति अपराध करने लगता है, पाप करता है। जिससे वर्तमान जीवन में भी उसे नुकसान होता है और मृत्यु के बाद भी उसे दुर्गति प्राप्त होती है। इसलिए मद्य न तो दूसरों को पीने के लिए देना चाहिए और न ही स्वयं को पीना चाहिए।

विद्यार्थी में अच्छे संस्कारों का विकास हो। वह ज्ञान-सम्पन्न बनने के लिए निरंतर अभ्यास करता रहे। चरित्र-सम्पन्नता के लिए ईमानदारी, विनम्रता आदि को अपने आचार-व्यवहार में लाए और स्वास्थ्य-सम्पन्नता के लिए नियमित आसन प्राणायाम, ध्यान आदि के प्रयोग किए जाएं और साथ में नशामुक्ति का अभ्यास भी चले। अगर विद्यार्थी अच्छे होंगे तो आशा की जा सकती है कि हमारे देश का भविष्य सुंदर होगा।

राष्ट्र चिन्तन

◆ केन्द्र सरकार ने विभिन्न केन्द्र प्रायोजित स्कीमों के माध्यम से राज्य को करोड़ों रुपये मुहैया कराए हैं, लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि बिहार से भ्रष्टाचार की खबरें आ रही हैं। बिहार राज्य को मुहैया कराए गए फंड्स का क्या हुआ, इस बारे में केन्द्र को कोई जानकारी नहीं है। यह मौकापरस्ती और दोहरे चेहरे वाली राजनीति है। बिहार में एक विचित्र प्रकार की गठबंधन सरकार चल रही है। एक तरफ सरकार का नेता सेक्युलर छवि का दावा करता है तो दूसरी तरफ वह बीजेपी के साथ गठबंधन सरकार चला रहे हैं, जो कि पूरी तरह से पंथ निरपेक्षता की धुर विरोधी है। बिहार सरकार ने अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का मुद्दा उठाया था। केन्द्र की ओर से सबकुछ स्पष्ट है लेकिन राज्य सरकार ने यहां अब तक जमीन नहीं दी है। न जाने बिहार में लोगों को दिन में कितने घंटे बिजली मिलती है। उन फंड्स का क्या हुआ जो शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के मद में बिहार को जारी गिए गए थे। क्या वजह है कि राज्य में कोई नया उद्योग भी स्थापित नहीं हुआ है। क्यों आज भी राज्य के विद्यार्थियों को बेहतर एजुकेशन और मौकों की तलाश में बाहर जाना पड़ता है। क्या कारण है कि लोगों को बेहतर इलाज के लिए राज्य से बाहर का रुख करना पड़ता है।

सोनिया गांधी, ***अध्यक्षाः यूपीए***

◆ फंड्स के इस्तेमाल के मुद्दे पर केन्द्रीय एजेंसियों की विफलता राज्य सरकार के मत्थे मढ़ना पीएम को शोभा नहीं देता। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि मनमोहन सिंह जनता के सामने गलत तथ्य रख रहे हैं और केन्द्रीय सहायता के इस्तेमाल में केन्द्र की एजेंसियों की विफलता का दोष एनडीए सरकार पर मढ़ने के रास्ते तलाश रहे हैं। पीएम को अपने उस बयान में सुधार करना चाहिए, जिसमें उन्होंने कहा था कि राज्य के लिए एक हजार करोड़ रुपये का विशेष प्रावधान 2004 से किया गया था। यह प्रावधान 2002 से किया गया था और कांग्रेस के पास इसका श्रेय लेने के लिए कुछ नहीं है।

नीतीश कुमार, ***मुख्यमंत्री : बिहार***

सरलता ही जीवन है

जनार्दन शर्मा

महाभारत में श्रीकृष्ण ने कहा है सरलता ही जीवन है, कुटिलता मृत्यु। यही जीवन का सार है, बाकी सब बकवास। 'एक विद्वान, ने कहा है जीवन में सफलता हेतु सादगी, सरलता एवं सत्य की अनन्त खोज हमारा लक्ष्य होना चाहिये।' इसीलिये पॉप जॉन त्रयोदश ने वेटिकन की पत्रिका में लिखा था 'ज्यों ज्यों मैं उम्र दराज होता हूँ, मुझे विचार वाणी और आचरण में सादगी की गरिमा और सुन्दरता की गहरी अनुभूति होती है और ऐसी उत्कंठा जागृत होती है कि प्रत्येक मामले में श्रेष्ठतम नैसर्गिकता व पारदर्शिता से व्यवहार करो।

यही बात रामचरितमानस में तुलसीजी ने श्रीराम के मुँह से कहलवाई है

निर्मल मन जन सो मोहि पावा,
मोहि कपट छल छिद्र न भावा।

एक सुभाषित के अनुसार हम मन, वचन कर्म से सरल, निश्छल बनें। कहते हैं बर्नार्ड शॉ इतने सरल थे कि व्यस्तता के क्षणों में कई बार पेन्ट बदलना भूल जाते थे, यहाँ तक कि पेन्ट में से घुटना तक दिखने लगता था।

महात्मा गांधी अपने शरीर पर एक ही वस्त्र पहनते थे और गोलमेज सम्मेलन में लन्दन जाने व वहाँ सम्राट से मिलते समय भी दिखावटी 'ड्रेस-कोड' का पालन नहीं किया था। लाल बहादुर शास्त्री को मंत्री व प्रधान मंत्री के रूप में भी उनके खादी कुर्ते के पैबन्द व फटी टोपी देखकर लोग दंग रह जाते थे।

महान वैज्ञानिक आइन्स्टीन कहते थे जीवन में सादगी व सरलता ही श्रेष्ठ है, यह शरीर व मन दोनों के लिये उत्तम है। 'इसीलिये सादा जीवन, उच्च विचार' जीवन का उत्तम मंत्र कहा गया है।

सभी सफल और श्रेष्ठ व्यक्तियों ने सादगी व सरलता को ही अपना जीवन दर्शन बनाया तथा उनकी कथनी-करनी में कभी अन्तर नहीं आया और वे दीन दुखी के लिये सदैव उपलब्ध रहे। इसीलिये रन्तिदेव कहते थे

न त्वहं कामये राज्यं न स्वर्गम् न पुनर्भवम्।
कामये दुख तप्तानाम् प्राणि नामार्ति नाशनम्।।

अर्थात् मुझे राज्य, स्वर्ग का सुख या मुक्ति नहीं चाहिये, मैं तो दुख से पीड़ित व्यक्ति की पीड़ा दूर करना चाहता हूँ। श्रीकृष्ण ने गीता में यही कहा है

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे।।

'मैं सज्जनों की सेवा और दुर्जनों के विनाश हेतु ही युग-युग में जन्म लेता हूँ।'

वस्तुतः सादगी में ही प्रतिभा व महानता छिपी है। सरल व्यक्ति ही अपने को दूसरों से अभिन्न समझता है आत्मवत् सर्वभूतेषु अथवा उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्। जीवन की सफलता सादगी के पथ से ही चलती है। इसी पथ से आध्यात्मिक ऊँचाई मिलती है। यही सरलता अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहिम लिंकन को सड़क किनारे भारी बोझ उठाने में अक्षम श्रमिक को सहारा देती है।

दूसरों के दुख दर्द को समझने व बाँटने की सरलता के भाव ने ही विश्व के सबसे धनाढ्य बिल गेट्स को अपनी सम्पत्ति में से 30 अरब डालर समाज के जरूरतमंदों की सेवार्थ दान में देने की प्रेरणा दी है तथा वारेन जुफे को अपनी सम्पत्ति में से 90 प्रतिशत दान देने की प्रेरणा। राजा कर्ण के दान की कहानियाँ सर्व विदित हैं, तो राजा शिवि ने कबूतर के बढ़ते भार के बराबर अपने शरीर के अंग काटकर रखने में संकोच नहीं किया।

पश्चिमी जगत में हजारों-लाखों पुस्तकें ईसा मसीह की सादगी, सरलता व शान्ति का पाठ पढ़ाती है। विद्वानों ने उनकी महानता को संक्षेप में यों समेटा है वह दूसरों की भलाई में लगे रहते थे। यही बात महात्मा गांधी के बारे में है वह अन्तिम व्यक्ति, दलित, न्यूनतम तथा नष्ट प्राय के उत्थान की चिन्ता करते थे। गांधी अपने को दरिद्रनारायण का पुजारी कहते थे।

महापुरुष हमें सरलता व सादगी ही सिखाते हैं। कोई भी उलझन भरी पेचीदगी वाला जीवन नहीं चाहता, सब सरलता व शान्ति चाहते हैं, इसीलिये हम सन्तों, गुरुजनों, सभा व सत्संग तथा सद्-साहित्य पढ़कर सरलता व नेकी का मार्ग अपनाना चाहते हैं, दुष्टता व कुटिलता कोई नहीं चाहता। वैभवशाली, सम्पन्न लोग भी जीवन की ऊहापोह एवं वैभव की परिधि से भागकर प्रकृति के एकान्त में, सन्तों की सेवा में जाकर सुख की खोज करते हैं। सप्ताहान्त छुट्टी में भी व्यक्ति शहर व आफिस की उलझनों, भीड़ व घुटन से भागकर प्रकृति के शान्त, सरल वातावरण में शान्ति व नवीन ऊर्जा तथा अध्यात्म की छुट्टी ग्रहण करते हैं। अपार धन संपदा व खाने के ढेरों व्यंजनों से भी व्यक्ति ऊबकर सादा भोजन व सरल व्यवहार में सुकून पाता है। इसीलिये शायर ने कहा है

सादापोशी से ऐतराज न कर
जाने मन यह जहीन फैशन है,
यह अदा बेगमात वक्त सीख
सादापोशी में हजार जोबन है।

सत्य सदन,
पुष्कर (अजमेर-राज.)

देखना आसमान बदलेगा

डॉ. सरोजकुमार वर्मा

अणुव्रत आंदोलन, जिसके प्रणेता आचार्य तुलसी हैं, एक नैतिक आंदोलन है। चूंकि नैतिकता व्यक्ति के उत्थान और समाज की व्यवस्था के लिए जरूरी है, इसलिये उन्होंने इसका आरंभ 01 मार्च 1949 को राजस्थान के सरदारशहर (चुरू-राजस्थान) से किया। आरंभ में उन्होंने केवल 25 लोगों की मांग की थी, लेकिन 73 लोग मिल गये जो इस आंदोलन की नींव बनने को तैयार थे। यह तात्कालिक अपेक्षा से तीन गुणा ज्यादा थी। इन्हीं के बूते यह आंदोलन प्रारंभ हुआ और इन 60 वर्षों में बड़ी तेजी से फूला-फैला। इसका प्रमाण आज पूरे देश में इस आंदोलन से जुड़े लोगों की विशाल संख्या है, जो सभी भागों में फैले हुए हैं। यह सुखद है।

लेकिन संतोषप्रद नहीं! क्योंकि इस देश-व्यापी फैलाव के बावजूद शायद इस आंदोलन की गति अभी धीमी है और इसका प्रभाव थोड़ा उथला है। इन दोनों में क्रमशः और तेजी तथा गहराई होनी चाहिए थी। मगर ऐसा नहीं हो पाया है और न ही हो पा रहा है तो निश्चित ही इसके कुछ कारण होंगे। इसलिये यदि उन कारणों की खोज कर ली जाये और उन्हें दूर करने के उपाय तलाशे जायें तो अवश्य ही यह आंदोलन अपने लक्ष्य तक पहुंच सकता है। आचार्य तुलसी ने जो सपना देखा था वह साकार हो सकता है। तब उन्होंने कहा था ''धार्मिक मूल्यों में मेरी गहरी आस्था है। मैं उस आस्था को क्रिया-काण्ड या उपासना-पद्धति में ही सीमित करना नहीं चाहता। मात्र उपासना के धरातल पर टिका हुआ धर्म जीवन को रूपान्तरण की स्थिति में नहीं ला सकता। जहां रूपांतरण का अवकाश नहीं है, वहां जड़ता अपनी जड़ें जमा लेती है। धर्म का क्रांत और तेजस्वी स्वरूप धार्मिक की चर्या में प्रतिबिम्बित हो सकता है। इसके लिये नैतिक मूल्यों की प्रतिष्ठा अपेक्षित है। नैतिकता धर्म की पृष्ठभूमि भी है और निष्पत्ति भी। नैतिकता का वियोग धर्म की मूर्च्छावस्था का प्रतीक है। इस मूर्च्छा को तोड़कर धर्म के माध्यम से वैयक्तिक और सामाजिक जीवन में नैतिकता की प्रतिष्ठा करना वर्तमान की सबसे बड़ी अपेक्षा है।''[1] इस बड़ी अपेक्षा के कारण ही उनके बाद अणुव्रत आंदोलन को तत्परतापूर्वक आगे बढ़ाने वाले **आचार्य महाप्रज्ञ** ने कहा ''आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन नैतिकता की आचार-संहिता है। इस नैतिकता को हम व्यावहारिक सत्य के रूप में परिभाषित कर सकते हैं। एक आदमी दूसरे आदमी के साथ प्रामाणिक व्यवहार करता है, वह नैतिकता है। अप्रामाणिक और प्रवंचनापूर्ण व्यवहार करता है अनैतिकता है।''[2]

भौतिकवाद और सुखवाद की दार्शनिक भूमि ने ऐसे भोग-केन्द्रित चिंतन को जन्म दिया है जो केवल दैहिक सुख को जीवन का अभीष्ट स्वीकारता है और दिन-रात इसी में संलग्न रहने को प्रेरित करता है। चूंकि यह सुख भौतिक वस्तुओं से मिलता है, इसलिए यह चिंतन निरंतर इन वस्तुओं को इकट्ठा कर लेने के प्रयास में लगे रहने की वकालत करता है। इस कारण रोज नई-नई वस्तुओं का उत्पादन किया जाता है और उसके उपभोग के लिए उकसाया जाता है। इसमें सबसे अहम भूमिका यंत्रों की होती है, क्योंकि यंत्रों के द्वारा ही वस्तुओं का उत्पादन भी होता है और उनके उपभोग के लिए उकसाया भी जाता है। यद्यपि प्रत्यक्ष रूप से उकसावे का यह काम विज्ञापन के द्वारा किया जाता है। लेकिन इस विज्ञापन के पीछे भी यंत्र ही होते हैं, जिनसे समाचार-पत्र के प्रकाशन से लेकर दूरदर्शन पर प्रसारण तक की प्रक्रिया है। इस प्रकार इन सब सरंजामों से भोगवादी चिंतन मनुष्य की चेतना पर नशे जैसा काम करता है, जिसकी चपेट में आकर व्यक्ति उचित-अनुचित, गलत-सही, अच्छे-बुरे किसी भी तरीके से भोग की वस्तुयें एकत्रित करने के पीछे पागल बन जाता है। यद्यपि इन वस्तुओं के एकत्र करने में उसके पास अवकाश भी नहीं होता कि वह इनका भोग भी कर सके, इनका सुख भी उठा सके, फिर भी वह एक व्यामोह में पड़कर इनसे सुख उठाने के भ्रम में पड़कर इन वस्तुओं के पीछे दौड़ता रहता है, उनके लिए लालायित रहता है।

अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से चलने वाले नैतिक आंदोलन को सबसे पहले भौतिकवादी सुखवादियों की इस नींव को हिलाना पड़ेगा, उसे कमजोर करना पड़ेगा ताकि उस पर निर्मित दैहिक भोगवादियों का मजबूत चमचमाता किला ध्वस्त हो सके। इसके लिए कुछ व्यावहारिक उपक्रम अपनाने होंगे। सिर्फ वैचारिक उपदेश से यह नहीं होने वाला है। यद्यपि अणुव्रत के जिन नियमों का प्रचार-प्रसार किया जाता है, वे बहुत असरकारी हैं, इसलिए इनका भी बहुत प्रभाव पड़ता है और इस प्रभाव के कारण व्यक्ति में परिवर्तन भी होता है। आखिर अणुव्रत के प्रमुख घोष **''संयमः खलु जीवनम्''** संयम ही जीवन है के कारण ही तो पिछले छः दशकों में अणुव्रत आंदोलन से जुड़ने वालों की संख्या हजारों-लाखों में पहुंच गई है। मात्र 73 लोगों से शुरू हुए अणुव्रत आंदोलन से इतनी बड़ी संख्या में लोगों का जुड़ना अणुव्रत आचार संहिता के प्रभाव का ही परिणाम है। निश्चय ही इसके प्रवर्तक आचार्य तुलसी से लेकर उनके उत्तराधिकारियों तक ने इस दिशा में लगातार और प्रामाणिक प्रयास किये हैं, जिसका प्रतिफल आज का देशव्यापी अणुव्रत आंदोलन है। शायद इसकी व्याप्ति विदेशों में भी है और शिक्षा, राजनीति, व्यापार, सेवा आदि सभी क्षेत्रों के लोग इससे जुड़े हैं, इसके दायरे को और विस्तृत करने में लगे हुए हैं। लेकिन इन सबके बावजूद यदि यह आंदोलन पूरी तरह कामयाब नहीं हो पा रहा है, अपने पूर्ण मकसद को हासिल नहीं कर पा रहा है तो वे संभवतः इसलिए कि ये सारे नियम सिर्फ बाहर से लिये जाने वाले व्रत हैं, भीतर से प्रस्फुटित होने वाले बोध नहीं। इस कारण इस आंदोलन से जुड़े हुए

लोग अपनी दुष्प्रवृत्तियों को छोड़ने का संकल्प तो ले लेते हैं, अनीति पर नहीं चलने का वायदा तो कर देते हैं; लेकिन उसे निभा नहीं पाते, उसे पूरा नहीं कर पाते; क्योंकि ये संकल्प, ये वायदे भीतर से निःसृत हुए नहीं होते हैं, ऊपर से ओढ़े गये होते हैं; इसलिए जरा-सी परिस्थिति प्रतिकूल होने पर मनःस्थिति डगमगा जाती है, जरा-सी हवा चलने पर लौ बुझ जाती है। यह ठीक वैसा ही है जैसे कोई अंधा आदमी लालटेन लेकर चलता है तब भी उसे दिखाई नहीं पड़ता, क्योंकि उसके पास आंखें नहीं होती। यह लालटेन सिर्फ दूसरे के लिए होती है कि दूसरा उसे देखकर बचे, उससे न टकराये; तब वह बिना टकराये चल सकता है, चल पाता है; परंतु यदि हवा चलने से या तेल खत्म हो जाने पर यदि उसकी लालटेन बुझ जाये तो उसे इसका पता भी नहीं चलता और तब उसका टकराना सुनिश्चित होता है। इसी तरह ऊपर से लिये गये संकल्प बेहद कमजोर होते हैं, थोड़ी सी प्रतिकूलता में टूट जाते हैं, बिखर जाते हैं।

यह न बिखरे, न टूटे इसके लिये आवश्यक है कि ये संकल्प भीतर से आयें और जब ये भीतर से आयेंगे तब संकल्प न होकर बोध का प्रतिफल होंगे। फिर टूटेंगे, बिखरेंगे नहीं। जैसे कि उस अंधे आदमी की आंखों का ऑपरेशन करा दिया जाये और उसे दिखाई पड़ने लगे तब वह बगैर लालटेन के भी बिना टकराये चल पाएगा, क्योंकि तब रोशनी भीतर से आ रही होगी, उसे बाहर की रोशनी की जरूरत न रह जायेगी। उसके हाथों में कोई रास्ते का नक्शा भी नहीं चाहिए। वह खुद अपनी आंखों से दांये-बांये देख लेगा, बिना दीवार से टकराये दरवाजे से बाहर निकल जायेगा। यह आंखों का ऑपरेशन उसका बोध होगा। इस बोध से उसकी चर्या सहज निःसृत होगी, जैसे फूल से खुशबू निःसृत होती है। तब फिर उसे साचास नैतिकता का कोई संकल्प नहीं लेना पड़ेगा, नैतिक चर्या अनायास उसके भीतर से प्रस्फुटित होगी; और तब वह व्यक्ति किसी भी परिस्थिति में अनैतिक नहीं होगा, किसी भी प्रलोभन से नहीं डगमगायेगा; क्योंकि तब उसे दैहिक सुख की अपेक्षा नहीं होगी, वह आत्मिक आनंद से अभिभूत होगा। उसे भौतिक वस्तुओं की जरूरत नहीं होगी, वह आंतरिक अनुभूति से तृप्त होगा। और तभी वह परिग्रही न होकर अपरिग्रही हो पायेगा। इसीलिए नैतिक नियमों के अभ्यास का व्रत लेने के बदले भीतर के बोध के प्रस्फुटन का प्रयास करना चाहिए।

अणुव्रत आंदोलन में सम्यक् दर्शन प्रेक्षाध्यान या इस तरह की और जो ध्यान-विधियां हैं उनसे आ सकता है। इसलिये इन ध्यान-विधियों को, जो जिसके अनुकूल पड़े, इस आंदोलन के व्यावहारिक उपक्रम के रूप में अनिवार्य रूप से जोड़ा जाना चाहिए और इसे हर किसी के लिए अनिवार्य बनाया जाना चाहिए। इन्हीं ध्यान-विधियों के अभ्यास से जब व्यक्ति बोध को उपलब्ध होगा तो अणुव्रत आंदोलन जिन 84 नियमों के पालन की बात करता है, वह सहजतापूर्वक उनका पालन करने लग जायेगा, बल्कि यह कहना ज्यादा सही होगा कि ये नियम उसके द्वारा पालित होने लग जायेंगे। हाँ! इसके कार्यान्वयन के लिए कुछ कार्यक्रम इस प्रकार हो सकते हैं

- अणुव्रत आंदोलन के समर्पित अणुव्रतियों में से कुछ को लेकर राष्ट्रीय स्तर पर एक कोर कमेटी बनायी जाये।
- इस कोर कमेटी की साल में तीन से चार बैठकें आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में हों जिनमें विचार-विमर्श के बाद लिये गये निर्णय को क्रियान्वित की योजना बनायी जाये।
- एक कमेटी राज्य-स्तरीय भी गठित की जाये, जिसकी बैठक प्रति दो महीने पर हो और उसमें राष्ट्रीय स्तर पर लिये गये निर्णयों को कार्यान्वित करने के लिए सदस्यों को प्रेरित किया जाये।
- यह कमेटी जिला स्तर पर कमेटी गठित करे और इसी तरह अनुमंडल, प्रखंड और गांव स्तर पर भी कमेटी गठित हों और उनके सदस्यों को राष्ट्रीय निर्णयों और योजनाओं की जानकारी देते हुए उनके कार्यान्वयन के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित किया जाये।
- गांव/शहर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की इन बैठकों में सभी स्तर की इकाइयों से भी सुझाव एवं प्रस्ताव आमंत्रित किये जायें, जिन पर सभी स्तरों पर विमर्श के बाद पारित प्रस्तावों को राष्ट्रीय स्तर पर अनुमोदन मिलने के बाद हर स्तर पर उनका कार्यान्वयन किया जाये।
- इस आंदोलन के सभी सदस्यों तथा आने वाले अतिथियों के लिए सभी स्तर की हर बैठक में प्रेक्षाध्यान या अन्य ध्यान का अभ्यास अनिवार्य हो। इन सदस्यों के लिए अपने निजी जीवन में भी प्रतिदिन ध्यान का अभ्यास अनिवार्य होना चाहिए, क्योंकि इसी अभ्यास के द्वारा उन्हें बोध हो पायेगा जिसके फलस्वरूप नैतिकता उनके अंदर से प्रस्फुटित होकर उनके व्यक्तित्व का हिस्सा बन जायेगी। फिर वे जो कुछ करेंगे, सब नैतिक होगा।

यद्यपि अणुव्रत आंदोलन में इस तरह का सांगठनिक ढांचा संभवतः पहले से मौजूद है, परंतु उनमें कई इकाई निष्क्रिय हैं और जो सक्रिय हैं वे भी शायद ध्यान का अभ्यास अनिवार्यतः नहीं करते। इसी से आंदोलन को शीर्ष सफलता नहीं मिल पा रही है। लेकिन यह निष्क्रियता और ध्यान की उपेक्षा अस्वाभाविक नहीं है। किसी भी आंदोलन से ये जुड़ी होती हैं। इसलिए कभी वह तीव्र होती है और कभी शिथिल। मगर शिथिलता की अवस्था में उस आंदोलन के केन्द्रीय अधिकारियों और सक्रिय कार्यकर्ताओं का यह दायित्व होता है कि वे उसे अपने प्रयासों से तीव्र बनायें। तभी वह आंदोलन जन-साधारण तक पहुंच पाता है, उसका प्रभाव जनमानस पर पड़ पाता है। अणुव्रत आंदोलन के साथ भी ऐसा ही है। अभी इसकी गति थोड़ी धीमी लग सकती है, लेकिन इसका अपने गंतव्य तक पहुंचना सुनिश्चित है। इसीलिए सुरेन्द्र चतुर्वेदी की इन पंक्तियों से मैं अपनी बात पूरी करना चाहूंगा कि

''जब परिन्दा उड़ान बदलेगा।
देखना आसमान बदलेगा।।''

06, व्याख्याता आवास, खबड़ा रोड़,
विश्वविद्यालय परिसर, मुजफ्फरपुर (बिहार)

सामाजिक व्यवस्थाओं में सरलीकरण एवं सादगी ही टूटते समाज को बचा पायेगी

स्वस्थ समाज निर्माण के लिए 'नया मोड़' आचार संहिता को पुनः प्रतिष्ठापित करें

आचार संहिता के संभावित प्रमुख बिन्दु

- वैवाहिक एवं सामाजिक अवसरों पर आयोजित भोज में 21 तथा अल्पाहार में 11 से अधिक व्यंजन नहीं हों।
- वैवाहिक समारोह घर-आंगन अथवा सामाजिक स्थलों पर दिन में ही आयोजित हों।
- दहेज की मांग अथवा ठहराव नहीं हो।
- आडम्बर एवं प्रदर्शन पर प्रतिबंध हो।
- समारोह में उत्तेजक-मादक-नशीले पदार्थों का उपयोग वर्जित हो।
- पृथ्वी को बचाने के क्रम में आतिशबाजी पर प्रतिबंध रहे।
- उत्तेजक एवं भौंडे नाच-गानों का आयोजन नहीं हो।
- धार्मिक आयोजनों में भी सादगी बरती जाए।

"नया मोड़ का अर्थ है जीवन दिशा का परिवर्तन। आडम्बर और कुरुढ़ियों के चक्रव्यूह को भेदकर संयम और सादगी की ओर अग्रसर होना। विषमता और शोषण के पंजे से समाज को मुक्त करना। *आचार्य तुलसी*

समाज की जर्जर व्यवस्थाओं को बदलकर ही स्वस्थ व्यक्ति और समाज का निर्माण संभव है। वैवाहिक अवसरों पर आडम्बर एवं फिजूलखर्ची नहीं हो। आचार्य महाप्रज्ञ"

अर्थ की चमक घटे, मनुष्य का मूल्य बढ़े

आवाज उठाओ, प्रदर्शन-आडम्बर मिटाओ

7 वां दशक अणुव्रत आंदोलन

रूढ़ि उन्मूलन में आचार्य तुलसी का योगदान

मुनि राकेशकुमार

मानव एक सामाजिक प्राणी है। उसका जीवन नाना प्रकार की सामाजिक शृंखलाओं और व्यवस्थाओं से संबद्ध है। उसके सुख-दुख व उत्थान-पतन में समाज की परिस्थितियों और घटनाओं का गहरा सम्बन्ध रहता है।

धर्म का लक्ष्य आत्मशुद्धि है। वह मूलतः व्यक्ति केन्द्रित है परन्तु जो धर्म समाज की उपेक्षा करता है वह कभी सफल नहीं हो सकता। व्यक्ति और व्यवस्था दोनों सापेक्ष है। दोनों की शुद्धि और स्वच्छता से ही धर्म का विकास हो सकता है। तीर्थंकरों और उनके उत्तराधिकारी जैन आचार्यों ने व्यक्ति और व्यवस्था दोनों के परिशोधन का मार्ग-दर्शन किया है। जैनधर्म के विचार और आचार-दर्शन का यदि हम गंभीरता से अध्ययन करें तो यह तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाता है।

जहां समाज है वहां परंपराएं जरूरी है समय की आवश्यकता के अनुसार उनका विकास और विस्तार होता है, किन्तु सभी परंपराएं सदा उपयोगी नहीं होती, इस दृष्टि से उनके प्रति उचित और अनुचित का चिंतन आवश्यक है। कालचक्र के परिवर्तन से बहुत-सी परम्पराएं निरर्थक और अनुपयोगी हो जाती है, उनसे प्रगति में अवरोध होता है। समाज के विकास के लिए उन रूढ़ियों के उन्मूलन पर ध्यान देना जरूरी होता है।

सामाजिक जीवन में स्वस्थ मूल्यों की स्थापना के लिए अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी का महान योगदान रहा है। आचार्य तुलसी यथार्थदर्शी और क्रांतिकारी धर्माचार्य थे। उनका चिंतन पूर्वाग्रह से मुक्त था।

नारी और पुरुष में आध्यात्मिक विकास की समान संभावना है, जैन तत्व-चिंतन का यह स्पष्ट अभिमत है, किन्तु मध्ययुग में जैन समाज में नारी समाज के प्रति भ्रांत धारणाएं घर कर गई। महिलाओं के मानस में भी स्वयं के प्रति हीनता और दीनता का भाव स्थिर हो गया। आचार्य तुलसी ने विभिन्न रूपों में नारी जागृति के लिए उल्लेखनीय प्रयत्न किये थे। गुरुदेव के आध्यात्मिक उपदेशों से महिला समाज में आत्मविश्वास और संकल्पबल का विकास हुआ है व घूंघट जैसी कुरूढ़ियों के उनमूलन के लिए सफल भूमिका का निर्माण हुआ है। राजस्थान के रूढ़िग्रस्त समाज में जो महिला जागृति का आज विकसित रूप दिखाई दे रहा है उसमें गुरुदेव का महान योगदान रहा है उनके मार्गदर्शन से जन्म, विवाह और मृत्यु से संबंधित अनेक रूढ़ियों में व्यापक परिवर्तन हुआ। तेरापंथ द्विशताब्दी समारोह के अवसर पर उनकी प्रेरणा से समाज में नया मोड़ अभियान का आरंभ हुआ। इससे समाज में रूढ़ियों के उन्मूलन के सही चिंतन और दृष्टिकोण का विकास हुआ।

समाज में बहुत से स्थानों पर पति की मृत्यु के पश्चात पत्नी महीनों तक घर से बाहर नहीं आती थी व शोक के वातावरण में निमग्न रहती थी। यदि कोई धर्म स्थान में भी आ जाती तो उसकी भी आलोचना होती। एक स्थान पर लम्बे समय तक बैठे रहने से बहुत-सी बहनें नाना प्रकार की व्याधियों से ग्रसित हो जाती। उनके सामने दिन भर आर्त्तध्यान (शोक) का वातावरण रहता, इससे उनकी मानसिक स्थिति भी अशांत रहती। इसी तरह मंगल प्रसंगों पर विधवा बहनों से परहेज रखा जाता था। गुरुदेव की प्रेरणा से विधवा बहनों के प्रति होने वाले विषमतापूर्ण व्यवहार में क्रांतिकारी परिवर्तन हुआ है। मृतक के पीछे रोने की परम्परा भी बहुत प्रचलित थी। कभी-कभी केवल रूढ़िपोषण के लिए रोना जरूरी होता था, इससे शोक का भार कम नहीं होकर और अधिक गहरा हो जाता है। आचार्यश्री व साधु-साध्वियों के उपदेशों से इस प्रथा में बहुत सुधार हुआ है। थोड़े वर्षों पूर्व कुछ प्रदेशों में कर्ज लेकर भी मृत्यु भोज करना जरूरी होता था यदि कोई नहीं करता तो उसका सामाजिक बहिष्कार भी हो जाता। किन्तु आज मृत्युभोज की रूढ़ि समाज में प्रायः मिट गई है, इन सबके पीछे गुरुदेव की भागीरथ तपस्या का इतिहास जुड़ा हुआ है।

पिछले पांच दशकों का सिंहावलोकन करें तो रूढ़ियों के उन्मूलन के अनेक महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक चित्र हमारी आंखों के सामने तैरने लगते हैं। रूढ़ियों के उन्मूलन व सामाजिक व्यवस्थाओं के परिवर्तन के लिए जितना कार्य हुआ है, उससे भी और अधिक होने की आवश्यकता है। जहां पुरानी रूढ़ियों का उन्मूलन और निराकरण हुआ है वहां कुछ विकृतियां भी समाज में बढ़ती जा रही हैं। रूढ़ि उन्मूलन व स्वस्थ मूल्यों की स्थापना के लिए दृष्टिकोण का परिष्कार जरूरी है इसके अभाव में आडम्बर, प्रदर्शन और अंधविश्वास के नये-नये रूप प्रकट होते ही जायेंगे। आज समाज को ऐसे प्रबुद्ध और साहसिक युवकों के नेतृत्व की आवश्यकता है जो नई और पुरानी, रूढ़ियों और विकृतियों की व्याधि से समाज के शरीर को स्वसथ बना सकें। विवाह-शादी के प्रसंगों पर आडम्बर और प्रदर्शन के जो नये-नये प्रकार बढ़ते जा रहे हैं, उन्हें देखकर, ज्यों-ज्यों दवा दी त्यों-त्यों मर्ज बढ़ता गया, इस कहावत का स्मरण हो जाता है।

आचार्य महाश्रमण की प्रेरणा से युवक परिषद् के तत्वावधान में जैन संस्कार प्रसार का अभियान आज भी आगे बढ़ रहा है। समाज के सभी चिंतनशील व्यक्तियों को उसका मनन और अनुशीलन करना चाहिए। अभी तक बहुत से प्रबुद्ध युवक इस कार्यक्रम से परिचित नहीं है, यह खेद का विषय है। रूढ़ियों के साथ नाना प्रकार के अंधविश्वासों का गहरा संबंध जुड़ा हुआ है। जैनधर्म पुरुषार्थवाद और समतावाद के दर्शन पर आधारित है उसके अनुयायियों में अंधविश्वास के लिए कोई स्थान नहीं होना चाहिए। जैन समाज की सामाजिक व्यवस्थाएं भी धार्मिक चिंतन से प्रभावित होनी चाहिए। सारे जैन समाज को इस संदर्भ में गहरे चिंतन की आवश्यकता है।

सामाजिक जीवन जितना निर्भार और रूढ़िमुक्त होगा, धार्मिक विकास के लिए उतनी ही अधिक संभावना होगी। जिस प्रकार उर्वर भूमि में बोया हुआ बीज सफल होता है उसी प्रकार रूढ़िमुक्त और सादगी व संयमपूर्ण समाज व्यवस्था की धरती में आध्यात्मिक साधना के सबल बीज अंकुरित, पुष्पित और फलित होते हैं।

सामाजिक रूढ़ियों में दहेज प्रथा का प्रश्रय सबसे अधिक विकट है इस समस्या के कारण मध्यम वर्ग के लोग बहुत अधिक त्रस्त और पीड़ित हैं। परिवार में लड़की के जन्म से ही चिंतातुर और व्यग्र हो जाते हैं। अहिंसा प्रधान जैन समाज में भी दहेज के लोभ के कारण कभी-कभी क्रूर और वीभत्स घटनाएं सुनने में आती है जब तक समाज में दहेज का दावानल शांत नहीं होगा तब तक नारी और पुरुष में समानता की भावना स्थापित नहीं होगी।

विवाह के अवसर पर आडम्बर और प्रदर्शन करने वाले लोग एक विचित्र प्रकार की दलील प्रस्तुत करते हैं। उनका कहना है, आर्थिक समृद्धि वाला यदि मंगल अवसरों पर अर्थ का उपयोग करता है तो इससे सामाजिक सम्बन्ध पुष्ट होते हैं और मानसिक उल्लास की अभिव्यक्ति होती है यह तर्क बहुत छिछला है। समाज में आर्थिक सदुपयोग के नाना प्रकार हैं उनसे जो स्थायी तृप्ति मिलती है वह आडम्बरों से कभी नहीं मिल सकती। समाज की अनेक समस्याएं हैं, उनके समाधान के लिए बहुत-सी प्रवृत्तियां शुरू हो सकती हैं। रचनात्मक कार्यों में जो शक्ति का नियोजन होता है उसका स्थायी महत्व होता है। उससे जो तृप्ति मिलती है और सामाजिक संगठन सबल बनता है, बाहर के दिखावों से यह कभी भी संभव नहीं है। आडम्बरों और प्रदर्शनों ने समाज के संगठन को दुर्बल बनाया है। उनके कारण ईर्ष्या और प्रतिस्पर्धा की भावना का जन्म हुआ है।

बुद्धिजीवी लोगों का दायित्व है कि समाज में व्याप्त रूढ़ियों के उन्मूलन पर वे गंभीरता से चिंतन करें व संयम और सादगी के आधार पर समाज के महल का निर्माण करने का प्रयास करें। तभी मानसिक तनावों और ईर्ष्या-द्वेष की ग्रंथियों से मुक्ति मिल सकेगी व जीवन में शांति के स्वर्ग का अवतरण हो सकेगा।

झाँकी है हिन्दुस्तान की

- गुड़गांव जिला शिक्षा विभाग ने 'क्लीन एंड ग्रीन गुड़गांव' स्वच्छ शहर अभियान शुरू किया है, इसमें शहर के 60 स्कूल साथ दे रहे हैं। इसकी शुरुआत टीकरी एस.डी. स्कूल से की गयी। एजुकेशन विद्यार्थी की कोशिश है कि अधिक से अधिक विद्यार्थी इस अभियान में शामिल हों। इसके लिए वह स्टूडेंट्स को 10 दिन की ट्रेनिंग देगा। इसके बाद ये बच्चे अपने पड़ोस, सड़कों, संस्थानों, ऑफिसों में जाकर लोगों को स्वच्छता के लिए सजग करेंगे। पेड़ लगाने, उन्हें बचाने, ट्रैफिक नियमों का पालन करने, ग्राउंड वाटर लेवल बढ़ाने आदि के लिए ये बच्चे लोगों में जागरूकता पैदा करने का काम करेंगे।

- अगले साल से सिविल सर्विसेज के प्रीलिम्स एग्जाम में कोई वैकल्पिक पेपर नहीं रहेगा। यूपीएससी ने सोमवार को कहा कि उम्मीदवार को दो आवश्यक पेपर देने होंगे, जिनमें राजनीति, प्रशासन और एप्टिट्यूट पर सवाल होंगे। दोनों पेपर 200-200 नंबर के होंगे और दो-दो घंटे में हल करने होंगे।

- एक सर्वोक्षण के अनुसार

  71 फीसदी बूढ़े-बुजुर्ग बेटों के साथ रहते हैं।

  10 फीसदी अकेले रहते हैं।

  12 फीसदी अभी भी काम-काज में लगे हैं।

  72 फीसदी आर्थिक रूप से दूसरों पर निर्भर हैं।

  20 फीसदी को घर में प्रताड़ित होना पड़ता है।

  5 फीसदी बुजुर्ग घर में शारीरिक रूप से प्रताड़ित होते हैं।

  10 फीसदी को करना पड़ता घर में गाली-गलोज का सामना।

  5 फीसदी ही स्वास्थ्य बीमा के दायरे में हैं।

- 10 करोड़ के आसपास देश में बुजुर्ग हैं।
- 80 की उम्र पार कर चुके लोग करीब दो करोड़ हैं।
- 31.9 फीसदी बुजुर्गों को खुद ही निपटाना पड़ता है अपना-अपना काम।

कलापूर्ण जीवन के लिए अणुव्रत आचार संहिता सशक्त माध्यम

■ दिल्ली

दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के तत्वावधान में राजधानी दिल्ली में अणुव्रत प्रभारी मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मनाया गया। इस दौरान विभिन्न कार्यक्रम व संगोष्ठियों का आयोजन किया गया

● 26 सितंबर, 2010 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा पर्यावरण शुद्धि के लिए संयम की चेतना का विकास जरूरी है। हमें बाह्य प्रदूषण के साथ वैचारिक और आंतरिक पर्यावरण को भी शुद्ध बनाना चाहिए। इस अवसर पर मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार ने भी अपने विचार रखे। समिति के मंत्री प्रकाश भंसाली ने भी अपने विचार रखे।

● 27 सितंबर 2010 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा प्रणाली में जीवन विज्ञान का समावेश जरूरी है। बौद्धिक विकास के साथ भावनात्मक व मानसिक विकास पर भी विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित करना चाहिए।

● 28 सितंबर को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा जीवन को कलापूर्ण बनाने के लिए अणुव्रत आचार संहिता सशक्त माध्यम है। मुनिश्री की प्रेरणा से अनेक भाई-बहनों ने अणुव्रत के संकल्प ग्रहण किए।

● 29 सितंबर को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा मतभेद होते हुए भी मनभेद नहीं होना चाहिए। धार्मिक सहिष्णुता वर्तमान युग की महानतम आवश्यकता है।

● 30 सितंबर को ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनि राकेशकुमार ने कहा नशे और गुस्से की बुराई ने असंख्य परिवारों को पतन के गर्त में डाल दिया है। नशा मनुष्य की विवेक चेतना को लुप्त कर देता है। नशा विकास नहीं विनाश की निशानी है। संगोष्ठी में युवाओं की अच्छी उपस्थिति रही। मुनि सुधाकर, मुनि दीपकुमार व विजय चोपड़ा ने अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के बच्चों ने नाटिका प्रस्तुत की। सभी संभागियों ने नशा न करने का संकल्प ग्रहण किया।

● 1 अक्टूबर को ''अनुशासन दिवस'' पर दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र संघ के नेताओं ने अणुव्रत के कार्यक्रम में आस्था प्रकट करते हुए नशे के विरोध में अभियान चलाने का संकल्प किया। मुनि राकेशकुमार ने अणुव्रत के सिद्धांतों का विवेचन करते हुए विद्यार्थियों को अनुशासन में रहने की प्रेरणा दी। दिल्ली प्रदेश विद्यार्थी परिषद् के महामंत्री आशुतोष ने कहा हम मुनिश्री की प्रेरणा से विश्वविद्यालय में नशामुक्ति के अभियान को आगे बढ़ायेंगे।

● 2 अक्टूबर को ''अहिंसा दिवस'' पर मॉडल टाऊन जैन स्थानक में मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें स्थानकवासी उपाध्याय रमेश मुनि, दिपेन्द्र मुनि, साध्वी सुषमा, साध्वी संगीतश्री ठाणा-8 ने विशेष रूप से भाग लिया। मुनि राकेशकुमार ने कहा अहिंसा की साधना के लिए जीवन में गुणग्राहयता और कृतज्ञता का विकास जरूरी है। विचारों की शुद्धि और पवित्रता के बिना अहिंसा की साधना नहीं हो सकती। अणुव्रत का अहिंसा दर्शन मानव जाति के लिए कल्याणकारी है। उपाध्याय रमेश मुनि ने कहा अहिंसा, करुणा, मैत्री का संदेश जन-जन में प्रचारित व प्रसारित होना चाहिए। साध्वी संगीतश्री ने कहा मुनिश्री के स्थानक में पधारने पर हम उनका अभिनंदन व स्वागत करते हैं। इस अवसर पर विजय चोपड़ा, नरेश जैन ने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन मुनि सुधाकर ने किया। कार्यक्रम में दिल्ली उत्तर मध्य सभा का सराहनीय श्रम रहा।

● विवेक विहार ओसवाल भवन में अणुव्रत महासमिति के तत्वावधान में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के तहत ''अनुशासन एवं जीवन विज्ञान दिवस'' का कार्यक्रम रखा गया। प्रारंभ बहिनों द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत महासमिति के संयुक्त मंत्री बाबूलाल गोलछा ने स्वागत भाषण दिया। मुख्य वक्ता श्यामसुंदर सोनी ने कहा सबसे पहला अनुशासन स्वयं से होता है। अपने आचार-विचार से निकले शब्दों पर अनुशासन होगा तो परिवार, समाज व राष्ट्र स्वयं अनुशासित होगा। अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्प करें तो स्वतः ही अनुशासन आ जायेगा। अणुव्रत महासमिति की शिक्षामंत्री राज गुनेचा ने आत्मानुशासन के प्रयोग करवाये। विमल गुनेचा ने जीवन विज्ञान पर अपने विचार रखे। साध्वी यशोधरा ने कहा हम अनुशासन में रहते हुए जीवन विज्ञान के प्रयोगों को अपने जीवन में उतारें। आभार ज्ञापन दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़ ने किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत महासमिति के कोषाध्यक्ष रतनलाल सुराणा ने किया।

■ रायपुर

● 26 सितंबर 2010 को अमोलक भवन में ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' मनाया गया। प्रारंभ अणुव्रत गीत के सामूहिक संगान से हुआ। सुरेन्द्र ओसवाल ने अणुव्रत आंदोलन के इतिहास पर प्रकाश डाला। वीरेन्द्र डागा ने पर्यावरण दूषित होने के कारणों की व्याख्या की। पुष्पा कोठारी ने अणुव्रतों को जीवन में उतारने की बात कही। इस अवसर पर समिति के पूर्व अध्यक्ष प्रकाश, वर्तमान मंत्री जीतमल जैन, समिति के अध्यक्ष उत्तम गांधी ने वर्तमान परिस्थितियों में अणुव्रत को प्रासंगिक बताया। संचालन जीतमल जैन ने किया।

सभी धर्मों के बीच सेतु का काम करता है अणुव्रत

■ मुंबई

अणुव्रत आंदोलन विगत 61 वर्षों से चारित्रिक शुद्धि अभियान की दिशा में प्रयासरत है। मुंबई में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के कार्यक्रमों की समिति के अध्यक्ष अर्जुन बाफना एवं मंत्री विनोद कोठारी के नेतृत्व में संयोजक रमेश धोका ने मुंबई महानगर व अन्य 21 जगहों पर आयोजना करवाई। साध्वी स्वर्णरेखा का सभी विषयों की आयोजना में मार्गदर्शन रहा।

● कांदिवली में ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' एवं ''अनुशासन दिवस'' का आयोजन साध्वी सूरजकुमारी के सान्निध्य में हुआ। इसमें सैकड़ों लोगों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।

● गोवंडी में विभिन्न स्कूलों, लायन्स क्लब, जैन मंदिर व भिक्षु दर्शन परिसर में सप्ताह भर कार्यक्रम आयोजित हुए। अहिंसा दिवस व व्यसनमुक्ति दिवस पर पोस्टर प्रदर्शनी व रक्तदान शिविर का आयोजन तेयुप गोवंडी व महिला मंडल के तत्वावधान में हुआ। रक्तदान शिविर में 41 यूनिट रक्त एकत्र किया गया। सान्निध्य समणी विपुलप्रज्ञा का रहा।

● नवी मुंबई के कोपरखैरने में चित्रकला प्रतियोगिता में 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया। उरण में रोटरी क्लब के संयुक्त तत्वावधान में ''भ्रूणहत्या विरोधी दिवस'' का आयोजन किया गया। पनवेल के मार्गों से गुजरती हुई व्यसनमुक्त रैली का आयोजन किया गया।

● दक्षिण मुंबई के महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल में आचार्य तुलसी सभागार में व्यसनमुक्ति दिवस व अनुशासन दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में स्थानकवासी साध्वी रत्नज्योति का सान्निध्य प्राप्त हुआ। चिराग डागलिया ने आकर्षक व्यसनमुक्ति डॉक्यूमेंट्री प्रस्तुत की। कुर्ला के नेहरू नगर में भी व्यसनमुक्ति दिवस मनाया गया। इसमें 200 छात्रों ने अभिभावकों के साथ भाग लिया। इस अवसर पर प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया।

● घाटकोपर के गुरुकुल स्कूल के 70 विद्यार्थियों ने पर्यावरण विषय पर प्रोजेक्ट प्रस्तुत किया।

● घाटकोपर के एस.एन.डी.टी. कॉलेज के ऑडिटोरियम में अणुव्रत आधारित विषय पर कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ।

● पश्चिम मुंबई अणुव्रत उपसमिति-1 के निर्देशन व युगीन काव्य के सहयोग से नेशनल कॉलेज बांद्रा में स्वरचित काव्य प्रतियोगिता का द्विदिवसीय आयोजन हुआ।

● पश्चिम मुंबई अणुव्रत उपसमिति-2 के निर्देशन में अंधेरी के गुंदवली स्थित स्कूल में अनुशासन दिवस का आयोजन हुआ। इसमें 200 विद्यार्थियों ने भाग लिया।

सप्ताह में आयोजित 29 कार्यक्रमों में हजारों छात्र-छात्राओं, विभिन्न जाति व धर्म के सैकड़ों लोगों ने भाग लिया। 2000 से अधिक छात्रों ने विद्यार्थी अणुव्रत के संकल्प पत्र भरे। सैकड़ों लोगों ने व्यसनमुक्त होने का संकल्प लिया। इन कार्यक्रमों में वक्ता के रूप में हुबनाथ पाण्डे, जयश्री बड़ाला, राजम नटराजन्, नेमीचंद जैन, बी.सी. भलावत, ललिता जोगड़, मनोहर गोखरू ने अपनी सेवाएं दी।

मुम्बई की सभी 11 अणुव्रत उपसमितियों के साथ प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में स्थानीय तेयुप, महिला मंडल एवं अन्य स्थानीय कार्यकर्ताओं की सहभागिता रही। इस वर्ष अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का आयोजन पिछले वर्षों से अच्छा एवं श्रेष्ठ रहा। स्थानीय एवं अन्य संस्थाओं द्वारा इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

■ भिवानी

साध्वी यशोमति के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के सभी कार्यक्रमों का सफल संयोजन समिति के मंत्री रमेश बंसल ने किया। सभी कार्यक्रमों की सफलता में समिति के संरक्षक सुरेन्द्र जैन एडवोकेट, अध्यक्ष डॉ. जे.बी. गुप्ता, विकास जैन, भरत सौलंकी एवं अन्य कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा।

● प्रथम दिवस का आयोजन 26 सितंबर सभा भवन में ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' के रूप में हुआ। इसमें ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों ने सर्वधर्म सद्‌भाव पर प्रभावी नाटिका प्रस्तुत की। साध्वी यशोमति ने कहा अणुव्रत के मंच पर सभी सांप्रदायिक सौहार्द का अनुभव कर सकते हैं, क्योंकि अणुव्रत सभी धर्मों के बीच सेतु का काम करता है। महामंडलेश्वर साध्वी करुणागिरि, निरंकारी मंडल के प्रमुख बलदेव नागपाल, गुरुद्वारा के प्रमुख ग्रंथी ज्ञानी प्रेमसिंह, आर्य समाज के प्रतिनिधि विद्यारत्न, महंत जगन्नाथ और ब्रह्मकुमारी बहनें नारायणी और अनिता ने अणुव्रत के मंच से विश्वशांति और भाईचारे का संदेश दिया। इस अवसर पर नगर के अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

● 27 सितंबर 2010 को द्वितीय दिवस का आयोजन आदर्श महिला महाविद्यालय में ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' के रूप में हुआ। साध्वी यशोमती ने कहा स्वयं को सुरक्षित रखने के लिए अणुव्रत रूपी सुरक्षा कवच आवश्यक है। साध्वी रचनाश्री ने कहा कि अणुव्रत मैन को गुडमैन बनाने का दर्शन है। इस अवसर पर महाविद्यालय प्रबंधक समिति के सचिव बृजलाल सर्राफ एवं प्राचार्य डॉ. अलका शर्मा ने अपने विचार रखे।

● 28 सितंबर को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' का आयोजन हुआ। साध्वीश्री ने उपस्थित जनसमुदाय

जीवन-सुरक्षा हेतु पर्यावरण बने शुद्ध एवं सुरक्षित

से संयमित जीवनशैली अपनाने का आह्वान करते हुए कहा कि दूसरों को बदलने से पहले खुद को बदलें। कार्यक्रम के संयोजक रमेश बंसल ने ध्वनि प्रदूषण, वायु प्रदूषण एवं जल प्रदूषण बचाव हेतु छोटी-छोटी बातों का उल्लेख किया।

● 29 सितंबर को रेडक्रास सोसायटी के हॉल में नशामुक्ति दिवस का आयोजन किया गया। अध्यक्षता रेडक्रास सचिव श्यामसुंदर शर्मा ने की। साध्वीश्री ने नशे से होने वाले नुकसानों का उल्लेख किया। रेडक्रास के सचिव ने कहा कि नशामुक्ति अभियान में हम सदैव आपके साथ हैं। इस अवसर पर उपस्थित छात्र-छात्राओं ने जीवन-पर्यन्त नशा न करने का संकल्प लिया।

● 30 सितंबर को भारती हाईस्कूल में जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जीवन विज्ञान के माध्यम से विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास के साथ-साथ चारित्रिक एवं भावनात्मक विकास भी हो सकता है। विद्यालय की प्राचार्या राजबाला कौशिक ने सभी विद्यार्थियों को नकल न करने एवं नशामुक्त रहने की शपथ दिलाई। साध्वी जयंतयशा ने दीर्घश्वास प्रेक्षा व शशांक आसन के प्रयोग करवाए। साध्वी रचनाश्री ने कहा जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है।

● 1 अक्टूबर 2010 को सभा भवन में अनुशासन दिवस का आयोजन किया गया। साध्वी यशोमति ने कहा अनुशासित होने के लिए अहम् को त्यागना पड़ता है। जिसके जीवन में अहंकार प्रबल हो जाता है वह अनुशासन का पालन नहीं कर सकता। इस अवसर पर साध्वी रचनाश्री एवं साध्वी जयंतयशा ने भी अपने विचार रखे।

● 2 अक्टूबर 2010 को गांधी जयंती पर अहिंसा दिवस का कार्यक्रम प्रातःकालीन एवं सायंकालीन दो सत्रों में रखा गया। प्रातःकालीन सत्र में विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों एवं मुख्य वक्ताओं ने अपने सारगर्भित वक्तव्य रखे एवं सभी ने देश को अमनचैन के मार्ग पर चलकर अहिंसा को बलवती बनाने की बात कही।

सायंकालीन सत्र में अहिंसा पर आधारित सांस्कृतिक संध्या का आयोजन हुआ। इसमें ज्ञानशाला के बच्चों ने दहेज लोलुपता एवं नैतिकता पर आधारित लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की। इस अवसर पर कवयित्री डॉ. मधुमालती, डॉ. रमाकांत शर्मा, गीता सिंह, पुरुषोत्तम पुष्प एवं स्थानीय कवियों ने कविताओं के माध्यम से अपनी बात कही।

■ गंगापुर

अणुव्रत समिति गंगापुर के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का शुभारंभ 26 सितंबर 2010 को अणुव्रत ग्राम मैलोनी के विद्यालय प्रांगण में मुनि हर्षलाल लाछूड़ा के सान्निध्य में अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय वार्ड के पार्षद अशोक लड्ढ़ा एवं अध्यक्षता स्थानीय विद्यालय के प्रधान कालूराम जीनगर ने की। उद्बोधन सप्ताह के प्रभारी जगदीश बैरवा ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

मुनि हर्षलाल लाछूड़ा ने पर्यावरण शुद्धि दिवस पर कहा हमारा देश ही नहीं वरन् समस्त विश्व प्रदूषण की समस्या से त्रस्त है, पीड़ित है। पानी, हवा और हरियाली ये तीनों ही पर्यावरण शुद्धि के घटक हैं और आज तीनों ही प्रदूषित हैं। अपेक्षा है हम जीवन मूल्यों को समझें और पर्यावरण को प्रदूषण से बचाने का संकल्प करें। मुनि यशवंत कुमार ने कहा पर्यावरण का आशय है प्रकृति एवं मानव के मध्य संतुलन कायम करना है। समस्याओं के समाधान के लिए अणुव्रत अमोघ साधन है।

मुख्य अतिथि अशोक लड्ढ़ा ने पर्यावरण के प्रदूषण की समस्या पर चिंता व्यक्त की। समिति के मंत्री रमेश हिरण ने मुख्य अतिथि को साहित्य भेंट किया। संयमः खलु जीवनम् के जयघोष से कार्यक्रम का समापन हुआ।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' का आयोजन राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय कुण्ड चौक के प्रांगण में हुआ। मुख्य अतिथि पूनम मेहता, अध्यक्ष नगरपालिका गंगापुर एवं अध्यक्षता विद्यालय प्रधान ममता जीनगर ने की। जगदीश बैरवा ने विषय पर प्रकाश डाला।

मुनि हर्षलाल लाछूड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रत दर्शन क्रांति का दर्शन है। अपेक्षा है कि प्रत्येक व्यक्ति अणुव्रत की आचार संहिता को अपने जीवन में उतारे। मुनि यशवंत कुमार ने कहा अणुव्रत मानवता का प्रहरी एवं रुग्ण मानवता के लिए औषधि है। अपेक्षा है व्यक्ति अणुव्रत के द्वारा अपनी जीवन शैली को बदलने का प्रयत्न करे।

मुख्य अतिथि पूनम मेहता ने कहा अणुव्रत एक ऐसा दीप है, जो हजारों दीप जला सकता है। अणुव्रत स्वयं को देखने का दर्शन है। जो अणुव्रत के ढांचे में ढल जाता है, वह सही मानव बन जाता है। समिति के सहमंत्री रमेश हिरण ने कहा अणुव्रत हमारे जीवन का आदर्श बने। समिति के संरक्षक देवेन्द्र कुमार हिरण ने अपने विचार रखे। अणुव्रत घोष से कार्यक्रम का समापन हुआ।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' का आयोजन आदर्श विद्या मंदिर के प्रांगण में समायोजित हुआ। मुख्य अतिथि रमेश हिरण थे। विद्यालय प्रधान ओमप्रकाश गोस्वामी ने विषय पर प्रकाश डाला। मुनि यशवंतकुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा आज देश में साम्प्रदायिक सौहार्द की महती आवश्यकता है। आज

अच्छा आदमी बनाने का कारखाना है अणुव्रत

अपेक्षा है भाईचारे की। अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने हमारे समक्ष अणुव्रत आचार संहिता प्रस्तुत करते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द की भावना को बल दिया। साम्प्रदायिक सौहार्द भारतीय संस्कृति की अमूल्य देन है। रमेश हिरण ने कहा यदि हर व्यक्ति अणुव्रती होगा तो देश में साम्प्रदायिक सौहार्द की समस्या पैदा नहीं होगी। देवेन्द्र कुमार हिरण ने भी अपने विचार रखे। संयोजन प्रकाश रिणवा ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' का आयोजन जवाहर सेवा सदन विद्यालय में समायोजित हुआ। मुख्य अतिथि जीवन विज्ञान के व्याख्याता डॉ. जयसिंह जेतमाल थे। अध्यक्षता विद्यालय प्रधान बंशीलाल मण्डोवरा ने की। जगदीश बैरवा ने विषय पर प्रकाश डाला। मुनि यशवंतकुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा जीवन विज्ञान की शिक्षा इंसान को अच्छा इंसान बनाती है। विद्यार्थी अणुव्रत संकल्पों को जीवन में प्रवेश देकर अच्छे विद्यार्थी बन सकते हैं। रमेश हिरण ने कहा कि जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाती है। अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र के पर्यवेक्षक भगवानलाल बंशीवाल ने कहा अणुव्रत वह माध्यम है जिसके द्वारा जीवन को स्वच्छ, पवित्र एवं निर्मल बनाया जा सकता है। अणुव्रत गीत से कार्यक्रम का समापन हुआ।

■ शाहपुरा

● 26 सितंबर को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर पर्यावरण पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। कला संस्थान के अध्यक्ष रंगकर्मी रामप्रसाद पारीक

ने कहा आज जरूरत है प्रकृति के संरक्षण की, ताकि हमारे जीवन की पूर्ति के साथ-साथ प्रकृति की मनोरम छटा से हमारा जीवन आनंदित एवं सुखी रह सके। विजेता प्रतियोगियों को पुरस्कृत किया गया।

● 27 सितंबर को ''जीवन विज्ञान दिवस'' रा.उ.मा.वि. शाहपुरा में मनाया गया। शिक्षक सत्यनारायण सेन ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। अध्यक्षता संस्था प्रधान बंकट सिंह शक्तावत ने की। पंचोली ने कहा स्वयं पर स्वयं का नियंत्रण, स्वानुशासन से संभव है यही जीवन विज्ञान का लक्ष्य है।

● 28 सितंबर को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' अणुव्रत इकाई के मंत्री संदीप व्यास के संयोजन में मनाया गया। रा.बा.उ.मा.वि. में ''नैतिक चेतना का आंदोलन अणुव्रत'' विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। इस अवसर पर अणुव्रती बनो अभियान में ममता राजावत, मोनिका शर्मा ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे।

● 29 सितंबर को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर प्राध्यापक मोहब्बत अली कायमखानी ने अनेकता में एकता विषय पर व्याख्यान दिया। भारतीय संस्कृति बहुरंगी मनोहारी गुलदस्ता है, जो दुनिया की सबसे खूबसूरत संस्कृति है। इस अवसर पर मनोहर सिंह डांगी, राजेन्द्र प्रसाद डांगी ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे एवं अपने विचार रखे।

● 30 सितंबर को ''नशामुक्ति दिवस'' पर गोपीलाल रेगर के संयोजन में रेगर बसी तहनाल गेट में नशा विरोधी रैली निकाली गयी। सायं 7 बजे रामदेव के मंदिर में एक जनसभा में डॉ. कमलेश पाराशर, गायत्री परिवार के प्रदीप शर्मा, सेवा भारती के जिलाखंड मंत्री तेजपाल उपाध्याय, अणुव्रत समिति के मंत्री गोपाल लाल पंचोली, देवेन्द्र बूलिया ने नशे से होने वाली हानियों से बचने के साधारण एवं व्यावहारिक तरीके बताए। इस अवसर पर प्रेस क्लब के सहयोग से एक मेडिकल कैम्प का भी आयोजन किया गया।

● 1 अक्टूबर को ''अनुशासन दिवस'' का आयोजन रा.उ.मा. विद्यालय ढीकोला में हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता तेजपाल ने की। इस अवसर कई वक्ताओं ने अपने विचार रखे।

● 2 अक्टूबर को ''अहिंसा दिवस'' स्थानीय महाविद्यालय में डॉ. हरमल रेबारी के संयोजन में मनाया गया। 'अहिंसक समाज की आवश्यकता एवं उपादेयता'' विषय पर पत्रवाचन प्रतियोगिता मूलचंद खटीक की अध्यक्षता में रखी गयी। प्रतियोगिता में दिनेश गुर्जर प्रथम, सुरेश कुमार तेली द्वितीय व महावीर प्रसाद रेगर तृतीय रहे। सप्ताह का समापन राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति एवं अणुव्रत समिति शाहपुरा के संयुक्त तत्वावधान में यंग स्पोर्ट्स क्लब में समारोह के रूप में हुआ।

■ जसोल

● 26 सितंबर को अणुव्रत समिति जसोल के तत्वावधान में प्रथम दिवस ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' के रूप में साध्वी मधुस्मिता के सान्निध्य में मनाया गया। इसमें विभिन्न संप्रदायों के धर्मगुरुओं ने भाग लिया। इस अवसर पर साध्वी मधुस्मिता

व्यक्ति और समाज का मूलाधार है अनुशासन

साध्वी स्वस्थप्रज्ञा, साध्वी भावयशा, साध्वी सहजयशा, साध्वी मलिप्रभा, मौलाना तौसीपरजा, बाबा चंद्रनाथ, सांवलराम सेजू, नायब तहसीलदार शंकराराम गर्ग, भूपतराज कोठारी, मोहनलाल खंडेलवाल, मूणलाल प्रजापत ने विचार रखे। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। धन्यवाद ज्ञापन शंकरलाल ढेलड़िया ने किया। संचालन सफरूखान ने किया।

● 27 सितंबर को ''जीवन विज्ञान दिवस'' साध्वी मधुस्मिता के सान्निध्य में रा.मा.बा. सुआदेवी भंसाली विद्यालय में मनाया गया। इस अवसर पर मनोहरलाल सेन, साध्वी स्वस्थप्रभा, शंकरलाल ढेलड़िया, बाबूलाल लूंकड़, सम्पत चौपड़ा, शांतिलाल भंसाली, महेन्द्र आर. तातेड़ एवं शाला प्रधानाचार्य ने विचार रखे। कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं द्वारा 68 व्यसनमुक्ति के संकल्प पत्र भरे गये।

● 28 सितंबर को ''अणुव्रत चेतना दिवस'' एस.एन. वोहरा रा. सी.से. विद्यालय में मनाया गया। साध्वी मधुस्मिता ने कहा यदि अच्छे आदमी का निर्माण हो जाए तो देश का निर्माण स्वतः हो जाएगा। अच्छा आदमी बनाने का कारखाना है अणुव्रत। विद्यार्थियों, शिक्षकगणों एवं अन्य महानुभावों ने सामूहिक व्यसनमुक्ति के संकल्प पत्र भरे।

● 29 सितंबर को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' एस.एन. बोहरा विद्यालय में मोहनलाल खंडेलवाल व मनोहरलाल सेन की देखरेख में साध्वी मधुस्मिता के सान्निध्य में मनाया गया। इसमें 80 विद्यार्थियों एवं 6 शिक्षकों ने वर्गीय अणुव्रत के संकल्प पत्र भरे। विद्यालय में चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। इस अवसर पर जी.एल. नाहर, सफरू खान, मूणलाल प्रजापत, गौतमचंद सालेचा, शांतिलाल भंसाली, ईश्वरसिंह, भूपतराज कोठारी, जयप्रकाश गुप्ता, जगदीश कुमार गोस्वामी ने विचार रखे। आभार ज्ञापन श्रवण कुमार ने एवं संचालन निम्बारक ने किया।

● 30 सितंबर को ''नशामुक्ति दिवस'' रा.उ.प्रा.वि. अमरपुरा में साध्वी मधुस्मिता साध्वी स्वस्थप्रभा व साध्वी भावयशा के सान्निध्य में मनाया गया। भूपत कोठारी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। इस अवसर पर अमरपुरा के 160 बालक बालिकाओं ने व भील बस्ती के 42 बालक-बालिकाओं ने नशामुक्ति के संकल्पपत्र भरे।

● 1 अक्टूबर को ''अनुशासन दिवस'' का आयोजन हुआ। साध्वी मधुस्मिता, मूणलाल प्रजापत ने अनुशासन पर विचार रखे। उन्होंने दृढ़ संकल्प और मानवीय गुणों को अपनाने की बात कही। संचालन सफरू खान ने किया।

0 2 अक्टूबर को ''अहिंसा दिवस'' सभा भवन में मनाया गया। साध्वी मधुस्मिता ने अहिंसा दिवस की महत्ता का वर्णन किया। साध्वी स्वस्थप्रभा, भावयशा, सहजयशा ने सामूहिक अहिंसा गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष मूणलाल प्रजापत ने उद्‌बोधन सप्ताह में सहयोगियों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम की बहुत प्रभावना हुई।

■ सुजानगढ़

अणुव्रत समिति सुजानगढ़ के तत्वावधान में मुनि हीरालाल एवं सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उल्लासपूर्वक मनाया गया।

● 26 सितंबर 2010 को पर्यावरण शुद्धि दिवस मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में आयोजित हुआ। मुनिश्री ने कहा स्वस्थ जीवन के लिए शुद्ध पर्यावरण आवश्यक है। पर्यावरण चेतना को जन-जन तक पहुंचाया जाय, यही इस दिवस का उद्देश्य है। इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष विजय सिंह बोरड़ ने अणुव्रत प्रचार-प्रसार साहित्य का वितरण किया। कार्यक्रम में शम्सुद्दीन स्नेही, कन्हैयालाल तुनवाल, आशकरण दरोगा की प्रमुख उपस्थिति रही। संयोजन संस्था मंत्री घनश्याम नाथ कच्छावा ने किया।

● 27 सितंबर को अनुशासन दिवस पर मुनि रमेशकुमार ने कहा अनुशासन व्यक्ति और समाज का मूलाधार है। अनुशासन के अभाव में जीवन बिखर जाता है। बिखरे जीवन को संवारने के लिए जरूरी है अनुशासन। कार्यक्रम में विजयसिंह बोरड़, बी.जी. शर्मा, बुद्धि प्रकाश सोनी, शम्सुद्दीन स्नेही, उत्तम वागरेचा, आशकरण दरोगा, संदीप डोसी सहित गणमान्य व्यक्ति एवं कार्यकर्ता उपस्थित थे। संचालन घनश्यामनाथ कच्छावा ने किया।

● 28 सितंबर को अणुव्रत प्रेरणा दिवस पर मुनि रमेशकुमार ने कहा अणुव्रत आचार संहिता एवं वर्गीय आचार संहिता की जानकारी जन-जन में देना जरूरी है। इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे।

● 29 सितंबर को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन सभा भवन में किया गया। शुभारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। मुनि हीरालाल, सेवा केन्द्र व्यवस्थापक मुनि रमेशकुमार का सान्निध्य रहा। अध्यक्षता संतोष व्यास प्राचार्य सो.दे. सेठिया गर्ल्स कॉलेज ने की। मुख्य अतिथि अजीतसिंह राजावत उपखंड अधिकारी सुजानगढ़। प्रमुख वक्ता सीताराम दाधीच सेवा निवृत उपनिदेशक शिक्षा विभाग, भंवरसिंह सामौर वरिष्ठ साहित्यकार चुरू, विशिष्ट अतिथि डॉ. विजय राज शर्मा अध्यक्ष न.पा. सुजानगढ़, मो. इदरीश गौरी थे। सभी वक्ताओं ने पूरे देश में भाईचारे की भावना को बढ़ाने पर बल दिया।

● 30 सितंबर को मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में ''नशामुक्ति दिवस'' मनाया गया। मुनिश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है, अतः नशे की लत के आदि न बनें। मुनिश्री ने उपस्थित भाई-बहनों से नशा नहीं करने का संकल्प करवाया एवं नशे से होने वाली हानियों की जानकारी दी। कार्यक्रम की सफलता में विजय सिंह बोरड़, घनश्यामनाथ कच्छावा, बुद्धि प्रकाश सोनी, शम्सुद्दीन स्नेही, उत्तम वागरेचा, आशकरण दरोगा, संदीप डोसी, मनीष बोरड़ का सराहनीय श्रम रहा।

● 1 अक्टूबर 2010 को मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में ''अहिंसा दिवस'' का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने वर्तमान में बढ़ती हिंसा को रोकने हेतु अणुव्रत आंदोलन द्वारा चलाये जा रहे अहिंसा समवाय एवं अहिंसा प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी। मुनिश्री ने कहा कि अहिंसा के स्वर को जन-जन तक पहुंचाया जाए। विजय सिंह बोरड़ ने अणुव्रत एवं अहिंसा से

अणुव्रत हृदय परिवर्तन का कारखाना है

संबंधित प्रचार प्रसार सामग्री का वितरण किया।

● 2 अक्टूबर 2010 को मुनि रमेशकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का समापन कार्यक्रम ''जीवन विज्ञान दिवस'' के रूप में आयोजित हुआ। मुनिश्री ने उपस्थित भाई-बहनों को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये एवं उनकी जानकारी देते हुए कहा शिक्षा का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक रूप जीवन में निखरे। शिक्षा को मूल्यपरक बनाने के लिए जीवन विज्ञान शिक्षा का पाठ्यक्रम में समन्वय जरूरी है। सभी कार्यक्रमों की सफलता में विजय सिंह बोरड़, घनश्याम नाथ कच्छावा, बुद्धि प्रकाश सोनी, कैलाश सर्राफ, शम्सुद्दीन स्नेही, उत्तम वागरेचा, विद्याप्रकाश वागरेचा, आशकरण दरोगा, संदीप डोसी, मनीष बोरड़ का सराहनीय श्रम रहा। कार्यक्रमों में आगंतुक अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

■ बालोतरा

अणुव्रत समिति बालोतरा द्वारा अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

● 26 सितंबर, 2010 को सप्ताह का प्रारंभ सभा भवन में मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' के रूप में किया गया। समिति के मंत्री जवेरीलाल सालेचा ने बताया कि साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस पर विभिन्न धर्मगुरुओं ने अपने उद्‌गार व्यक्त किये। मुस्लिम समाज से मोहम्मद इस्माईल ने कहा प्रेम, भाईचारा, मोहब्बत ये सब इंसानियत के लक्षण हैं। हम इन्हें अपनायें एवं अपना जीवन सुधारें तभी ऐसे कार्यक्रमों को मनाना सार्थक होगा। मुनि रविन्द्रकुमार ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों के द्वारा जीवन का कल्याण संभव हो सकता है। सभी धर्मों के रास्ते अलग हो सकते हैं लेकिन मंजिल सभी की एक है। इस अवसर पर अणुव्रत समिति बालोतरा के पूर्व अध्यक्ष भंवरलाल सालेचा, मुख्य अतिथि पचपदरा के विधायक मदन प्रजापत ने अपने विचार रखे। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश बांठिया ने स्वागत किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के सभी प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। समिति के कार्याध्यक्ष फतेहचंद ओस्तवाल ने आभार ज्ञापन एवं संचालन जवेरीलाल सालेचा ने किया।

● 27 सितंबर 2010 को मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में जीवन विज्ञान दिवस मनाया गया। मुनिश्री ने कहा कि जब तक शिक्षा ग्रहण करने वाले में उसकी पात्रता नहीं होगी तब तक वह अधूरा है। इस अवसर पर मुनि पृथ्वीराज एवं अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर ने अपने विचार रखे। समिति द्वारा नाहर का स्वागत किया गया।

● कार्यक्रम का दूसरा चरण डी.आर.जे. कन्या महाविद्यालय में रखा गया। मुनिश्री ने विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम में डॉ. प्रदीप मोदी, जी.एल. नाहर ने अपने विचार रखे। विद्यालय के प्राचार्य सतीश शर्मा ने सभी आगंतुकों के प्रति आभार व्यक्त किया। फतेहचंद ओस्तवाल, शिवकुमार ढेलड़िया, सम्पतराज नाहटा, ललित श्रीमाल, सालगराम परिहार, अरुण गोड, देवीबाई छाजेड़, रेशमी वैद मुथा, गुणवंती देवी, चंदा देवल बालड़ उपस्थित थे। समिति द्वारा विद्यालय को अणुव्रत आचार संहिता बोर्ड भेंट किया गया।

● 28 सितंबर 2010 को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' सभा भवन में मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य में मनाया गया। प्रारंभ मुनि दिनकर द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। मुनि पृथ्वीराज ने कहा अणुव्रत हृदय परिवर्तन का कारखाना है। अणुव्रत के द्वारा मनुष्य के भीतर छिपी बुराइयों को बाहर निकाला जा सकता है। मुनि रविन्द्रकुमार ने अणुव्रत आचार संहिता का विश्लेषण किया।

● कार्यक्रम का दूसरा चरण राजकीय उच्च प्रा. कन्या विद्यालय में रखा गया। मुनि रविन्द्रकुमार ने छात्राओं को अणुव्रत को जीवन में उतारने की बात कही। संचालन सम्पतराज राजपुरोहित ने किया। आभार व्यक्त विद्यालय के प्राचार्य अशोक कुमार रांकावत ने किया।

● 29 सितंबर 2010 को चौथा दिवस ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर श्रीमती मेहताबदेवी मिश्रीमल अग्रवाल राजकीय उच्च मा. वि. गांधीपुरा में वृक्षारोपण का क्रम रहा। समिति ने स्कूल प्रांगण में पौधे लगवाए एवं बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। इस अवसर पर सालगराम परिहार, जवेरीलाल सालेचा, विद्यालय की प्राचार्या विमला चौधरी ने अपने विचार रखे। समिति के अध्यक्ष फतेहचंद ओस्तवाल, सम्पतराज नाहटा, शिवकुमार ढेलड़िया,

संगठन की आधारशिला है अनुशासन

स्वरूपचंद दांती कार्यक्रम में उपस्थित थे।

● पर्यावरण शुद्धि दिवस पर प्रातः 8:30 बजे मदर टेरेसा विद्यालय में पर्यावरण शुद्धि रैली का आयोजन किया गया। ओमप्रकाश बांठिया एवं रमेश गुप्ता ने रैली को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं अभिभावकगण तथा अन्य भाई-बहनों ने भाग लिया। रैली शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई सभा भवन में मुनि पृथ्वीराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सभा भवन में पर्यावरण शुद्धि पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। प्रतियोगिता में विजेता बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

● 30 सितंबर 2010 को ''नशामुक्ति दिवस'' का श्रीगणेश मेहताबदेवी मिश्रीमल अग्रवाल रा.उ.मा. विद्यालय गांधीपुरा से नशामुक्ति रैली के साथ हुआ। रैली को महेश चौहान अध्यक्ष नगर पालिका बालोतरा ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया। रैली में अणुव्रत समिति के सदस्यों एवं विद्यालय परिवार के सदस्यों ने भाग लिया। रैली मुख्य मार्गों से होती हुई सभा भवन में सम्पन्न हुई। मुनि रविन्द्रकुमार ने कहा नशा जीवन का नाश करता है, इसलिए बच्चों को नशे से दूरी बना लेनी चाहिए। मुनिश्री ने बच्चों को प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। कार्यक्रम में फतेहचंद ओस्तवाल जवेरीलाल सालेचा, सम्पतराज नाहटा, ललित श्रीमाल, स्वरूपचंद दांती उपस्थित रहे।

● कार्यक्रम के दूसरे चरण में स्थानीय सभा भवन में समिति द्वारा नशामुक्ति पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन कन्या मंडल के तत्वावधान में रखा गया। कन्याओं द्वारा पोस्टर बनाकर प्रदर्शनी लगवाई गयी। इसका अवलोकन मुनि रविन्द्रकुमार, मुनि पृथ्वीराज ने किया। विजेता प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

● 1 सितंबर 2010 को अनुशासन दिवस पर स्थानीय सभा भवन में शिक्षक सम्मेलन का आयोजन मुनि रविन्द्रकुमार के सान्निध्य हुआ। मुनिश्री ने कहा किसी भी संगठन की आधारशिला अनुशासन है। आप स्वयं अनुशासन में रहें और दूसरों को भी अनुशासन में रहने की बात बताएं, तभी इस दिवस की महत्ता है। क्योंकि अणुव्रत का मुख्य घोष है निज पर शासन फिर अनुशासन। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्रबुद्ध वर्ग एवं शिक्षकगण उपस्थित थे। मुख्य अतिथि घेवरचंद बोहरा प्रबंधक यूनाइटेड इंडिया इंशोरेन्स बालोतरा ने भी अपने विचार रखे। मुनि पृथ्वीराज ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाए। मुख्य अतिथि का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। आभार प्रकट फतेहचंद ओस्तवाल ने किया। संचालन जवेरीलाल सालेचा ने किया।

● 2 अक्टूबर 2010 को सप्ताह का समापन समारोह ''अहिंसा दिवस'' के रूप में मनाया गया। मुनि रविन्द्रकुमार ने कहा अहिंसा को आचरण में लाना आवश्यक है। अहिंसा सिर्फ दिखावा ही नहीं यह हृदय परिवर्तन का मूलभूत सिद्धांत है। मुनि पृथ्वीराज ने अहिंसा को आत्मसात करने की बात कही। ओमप्रकाश बांठिया ने कार्यक्रम में पधारे सभी आगंतुकों का हार्दिक स्वागत किया।

● अहिंसा दिवस पर एक विशिष्ट व्यक्तित्व के सम्मान क्रम में भंवरलाल सालेचा पूर्व उपजिला शिक्षा अधिकारी का सम्मान ''अणुव्रत सेवा सम्मान'' द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि महेश चौहान अध्यक्ष नगरपालिका ने अपने विचार रखते हुए अणुव्रतों को जीवन में उतारने की बात कही। कार्यक्रम में निगम पार्षद प्रतापचंद लालवाणी, नैनाराम, युसुफ भाई, जितेन्द्र, मीठालाल डागा, गिरधारीलाल खत्री, विमला चौधरी के अलावा अणुव्रत समिति, युवक परिषद, कन्या मंडल के सदस्य उपस्थित थे। आभार प्रकट ललिता श्रीमाल ने किया। संचालन जवेरीलाल सालेचा ने किया।

■ नोहर

● 26 सितंबर 2010 को साध्वी रतनश्री 'लाडनूं' के सान्निध्य में सप्ताह का प्रारंभ नेहरू बाल वाटिका उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' के रूप में अणव्रत गीत के संगान से हुआ। साध्वी रतनश्री ने कहा आज के युग में पर्यावरण की चिंता बढ़ रही है। इसके असंतुलन के कारण न समय पर वर्षा होती है न सर्दी, न गर्मी का समय होता है। प्रदूषण ने प्रकृति में बहुत बड़ा असंतुलन पैदा कर दिया। इसका समाधान अणुव्रत के द्वारा ही संभव है। अणुव्रत के प्रमुख घोष 'संयमः खलु जीवनम्' को जीवन में अपनाकर हम अच्छा जीवन जी सकते हैं। प्रारंभ महिला मंडल द्वारा 'पर्यावरण गीत' के संगान से प्रारंभ हुआ। इस अवसर पर साध्वी रमावती, साध्वी हिमश्री, तारादेवी बांठिया, विद्यालय के प्राचार्य प्रेमकुमार खत्री, सुशीला बांठिया, किरण छाजेड़ ने अपने विचार रखे।

● 27 सितंबर 2010 को कन्या स्नातक गार्गी कॉलेज में आयोजित ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर सुशीला बांठिया ने कहा अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान के द्वारा बौद्धिक क्षमताओं, सृजनशीलता, भावात्मक स्थिरता में सार्थक वृद्धि होती है। जैविक असंतुलन को दूर करने व गिरते हुए मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिए शिक्षा जगत में जीवन विज्ञान एक नई क्रांति है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रामचन्द्र पारीक ने कहा विद्यार्थी को शिक्षा के साथ-साथ संस्कार निर्माण कार्य

अणुव्रतों की प्रेरणा से ही होगा बुराइयों का अंत

में जोड़ना चाहिए ताकि प्रारंभ से ही बच्चे सेवा, समर्पण, विनय, विवेक एवं अनुशासन प्रिय बनें। मुख्य अतिथि प्राचार्य एच.आर. गोदरा, तारा देवी बांठिया, कुसुम बरड़िया, समता, शांति, सिपानी, उम्मेद बरड़िया ने अपने विचार रखे।

● 28 सितंबर को स्थानीय सभा भवन में आयोजित ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर साध्वी रतनश्री ने कहा अणुव्रत वह रोशनी है जिसने कई पथ भूलों को अपना मार्ग बताया है। अणुव्रत साधार्मिकता और भाईचारे का जीवन जीने की प्रेरणा देता है। साध्वी हिमश्री ने ''अणुव्रत का उजाला फैले देश भर में'' गीत का मधुर संगान किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रामचन्द्र ने कहा अणुव्रत एक नैतिक आंदोलन है। यह मनुष्य को सही मनुष्य बनाने की प्रक्रिया है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि जनता पार्टी के नेता सुशील बोलड़, मुख्य वक्ता डॉ. कैलाश पाण्डे, साध्वी रमावती, सुशीला बांठिया ने अपने विचार रखे।

● 29 सितंबर 2010 को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' का प्रारंभ महिला मंडल द्वारा ''सुनो सयानो कहना मानो मत बांटो इंसान को'' गीत के मधुर संगान से हुआ। साध्वी रतनश्री ने कहा अणुव्रत एक असाम्प्रदायिक धर्म है। यह जाति, रंगभेद, नस्लवाद के बंधन में नहीं बंधा हुआ है। मुख्य अतिथि विधायक अभिषेक मटोरिया ने कहा भारत एक आध्यात्मिक प्रधान देश है। मैं अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को शक्तिशाली महाग्रंथ मानता हूं। मुस्लिम समाज के डॉक्टर मुस्तानसा ने कहा हम धर्म के मर्म को समझे। इस अवसर पर ब्रह्मकुमारी लक्ष्मी, पब्लिक स्कूल के निर्देशक प्रताप सेवग, कार्यक्रम के अध्यक्ष अमरचंद सिपाणी, साध्वी हिमश्री, सुशीला बांठिया, साध्वी रमावती, राजेन्द्र थिरानी, योगेश शर्मा, पुरुषोत्तम दायमा, सुशील सिपाणी, वकील चन्द्रमोहन छाजेड़ ने अपने महत्त्वपूर्ण विचार रखे।

● 30 सितंबर 2010 को 'नशमुक्ति दिवस'' का कार्यक्रम चौधरी पब्लिक स्कूल में साध्वी रमावती एवं साध्वी हिमश्री के सान्निध्य में रखा गया। साध्वी रमावती ने कहा आज नशा एक समस्या के रूप में है। जरूरत है नशे से दूर रहने की सोच बलवती हो। साध्वी हिमश्री ने कहा नशा नाश का द्वार है। ध्यान के द्वारा भीतर में बदलावा लाया जा सकता है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रामचन्द्र पारीक, सुशीला बांठिया इत्यादि ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी।

● 1 अक्टूबर, 2010 को ''अनुशासन दिवस'' का आयोजन साध्वी हिमश्री एवं साध्वी मुक्तियशा के सान्निध्य में नगरपालिका टाऊन हॉल में हुआ। महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। साध्वी हिमश्री ने कहा अनुशासन एक छैनी है, जो पत्थरों को तराश कर सुंदर प्रतिमा का रूप बना देता है। साध्वी मुक्तियशा ने कहा अनुशासन रूपी वटवृक्ष को खिलाने के लिए नैतिकता रूपी फूलों की जरूरत है। जिसकी सौरभ पूरे समाज को सुरभित करेगी। इस अवसर पर नगरपालिका के पूर्व चेयरमेन राजेन्द्र चाचाण, वर्तमान सरपंच बाबूलाल सुथार, पुलिस अधीक्षक, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रामचन्द्र पारीक, सुशील सिपाणी, सुभाष गोदारा, सरला सिपाणी, सुशीला बांठिया, किरण छाजेड़, सरोज बरड़िया ने अपने विचार रखे।

● 2 अक्टूबर 2010 को सभा भवन में सप्ताह का समापन समारोह ''अहिंसा दिवस'' के रूप में साध्वी रतनश्री के सान्निध्य में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत कोई सांप्रदायिक धर्म नहीं है। आज देश के सामने सम्प्रदायवाद, जातिवाद, आतंकवाद, गरीबी, बेरोजगारी इत्यादि समस्याएं सांप की तरह मुंह बाए सब कुछ निगलने को तैयार है। समस्याओं का समाधान अहिंसा, अनेकांत से ही संभव है। कार्यक्रम में सैकड़ों विद्यार्थियों ने नशा न करना एवं अनुशासन में रहने के संकल्प किये। प्रारंभ सुशील सिपाणी द्वारा गीत के संगान से हुआ। इसी क्रम में मुख्य अतिथि नोरतनमल सेठिया, शुभकरण भंसाली, रामचन्द्र, सुशीला बांठिया, ब्रह्मकुमारी सुमन ने अपने विचार रखे। सप्ताह में सभी अतिथियों, वक्ताओं को समिति द्वारा साहित्य भेंट कर सम्मान किया गया। सातों दिन ही स्थानीय सभा, तेयुप एवं महिला मंडल की सहभागिता रही। कार्यक्रमों का संचालन सुशीला बांठिया, सरोद देवी बरड़िया ने किया।

■ देवगढ़

अणुव्रत समिति देवगढ़ मदारिया के तत्वावधान में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह का कार्यक्रम उल्लासपूर्वक मनाया गया। ''अणुव्रत चेतना दिवस''

अणुव्रत पवित्रता एवं जीवन शुद्धि का संदेश देता है

पर मुनि प्रसन्नकुमार ने सभा को संबोधित करते हुए कहा अणुव्रतों की प्रेरणा जन-जन तक पहुंचे, इससे व्रतों, नियमों के प्रति जागरूकता आएगी तथा बुराइयों का अंत होगा। दूसरों के प्रति अन्याय ही स्वयं के प्रति अन्याय है। यह बात समझ में आ जाए तो दूसरों के साथ अन्याय व शोषण नहीं करेगा। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मंत्री राजेन्द्र कुमार सेठिया ने भी अपने विचार रखे।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा हमारा देश साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए विश्व में प्रसिद्ध उदाहरण है। भारतीय संस्कृति प्रभावित करने वाली एवं जोड़ने वाली है। हमारे यहां शताब्दियों से सभी जाति, वर्ग, धर्म और संप्रदाय के लोग प्रेम एवं भाईचारे के साथ रहते आए हैं। आपसी सद्भाव कायम करने के लिए एक-दूसरे को सहन करना पड़ता है। कुछ पाने के लिए खोना ही पड़ता है। राजेन्द्र कुमार सेठिया, प्रकाश डागा, चन्द्र प्रकाश आच्छा, मूलचंद बोहरा, उत्तमचंद सखलेचा, सुनील सेठिया, मांगीलाल श्रीमाल सहित अनेकों भाई-बहन उपस्थित थे।

● कार्यक्रम के दूसरे चरण में 'पुलिस शिविर देवगढ़' को संबोधित करते हुए मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा पुलिस जवानों की दोहरी जिम्मेदारी होती है। एक तरफ सेवा-सुरक्षा और दूसरी तरफ कर्त्तव्य परायणता। अतः जवानों को चरित्र-सम्पन्न सेवाभावना, राष्ट्रीयता को विस्मृत नहीं करना चाहिए। हौसला बुलंद रहने से उत्साह बना रहता है। जवानों को नशामुक्त रहना चाहिए। क्योंकि जिम्मेदार पद पर रहने वाले का जीवन शुद्ध रहना चाहिए। इस अवसर पर थानाधिकारी उगम सिंह शेखावत, प्रकाश मेहता, राजेन्द्र कुमार सेठिया, द्वितीय थानाधिकारी चतर सिंह, नाहर सिंह मेहता, शीला पोखरना, पार्षद मुकेश उपाध्याय, पार्षद नरेश पानेरी, शोभाराम रेगर, राजेन्द्र मेहता, चन्द्रप्रकाश आच्छा, चांद मोहम्मद, अर्जुनलाल जीनगर, सुरजनलाल तिवारी, नरेन्द्र पंचोली, भंवरलाल शर्मा, वैद्य जिनेन्द्र प्रसाद महात्मा, सुनील सेठिया, संपतलाल डागा उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन राजेन्द्र कुमार सेठिया ने किया। आभार थानाधिकारी उगमसिंह शेखावत ने किया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा जीवन में अगर एक बुराई भी प्रवेश करती है तो जीवन तबाह हो जाता है। नशा और व्यसन का सबसे बड़ा कारण है गलत संगत और भ्रष्टाचार का पैसा। महात्मा गांधी शराब के पक्के विरोधी थे। क्योंकि नशा धन, धर्म-प्रतिष्ठा और शरीर का नाश करता है। ऊंचे पदों पर कार्य करने वाले लोगों को अपना आदर्श कायम रखना चाहिए। अणुव्रत जीवन की पवित्रता का एवं जीवन शुद्धि का संदेश देता है। कार्यक्रम में सैकड़ों भाई-बहनों ने भाग लिया।

● ''अनुशासन दिवस'' पर स्थानीय सभा भवन में जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने व्यक्ति सुधार की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण नारा दिया था ''निज पर शासन फिर अनुशासन''। अनुशासन प्रभावी और फलित तभी होगा जब व्यक्ति स्वयं अनुशासित होगा। अनुशासन की बात जितनी प्रिय लगती है, उतना ही आचरण में लाना कठिन होता है। आज के युग में समाज के हर क्षेत्र में अनुशासन की जरूरत है। शिक्षा के गिरते स्तर का मुख्य कारण अनुशासन हीनता ही है। आज अनुशासन ही नहीं बल्कि आत्मानुशासन की महती आवश्यकता है। थोपा हुआ अनुशासन बलात होता है। अतः हमें स्वतः ही अनुशासन को जीवन में अपनाना होगा तभी यह समाज में फलित होगा। इस अवसर पर प्रकाश मेहता एवं राजेन्द्र कुमार सेठिया ने भी अपने विचार रखे।

● ''अहिंसा दिवस'' पर बोलते हुए मुनि प्रसन्नकुमार ने कहा आज युग पुरुष महावीर, महात्मा गांधी और शास्त्रीजी तीनों को याद किया जा रहा है एवं तीनों ही अहिंसा के पुजारी हुए हैं। इन्होंने अहिंसा का आदर्श प्रस्तुत किया एवं विश्व जनमानस में अहिंसक चेतना जगाने का भगीरथ प्रयत्न किया तथा अहिंसा की मिशाल पेश की। आपसी द्वेष व ईर्ष्या के कारण दरिद्र विचार बढ़े हैं। हिंसा के कारणों पर जितना अंकुश लगेगा उतना ही अहिंसा को बढ़ावा मिलेगा। परिवार, समाज और व्यक्तिगत आचरण में अहिंसा के प्रयोग हों। जिससे अहिंसा केवल उपदेश नहीं होकर जीवन शुद्धि का अंग बन जाए। हिंसा की आग को बुझाने वाली अहिंसा ही है। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समापन अहिंसा दिवस के साथ हुआ। विश्व शांति और अमन चैन की धरोहर है अहिंसा। सभी कार्यक्रमों में समिति के कार्यकर्ताओं एवं सभा के प्रतिनिधियों का सराहनीय श्रम रहा।

अणुव्रत का एकमात्र उद्देश्य है जाति, वर्ण, वर्ग, भाषा, प्रांत और धर्मगत संकीर्णताओं से ऊपर उठकर मानव मात्र को आत्मसंयम और नैतिक मूल्यों के प्रति प्रेरित करना।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावूतल्ला रोड, बालीगंज-**कोलकाता**-700019

● दूरभाष : 22809695

अणुव्रत है जन-जन के नैतिक उत्थान का मार्ग

■ **आसीन्द**

● 26 सितंबर को सभा भवन गांधी बाजार में अणुव्रत समिति आसींद के तत्वावधान में ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' के आयोजन के साथ सप्ताह का आगाज हुआ। मुनि सुरेशकुमार हरनावां ने कहा आज मानव धड़ल्ले से प्रकृति के साथ छेड़छाड़ कर रहा है, इसके खौफनाक नतीजे भुगतने पड़ रहे हैं। पानी हो या वृक्ष सभी जगह संयम निहायत जरूरी है। आज संयम के न होने से ही पर्यावरण प्रदूषण के खतरे उभर रहे हैं। मुनि संबोधकुमार, मुख्य अतिथि कीर्ति बोरदिया ने अणुव्रत आचार संहिता को पर्यावरण प्रदूषण को रोकने का ब्रह्मास्त्र बताया। इस अवसर पर समारोह के अध्यक्ष क्षेत्रीय वन अधिकारी देवी सिंह सांचोरा, समिति के संरक्षक कल्याणमल गोखरू, सुभाष जैन ने विचार रखे। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्वागत हरकचंद चोरड़िया ने किया। आभार ज्ञापन रवि रांका ने किया। अतिथियों का सम्मान डॉ. गिरधारी विश्वास, बालचंद निरंकारी ने किया। संचालन मुनि संबोधकुमार ने किया।

● 27 सितंबर 2010 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर रा. उ.मा. विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं भाई-बहनों को संबोधित करते हुए मुनि सुरेशकुमार हरनावां ने कहा जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है। जीवन विज्ञान का प्रायोगिक प्रशिक्षण देश के हालातों में आमूलचूल बदलाव ला सकता है। इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार, मुख्य अतिथि ओमप्रकाश झंवर, सोहनलाल कांठेड़, विशिष्ट अतिथि गणेशलाल मेहता ने विचार रखे। महिला मंडल ने ''बदले युग की धारा'' गीत का संगान किया। कार्यक्रम में ओमप्रकाश जोशी, हरकचंद चोरड़िया, तेजमल बाफना, कल्याणमल गोखरू, डॉ. विश्वास, तेजमल रांका, अनिल गोखरू, रतनलाल-लादूलाल दूगड़ उपस्थित थे। स्वागत नौरतनमल कांठेड़ ने एवं आभार ज्ञापन रामप्रसाद मेवाड़ा ने किया। संचालन रवि रांका ने किया।

● 28 सितंबर 2010 को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर आयोजित सर्वधर्म सद्भावना सम्मेलन को संबोधित करते हुए मुनि हरनावां ने कहा सम्प्रदाय नहीं साम्प्रदायिकता खतरनाक होती है। वक्त आ गया है कि हम गिले-शिकवे भुलाकर एक-दूसरे के साथ मिल-बैठकर देश की समस्याओं पर चिंतन कर उनका हल निकालें। इस हेतु देश में सांप्रदायिक सौहार्द के स्वर को बुलंद किया जाय।

मुनि संबोधकुमार, फादर क्लेमेट, मौलाना वाहिद, महंत रामशरण दास ब्रह्मचारी ने सभी को भाईचारे एवं प्रेम से रहने की प्रेरणा दी। महिला मंडल ने 'संयम जीवन हो' गीत का संगान किया। स्वागत सोहनलाल कांठेड़ ने एवं आभार व्यक्त रवि रांका ने किया। संचालन मुनि संबोधकुमार ने किया। सभी धर्मगुरुओं का अणुव्रत साहित्य द्वारा सम्मान किया।

● 29 सितंबर 2010 को ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनि सुरेशकुमार हरनावां ने कहा नशा सिर्फ पैसे का ही नहीं सेहत, इज्जत और परिवार को तबाह कर देता है। इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार, मुख्य अतिथि डॉ. नेमीचंद जैन, रणजीत सिंह, विशिष्ट अतिथि निगम पार्षद रामचंद्र साहू एवं अशोक जीनगर ने नशे को विनाश का द्वार करार दिया। मुनिश्री के आह्वान पर सरस्वती बाल मंदिर, रा.उ. प्राथमिक विद्यालय, रा. मा. विद्यालय के विद्यार्थियों एवं सैकड़ों नागरिकों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। आभार व्यक्त अशोक श्रीमाल ने किया। संचालन रवि रांका ने किया।

● 30 सितंबर 2010 को ''अनुशासन दिवस'' पर राजकीय कन्या उ.मा. विद्यालय में बुद्धिजीवियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' ने कहा आज परिवार की टूटन, सामाजिक नियमों का अतिक्रमण और अपराध का ग्राफ तेजी से बढ़ता जा रहा है। वक्त रहते हालातों पर काबू पाना निहायत जरूरी है। इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार, मुख्य अतिथि तहसीलदार रामबाबू वर्मा, एस. एच.ओ. नरेन्द्र पारीक, विशिष्ट अतिथि अधिवक्ता तेजवीर सिंह चूड़ावत ने विचार रखे। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संचालन रामप्रसाद मेवाड़ा ने किया।

● 1 अक्टूबर 2010 को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर मुनि हरनावां ने कहा अणुव्रत जाति, वर्ग, लिंग के घेरों को तोड़कर समाज और देश के चारित्रिक मूल्यों के उत्थान का महा अभियान है। देश की आजादी के साथ ही आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन कर इसकी गूंज गरीब की झोंपड़ी से राष्ट्रपति भवन तक पहुंचायी।

इस अवसर पर मुनि संबोधकुमार, राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा, मुख्य अतिथि डॉ. महेन्द्र कर्णावट, मनोहरलाल बाफना, हगामी लाल मेवाड़ा ने अपने विचार रखे। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। संचालन मुनि संबोधकुमार ने किया।

● 2 अक्टूबर 2010 को अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का समापन ''अहिंसा दिवस'' की आयोजना के साथ हुआ। मुनि सुरेशकुमार 'हरनावां' ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा आज समाज में हिंसा, आतंक और बर्बरता का कहर बढ़ता जा रहा है। वक्त की नजाकत है आदमी इस गलतफहमी से बाहर आये। मुनि संबोधकुमार ने कहा हर दिल में हमदर्दी का ज्वार उमड़े, तभी बारूद के ढेर पर खड़ी दुनिया अमन और शांति का एहसास कर पाएगी। आज समूचा देश दहशत से भरा हुआ है। ऐसे में अहिंसा का प्रशिक्षण निहायत जरूरी है।

मुख्य अतिथि मेवाड़ कान्फ्रेंस अध्यक्ष व न्यायविद् डॉ. बसंतीलाल बाबेल ने कहा किसी को मारना ही हिंसा नहीं है, बल्कि अपने दिल और दिमाग में किसी के प्रति बुरे विचार लाना भी हिंसा है। जहां ईमानदारी समाप्त होती है वहीं से हिंसा शुरू होती है।

इस अवसर पर डॉ. हीरालाल श्रीमाली, धर्मचंद जैन अंजाना, गणेशमल कच्छारा, सोहनलाल कांठेड़, लादूलाल कावड़िया,

अहिंसा सत्य का मार्ग एवं संयम का दर्पण है

अशोक श्रीमाली ने अपने विचार व्यक्त किये। अमृत विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अमृत भारती विद्यालय के प्रधानाचार्य ओमप्रकाश झंवर ने स्वागत किया। आभार ज्ञापन कल्याणमल गोखरू ने किया।

■ पुर

अणुव्रत समिति पुर भीलवाड़ा एवं सभा के तत्वावधान में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह साध्वी लक्ष्मीकुमारी के सान्निध्य में जागरूकतापूर्वक मनाया गया।

● 26 सितंबर 2010 को सभा भवन में ''पर्यावरण दिवस'' मनाया गया। बालक बालिकाओं ने पर्यावरण पर आधारित लघु नाटिका प्रस्तुत की। नरेन्द्र कोठारी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा असंयमित जीवन पारिवारिक पर्यावरण के लिए खतरा है। साध्वी सज्जनश्री ने कहा वृक्षों को काटना, पानी-बिजली का अपव्यय समस्या बन रहा है। इस अवसर पर मुख्य अतिथि लादूलाल टेलर, भगवती लाल बोरदिया, शिक्षिका राजतिलक, देवीलाल बेरवा ने विचार रखे। उम्मेदमल सिंघवी ने स्वागत व नारायण बंधु बैरवा ने संयोजन किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा अणुव्रत मानवता का धर्म है, यह जन-जन के नैतिक उत्थान का मार्ग है। साध्वी सज्जनश्री ने अणुव्रती बनने की प्रेरणा दी। साध्वी नियतीप्रभा ने अणुव्रत है सोया संसार जगाने के लिए गीत का संगान किया। मुख्य अतिथि सम्पत नाहर, भगवतीलाल उम्मेदमल, देवीलाल बैरवा, कन्हैयालाल, सोहनलाल सेन, मोहनलाल डांगी, शांतिलाल कर्णावट ने विचार रखे। संयोजन बोरदिया ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' का आयोजन श्रीमती उगम बाई उ.प्रा. विद्यालय में रखा गया। साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा विद्यार्थियों को मूल्यपरक शिक्षा का ज्ञान देना जरूरी है। जीवन विज्ञान आंतरिक परिवर्तन की शिक्षा है। साध्वी नियतिप्रभा ने महाप्राण ध्वनि के प्रयोग कराये। मुख्य वक्ता सुवालाल सेन, नंदलाल गुर्जर, भगवतीलाल बोरदिया थे। स्वागत जीवन सिंह बोलिया ने किया। उम्मेदमल सिंघवी ने आभार व देवीलाल बैरवा ने संयोजन किया। इस अवसर पर विद्यालय के 400 बच्चों ने व्यसनमुक्ति के संकल्प लिये एवं 15 शिक्षकों ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे।

● ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' मुख्य अतिथि मो. रमजान अली सोरगर, रोशन, लादूलाल टेलर, किशनलाल छीपा, योगेश सोनी की प्रमुख उपस्थिति में मनाया गया। सभी महानुभावों ने अणुव्रत को मानवता का पैगाम बताया। इस अवसर पर साध्वी लक्ष्मीकुमारी, साध्वी सज्जनश्री ने विचार रखे। भगवतीलाल बोरदिया ने स्वागत किया। उम्मेदमल, शांतिलाल सिंघवी, ज्ञानचंद कोठारी ने अतिथियों को साहित्य भेंट किया। बैरवा बंधुओं ने भी विचार रखे।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा नशा मनुष्य के जीवन में जहर घोल देता है। हजारों महिलाएं नशे के आतंक से परेशान हैं। साध्वी सज्जनश्री ने कहा कि अणुव्रतों के संदेश को जीवन में उतार कर व्यसनमुक्त बनें। बालिकाओं ने नशामुक्ति पर नाटिका की प्रस्तुति दी। महिला मंडल व कन्या मंडल ने विशेष रूप से भाग लिया। गणेशलाल चोरड़िया, शांतिलाल कर्णावट, शांतिलाल सिंघवी, देवीलाल बैरवा, मोहनलाल डांगी, आजाद कोठारी की प्रमुख उपस्थिति रही। संयोजन अनिल बोरदिया ने किया।

● ''अनुशासन दिवस'' पर साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा अणुव्रती स्वयं अनुशासन का पालन करें। साध्वी सज्जनश्री ने कहा कि अनुशासन एक दीपक है। आज्ञा में चलना ही अनुशासन है। मुख्य अतिथि सम्पत चोरड़िया, इन्द्रमल बोरदिया, उम्मेदमल सिंघवी, नरेन्द्र कोठारी, देवलीाल बैरवा, आजाद कोठारी, शिक्षिका राजतिलक ने विचार रखे। भगवतीलाल बोरदिया ने स्वागत एवं नारायण बंधु बैरवा ने संयोजन किया।

● ''अहिंसा दिवस'' का आयोजन रा.बा.उ.मा.वि. के प्रांगण में 2 अक्टूबर 2010 को साध्वी लक्ष्मीकुमारी के सान्निध्य में एवं प्राचार्य मनोहर शर्मा की

अनुशासन में चलने से ही स्थायी तरक्की संभव

अध्यक्षता में मनाया गया। भगवतीलाल बोरदिया, कन्हैयालाल डांगी, मोहनलाल डांगी, इन्द्रमल बोरदिया की प्रमुख उपस्थिति रही। शिक्षिका मीरा ने स्वागत किया। बोरदिया एवं बैरवा बंधुओं ने महान विभूतियों की तस्वीर पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलित किया। साध्वी लक्ष्मीकुमारी ने कहा अहिंसा सत्य का मार्ग एवं संयम का दर्पण है। साध्वी सज्जनश्री ने कहा अणुव्रतों के संकल्पों से अहिंसा विश्वव्यापी बन सकती है। इस अवसर पर 500 विद्यार्थियों ने अहिंसा संकल्प एवं भ्रूणहत्या नहीं करने के संकल्प ग्रहण किये। विद्यालय की 12 शिक्षिकाओं ने अणुव्रत संकल्प पत्र भरे। विद्यालय की छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संयोजन बैरवा बंधुओं ने किया।

■ राजसमंद

● 26 सितंबर 2010 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' भिक्षु बोधि स्थल राजसमंद में साध्वी कंचनकुमारी के सान्निध्य में मनाया गया। अध्यक्षता करते हुए भिक्षु बोधि स्थल के अध्यक्ष गणपतलाल धर्मावत ने सभी को एक-एक पेड़ लगाने की प्रेरणा दी। विशिष्ट अतिथि जीतमल कच्छारा थे। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष ललित बड़ोला ने स्वागत किया। साध्वी कंचनकुमारी, साध्वी सरलप्रभा, साध्वी प्रज्ञाश्री एवं मदनलाल धोका ने पर्यावरण के प्रति जागरूक रहने की प्रेरणा दी। प्रारंभ महिला मंडल द्वारा मंगलाचरण से हुआ। आभार व्यक्त लाड मेहता ने किया।

● 27 सितंबर 2010 को ''जीवन विज्ञान दिवस'' राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय राजनगर में साध्वी कंचनकुमारी के सान्निध्य में मनाया गया। छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वीश्री ने कहा जीवन विज्ञान सही मायने में जीवन जीने की कला सिखाता है। साध्वी प्रज्ञाश्री ने जीवन विज्ञान का महत्त्व समझाया। मदनलाल धोका ने अपने विचार रखे। आभार व्यक्त लाड मेहता ने किया।

● 2 अक्टूबर 2010 को ''अहिंसा दिवस'' भिक्षु बोधि स्थल में साध्वी कंचनकुमारी के सान्निध्य में मनाया गया। शुभारंभ साध्वी प्रज्ञाश्री एवं सरलप्रभा द्वारा मंगलाचरण से हुआ। अध्यक्षता साधुशरण सिंह 'सुमन' ने की। विशिष्ट अतिथि फतेहलाल अनोखा एवं दुर्गाशंकर मधु थे। साध्वी कंचनकुमारी ने कहा अहिंसा हमारे जीवन का पर्याय बने। इस अवसर पर साधुशरण सिंह 'सुमन', साध्वी प्रज्ञाश्री, साध्वी सरलप्रभा, फतेहलाल अनोखा, दुर्गाशंकर मधु ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम में अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. महेन्द्र कर्णावट उपस्थित थे। संचालन मदनलाल धोका ने एवं आभार ज्ञापन लाड मेहता ने किया।

● 26 सितंबर 2010 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने कहा पर्यावरण असंतुलन एवं प्रदूषण की समस्या का मूल है असंयम। इसका एक मात्र समाधान है संयम। जीवन में संयम को अपनाकर ही इस समस्या को दूर किया जा सकता है। कार्यक्रम का प्रारंभ 'संयम ही जीवन हो' अणुव्रत गीत से हुआ। इस अवसर पर सभाध्यक्ष डॉ. सुखलाल जैन ने पर्यावरण शुद्धि पर विचार रखे। कार्यक्रम में धर्मेश डांगी, रतनलाल बापना, बच्छराज खटेड़, कन्हैयालाल पगारिया, शांतिलाल तलेसरा, सम्पतलाल चोरड़िया, रत्नीदेवी खटेड़ उपस्थित थे।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने सभा भवन में संभागियों को संबोधित करते हुए कहा जीवन विज्ञान शिक्षा का नया आयाम है। यह आंतरिक परिवर्तन की प्रक्रिया है। जीवन विज्ञान जीने की कला सिखाता है। प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। मुख्य वक्ता डॉ. सुखलाल जैन ने विचार रखे। संयोजन अणुव्रत समिति के मंत्री मदनलाल धोका ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' अणुव्रत समिति एवं सभा कांकरोली के तत्वावधान में मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' के सान्निध्य में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा अणुव्रत सम्प्रदायमुक्त धर्म है। अणुव्रत जीवन की आचार संहिता है। इसे अपनाने से व्यक्ति सदाचारी बन सकता है। मुनि आनंदकुमार कालू ने कहा अणुव्रत व्यक्ति, समाज व राष्ट्र सुधार की प्रक्रिया है। कार्यक्रम का प्रारंभ मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' द्वारा बदले युग की धारा गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत समिति राजसमंद के अध्यक्ष ललित बड़ाला, मंत्री मदनलाल धोका, तुलसी साधना शिखर के अध्यक्ष भंवरलाल वागरेचा, कमला बाई पगारिया ने विचार रखे। कार्यक्रम में डॉ. सुखलाल जैन, बच्छराज खटेड़, रत्नी देवी खटेड़, महेन्द्र कोठारी, रतन बापना, मधु सायरा उपस्थित थे।

● ''नशामुक्ति दिवस'' का आयोजन स्थानीय सभा भवन में हुआ। मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने कहा नशा नाश का द्वार है। अणुव्रतों का पालन कर नशे से सहज ही बचा जा सकता है। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने कहा दृढ़ संकल्प बल के द्वारा नशे का त्याग करें एवं जीवन को सुखमय बनाएं। प्रारंभ आत्मसाक्षात्कार गीत से हुआ। इस अवसर पर दिल्ली से समागत विजय वर्धन डागा, रमेश कांडपाल, मदनलाल धोका ने विचार रखे। डॉ. सुखलाल जैन, भक्तलाल टुकलिया ने अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया। मदनलाल धोका एवं भंवरलाल टुकलिया ने रोचक कविता की प्रस्तुति दी।

● ''अनुशासन दिवस'' कांकरोली नया बाजार सभा भवन में मनाया गया। मुनि जतनकुमार ने कहा अनुशासन एवं मर्यादा के बिना कोई भी संगठन चिरंजीवी नहीं बन सकता। आज राष्ट्र को अनुशासन एवं मर्यादा की महत्ती आवश्यकता है। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने कहा कि विकास का मूल मंत्र है अनुशासन। मुनिश्री ने आत्मानुशासन की अनुप्रेक्षा के प्रयोग भी करवाए। चन्द्रप्रकाश चोरड़िया, डॉ. सुखलाल जैन ने विचार रखे। संचालन मुनि आनंद कुमार कालू ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे संकल्पों को स्वीकार कर जीवन को शुद्ध बनाया जा सकता है। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने

अणुव्रत दिशा, दशा व दृष्टि बदलने का उपक्रम

कहा जब तक अणुव्रत जीवन का व्रत नहीं होगा तब तक समाज में परिवर्तन की बात घटित नहीं होगी। मुख्य वक्ता मदनलाल धोका एवं लादूलाल मेहता ने भी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का संयोजन मुनि आनंदकुमार ने किया।

● ''अहिंसा दिवस'' पर मुनि जतनकुमार 'लाडनूं' ने कहा वर्तमान में महात्मा गांधी के विचारों को समाज में फैलाने की बहुत जरूरत है, तभी समाज में शांति का माहौल बन सकता है। मुनि आनंदकुमार 'कालू' ने कहा वर्तमान की जटिल समस्याओं से बचने के लिए महात्मा गांधी द्वारा किये गये अहिंसा के प्रयोगों का अनुकरण जरूरी है। कन्या मंडल की बहनों ने गीत का संगान किया। वकील सुरेन्द्र मेहता, धर्मेश डांगी, चन्द्रप्रकाश चोरड़िया ने विचार रखे। रतनलाल बापना, कन्हैयालाल पगारिया, हरकलाल बापना, मदन मोहन सोनी, महेन्द्र पगारिया, शांतिलाल तलेसरा, मिश्रीलाल बोहरा, रोहन लाल सोनी, कमला बाई, प्यारी बाई, मधु बाई, मंजू पगारिया, मंजू टुकलिया, रमा देवी चोरड़िया उपस्थित थे।

■ बिनोल

स ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर रा.उ. माध्यमिक विद्यालय बिनोल में मुनि तत्वरूचि 'तरुण' ने कहा अणुव्रत मानवता की न्यूनतम आचार संहिता है जिसे स्वीकार कर मानव सच्चा मानव बन सकता है। अणुव्रत भ्रष्टाचार उन्मूलन का अमोघ उपाय है। यह अनैतिकता से उत्पन्न सारी समस्याओं का सटीक समाधान है। मुनिश्री की प्रेरणा से 300 विद्यार्थियों ने नशामुक्ति के संकल्प लिये। साथ ही उन्होंने परीक्षा में नकल नहीं करेंगे, झूठ नहीं बोलेंगे, चोरी नहीं करेंगे, किसी को गाली नहीं देंगे, अश्लील चलचित्र नहीं देखेंगे की भी बात कही। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापक मोहनलाल, भंवरलाल पालीवाल, चंदू कोली, सुरेश कलाल, बादरमल भंडारी, देवीलाल पोखरना, जसराज सोनी, रमेश कुमार चिंडालिया, लक्ष्मीदेवी भंडारी, पिस्ता देवी चोरड़िया, मनोहर लाल शर्मा, योगेश श्रीमाली उपस्थित थे।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर मुनि तत्वरुचि 'तरुण' ने कहा नशा नरक का द्वार है। नशा करने वाले स्वयं का जीवन तो बर्बाद करते ही हैं साथ ही घर-परिवार को भी पतन के द्वार पर पहुंचा देते हैं। अतः इससे बचना ही हितकर है। इस अवसर पर मुनिश्री ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग भी करवाए।

● 1 अक्टूबर 2010 को ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा अणुव्रत धर्म का आधार और सब धर्मों का सार है। यह असांप्रदायिक विशुद्ध मानव धर्म है। साम्प्रदायिक सौहार्द समय की सख्त जरूरत है। मानवीय एकता में हमारा विश्वास हो। ईमानदारी और प्रामाणिकता धर्म की बुनियाद हो। इस अवसर पर अन्य धर्म के वक्ताओं ने भी साम्प्रदायिक सौहार्द को फलीभूत बनाने की बात कही।

● 2 अक्टूबर 2010 को सभा भवन में आयोजित ''अहिंसा दिवस'' पर मुनिश्री ने कहा अहिंसा जीवन की संजीवनी और आत्मा का अमृत है। विश्व शांति के लिए अहिंसक चेतना का विकास जरूरी है। महात्मा गांधी कोई व्यक्ति नहीं बल्कि एक विचारधारा और समग्र जीवन दर्शन है। महावीर की अहिंसा एवं महात्मा गांधी के विचारों को अपनाकर ही विश्वशांति संभव है।

■ राजलदेसर

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर साध्वी ज्योतिप्रभा ने कहा बाह्य वातावरण से ज्यादा आज इंसान का भीतरी वातावरण दूषित है। अणुव्रत के नियमों, अपरिग्रह के सिद्धांत एवं संयममय जीवन के द्वारा ही पर्यावरण को दूषित होने से बचाया जा सकता है। साध्वी धर्मप्रभा ने कहा अणुव्रत नैतिक चेतना का एक सशक्त अभियान है जो व्यक्ति, समाज और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं का निराकरण करने में सक्षम है। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के मंत्री शिक्षाविद् चंपालाल पाण्डे, प्रियंका चिंडालिया, पन्नालाल दूगड़, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष गोविन्द राम पुरोहित, ओमप्रकाश सोनी, नोरतन मल डिडवानिया, लक्ष्मी बेगवानी ने पर्यावरण शुद्धि पर विचार रखे। राजकुमार बैद एवं चुन्नीलाल घोषल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संचालन साध्वी मार्दवश्री ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर साध्वी धर्मप्रभा ने रा.उ.मा. बालिका विद्यालय में समारोह को संबोधित करते हुए कहा जीवन विज्ञान शिक्षा सफल एवं आनन्दपूर्ण जीवन जीने का प्रशिक्षण है। व्यक्ति का जीवन यदि संयममय, सादगीमय एवं अनुशासन मय हो तो वह सुखी और शांतिमय जीवन जी सकता है। साध्वी मार्दवश्री ने बच्चों को विद्यार्थी शब्द की महत्ता बतायी। संस्कृत की व्याख्याता अंजू खेड़िवाल ने अनुशासन का महत्त्व बताया। प्रारंभ अणुव्रत गीत से हुआ। इस अवसर पर शिक्षिका सरोज चौहान, सोहनलाल बैद, नौरतनमल ने विचार रखे। संचालन अशोक बैद ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थान के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को संबोधित करते हुए साध्वी संयमलता ने कहा अणुव्रत की आचार संहिता असांप्रदायिक है। इससे दिशा, दशा व दृष्टि बदल सकती है। इस अवसर पर साध्वी मार्दवश्री, चंपालाल पाण्डे ने विचार रखे। बच्चों ने सामूहिक रूप से अणुव्रत गीत का संगान किया। अहिंसा प्रशिक्षक शैलेश कुमार ने योग-आसन के प्रयोग करवाए। प्रध्यानाध्यापक श्रवणराम चौधरी ने स्वागत किया। धन्यवाद ज्ञापन समिति के अध्यक्ष गोविंदराम पुरोहित ने किया।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर साध्वी ज्योतिप्रभा ने कहा यदि मनुष्य विचारों पर नियंत्रण करना, उनमें सामंजस्य करना सीख जाए और मनुष्य में दया, करुणा, प्रेम, क्षमा, भाईचारे, आपसी सहयोग के भाव पैदा हो जाएं तो मेरे-तुम्हारे का भेद समाप्त हो जाएगा और मानव धर्म की स्थापना हो जाएगी। प्रजापति ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय रतनगढ़ केन्द्र की संचालिका बहन सुप्रभा ने कहा यदि मनुष्य में सात

संवेदनाओं द्वारा ही संभव है आंतरिक बदलाव

मौलिक गुण ज्ञान, शांति, पवित्रता, प्रेम, सुख, आनंद, क्षमा का विकास हो जाए तो सदा-सदा के लिए इंसानियत कायम रह सकेगी। इस अवसर पर मुस्लिम धर्म के प्रतिनिधि मो. शरीफ छीपा, गायत्री परिवार के प्रतिनिधि ओमप्रकाश इंदोरिया ने भी मानवीय एकता की बात कही। साध्वीवृंद ने सामूहिक गीत का संगान किया। धन्यवाद ज्ञापन हुणतमल नाहर ने किया। संचालन अशोक बैद ने किया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर साध्वी ज्योतिप्रभा ने कहा नशे के कारण परिवारों में विषम परिस्थितियां बढ़ रही हैं। नशा आदमी की मानसिक, शारीरिक एवं आर्थिक दशा को बिगाड़ देता है। साध्वी धर्मप्रभा ने कहा नशे की आदत को बदलने के लिए अभ्यास की जरूरत होती है और अणुव्रत के नियम एवं प्रेक्षाध्यान के प्रयोग इस दिशा में सार्थक हैं। साध्वी मार्दवश्री, साध्वी संयमलता ने भी अपने विचार रखे। कन्यामंडल की बालिकाओं ने गीत प्रस्तुत किया।

● ''अनुशासन दिवस'' पर साध्वी धर्मप्रभा ने कहा आत्मानुशासन आने से व्यक्ति स्वयं अनुशासित हो जाता है। अनुशासन व्यक्तित्व विकास का आधार है। साध्वी मार्दवश्री ने कहा समाज में उच्छृंखलता की वृत्ति पनप रही है इसे नियंत्रित करने के लिए आत्मानुशासन की प्रेरणा बहुत जरूरी है। प्रारंभ कन्या मंडल द्वारा अनुशासन गीत के संगान से हुआ। मांगीलाल विनायकिया, जीवनमल बैद ने विचार रखे।

● ''अहिंसा दिवस'' साध्वी धर्मप्रभा ने कहा प्राणी मात्र को अभयदान, स्वयं भयमुक्त रहना अहिंसा का प्रयोग है। साध्वी मार्दवश्री ने कहा अहिंसा सिर्फ नारा मात्र नहीं बल्कि हमारी जीवन शैली है। शुभारंभ अहिंसा गीत से हुआ। चंपालाल पाण्डे, ज्ञानाराम प्रजापत ने विचार रखे। कार्यक्रम का दूसरा चरण राजल पब्लिक स्कूल में शैलेश कुमार पाण्डे के नेतृत्व में आयाजित हुआ। शिक्षक दीनदयाल पाण्डे ने बच्चों को रोचक जानकारियां दी।

■ भीलवाड़ा

● 26 सितंबर 2010 को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' साध्वी जयप्रज्ञा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा सम्प्रदाय बुरा नहीं लेकिन साम्प्रदायिकता बुरी है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष पुखराज दक ने स्वागत करते हुए सांप्रदायिक सौहार्द की महती आवश्यकता बताई। इस अवसर पर संत मायाराम हरिशेवा धाम, जामा मस्जिद इमाम हफीजुर्रहमान, ज्ञानी जसवंत सिंह, फादर एम्मनुएल मेथोडिस्ट, मौलाना ईमरान रजा, साध्वी शशिरेखा, साध्वी कान्तप्रभा, भंवरसिंह चौधरी ने अपने विचार रखे। अध्यक्षता भैरूलाल बापना ने की। मुख्य अतिथि सम्पत सामसुखा एवं विशिष्ट अतिथि मीठालाल गन्ना थे। संयोजन समिति के मंत्री अशोक सिंघवी ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' साध्वी जयप्रज्ञा के सान्निध्य में मनाया गया। इसमें 150 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर महेन्द्रकुमार कुमावत, विजया सुराणा, नवीन वागरेचा, अर्चना नैनावटी, साध्वी कान्तप्रभा, प्रभाकर सिंह नैनावटी, महेश्वरी दौलतराम ने विचार रखे। पुखराज दक ने अतिथियों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि सुशीला साल्वी जिला प्रमुख भीलवाड़ा ने बच्चों को संबोधित किया। संयोजन अशोक सिंघवी ने किया। आभार प्रकट राजेश बोरदिया ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' उ.मा.वि. में साध्वी जयप्रभा, साध्वी कान्तप्रभा एवं साध्वी शशिरेखा के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर साध्वी कान्तप्रभा, साध्वी शशिरेखा, पुखराज दक ने अपने विचार रखे। 350 विद्यार्थियों को अणुव्रत के संकल्प पत्र भरने के लिए प्रेरित किया गया। मुख्य अतिथि शंकरलाल काबना थे। अध्यक्षता प्राचार्या पुष्पा मूंदड़ा ने की। सहकारी बैंक प्रबंधक लक्ष्मीलाल गांधी ने भी अपने विचार रखे। संचालन अशोक सिंघवी ने एवं आभार ज्ञापन प्रकाश कावड़िया ने किया।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर प्रज्ञा भारती महावीर कॉलोनी में वृक्षारोपण किया गया। साध्वी शशिरेखा ने गीतिका के माध्यम से पर्यावरण शुद्धि का महत्त्व बताया। इस अवसर पर साध्वी शीतलयशा, मुख्य अतिथि दिनेश शर्मा ने विचार रखे। अध्यक्षता करते हुए पर्यावरणविद् बाबूलाल जाजू ने सभी को 5 पेड़ लगाने के संकल्प की बात कही। पुखराज दक ने अतिथियों का स्वागत किया। राजस्थान प्रादेशिक अणुव्रत समिति के अध्यक्ष सम्पत शामसुखा, मनोहरलाल बापना एवं ज्ञानचंद कांठेड़ ने विचार रखे। संयोजन अशोक सिंघवी ने एवं आभार ज्ञापन नवीन वागरेचा ने किया।

● ''अहिंसा दिवस'' माणिक्यलाल वर्मा उच्च माध्यमिक विद्यालय महिला आश्रम में मनाया गया। अध्यक्षता प्राचार्य तेजसिंह नाहर ने की। साध्वी जयप्रभा, साध्वी शीतलयशा ने विचार रखे। साध्वी शशिरेखा व पुखराज दक ने विद्यार्थी अणुव्रतों की जानकारी दी। 1800 विद्यार्थियों को संकल्प पत्र भरने की प्रेरणा दी गयी। लक्ष्मीलाल गांधी ने भी विचार रखे। संयोजन अशोक सिंघवी ने किया।

● ''अनुशासन दिवस'' अणुव्रत साधना स्कूल शास्त्रीनगर में मनाया गया। मुकेश रांका ने अणुव्रत गीत का संगान किया। मुख्य अतिथि प्रो. बी.एल. पोरवाल, साध्वी शीतलयशा, साध्वी मंजुलाश्री ने अपने विचार रखे। पुखराज दक ने विद्यार्थी अणुव्रत की जानकारी देते हुए छात्र-छात्राओं को संकल्प करवाए। अध्यक्षता भैरूलाल बापना ने की। संचालन अशोक सिंघवी ने एवं आभार ज्ञापन प्रकाश कावड़िया ने किया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' केन्द्रीय कारागार में मनाया गया। मुख्य अतिथि जेल उपअधीक्षक का स्वागत किया। लक्ष्मीलाल गांधी, साध्वी कान्तप्रभा, साध्वी शीतलयशा ने कैदियों को हृदय परिवर्तन की प्रेरणा दी। पुखराज दक ने कहा कि कैदी भाई नशा मुक्त होकर अन्य अपराधों से बचें और अपने परिवार को एक अच्छा जीवन जीने का अवसर दें। सुनील दक ने आभार प्रकट किया संचालन अशोक सिंघवी ने किया। दूसरा चरण सभा भवन में साध्वी जयप्रज्ञा के सान्निध्य में आयोजित हुआ। इसमें स्कूल के विद्यार्थियों ने भाग लिया।

पर्यावरण प्रकृति का वरदान है

■ उदयपुर

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर 26 सितंबर 2010 को नारायण सेवा संस्थान में अणुव्रत समिति उदयपुर के अध्यक्ष गणेश डागलिया के नेतृत्व में वृक्षारोपण किया गया। अतिरिक्त जिला कलेक्टर एम.एल. चौहान ने कहा पर्यावरण प्रकृति का वरदान है। पेड़-पौधों का अस्तित्व रहेगा तो हम भी बचे रहेंगे। डॉ. कैलाश मानव ने कहा अणव्रत समिति द्वारा उदयपुर में पर्यावरण शुद्ध करने के लिए वृक्षारोपण की जो पहल हुई है वह सराहनीय है। इससे पर्यावरण शुद्धि के साथ-साथ हमारे जीवन में भी सुधार आयेगा। इस अवसर पर अनेक गणमान्य वक्ताओं ने अपने विचार रखे। एच.एल. कुणावत ने पौधा लगाकर शुरुआत की। धन्यवाद ज्ञापन पर्यावरणविद् डॉ. शंकरलाल इंटोदिया ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' बालिका गेलड़ा उच्च माध्यमिक विद्यालय अमल का कांटा में मनाया गया। गणेश डागलिया ने अणुव्रत नियमों पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता डॉ. रंगलाल धाकड़, हेमलता चौहान, नलिनी जोशी, मुख्य अतिथि डॉ. शांतिलाल मेहता, साध्वी सुरेखा, साध्वी मधुलता ने अपने विचार रखे। धन्यवाद ज्ञापन सुरेश सियाल ने किया। शंकरलाल इंटोदिया, जमनालाल दशोरा, अरविंद चित्तौड़ा, सुनिल खोखावत, राधाकृष्ण व्यास, भवरलाल गौड़, योगेश गहलोत, कमल कुमावत उपस्थित थे।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' महिला मंडल बा.उ.मा. विद्यालय में मनाया गया। बालिकाओं ने प्रार्थना एवं साध्वी मधुलता ने मंगलाचरण किया। कार्यवाहक प्रधानाचार्य आजाद कोठारी ने स्वागत किया। गणेश डागलिया ने अणुव्रत नियमों की जानकारी दी। इस अवसर पर प्रमुख वक्ता रंगलाल धाकड़, साध्वी सुरेखा ने विचार रखे। संचालन डॉ. निर्मल कुणावत ने किया। अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। आभार एवं धन्यवाद जमनालाल दशोरा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में भवरलाल डागलिया, देवीलाल कच्छारा, सुरेश सियाल, अरविंद चित्तौड़ा, सुनिल खोखावत, भीमराज कोठारी, भवरलाल चौहान व ताराचंद जैन उपस्थित थे।

● ''अहिंसा दिवस'' जिला केन्द्रीय जेल में मुख्य अतिथि रजनी डांगी सभापति नगर परिषद उदयपुर एवं विशिष्ट अतिथि वीरेन्द्र डांगी प्रमुख उद्योगपति तथा तुलसी साधना शिखर के अध्यक्ष भंवरलाल डागलिया की उपस्थिति में मनाया गया। साध्वी सुलेखा ने मंगलाचरण किया। गणेश डागलिया ने कैदी भाइयों को श्रेष्ठ जीवन जीने का संकल्प लेने की बात कही। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि वीरेन्द्र डांगी, डॉ. निर्मल कुणावत, साध्वी सुमनश्री, रजनी डांगी ने विचार रखे। साहित्य भेंट विनोद माण्डोत ने किया। जेल अधीक्षक एस.एस. शेखावत ने धन्यवाद प्रकट किया। कार्यक्रम में देवीलाल कच्छारा, रंगलाल धाकड़, भंवरलाल पोरवाल, भंवरलाल गौड़, जमनालाल दशोरा, राधाकिशन व्यास, रूपलाल डागलिया, जवेरचंद डागलिया, रामावतार, भैरूसिंह, कमल कुमावत उपस्थित थे।

● 30 सितंबर को ''अनुशासन दिवस'' पर अणुव्रत समिति उदयपुर एवं नारायण सेवा संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में अयोध्या विवादित जमीन पर होने वाले फैसले के उपरांत शांति बहाली की प्रार्थना की गयी। गणेश डागलिया ने कहा कि अणुव्रतों की पालना करने वाला कभी असंयमित जीवन नहीं जी सकता। इस अवसर पर मुख्य अतिथि सांसद रघुवीर मीणा, विशिष्ट अतिथि पुलिस अधीक्षक राजेन्द्र प्रसाद गोयल, साध्वी सुमनश्री ने अणुव्रतों के नियमों की पालना कर जीवन में संयम अपनाने की बात कही। प्रशांत अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे। संचालन डॉ. निर्मल कुमावत ने किया।

● 1 अक्टूबर को ''नशामुक्ति दिवस'' गणपति वाटिका में साध्वी सुमनश्री के सान्निध्य में मनाया गया। 14 व्यक्तियों ने हमेशा के लिए एवं सैकड़ों लोगों ने एक दिन के लिए नशा छोड़ने का संकल्प लिया। इस अवसर पर राजेन्द्र सेन, उदयपुर के सांसद रघुवीर सिंह मीणा, साध्वी सुमनश्री, गणेश डागलिया ने आमजन को नशे की लत से दूर रहने की प्रेरणा दी। राजेन्द्र प्रसाद गोयल, प्रशांत अग्रवाल ने भी अपने विचार रखे। जमनालाल दशोरा, अरविंद चित्तौड़ा, सुनील खोखावत, डॉ. शंकरलाल इंटोदिया, भंवरलाल डागलिया, देवेन्द्र कच्छारा उपस्थित थे। संयोजन डॉ. निर्मल कुमावत ने किया।

● 2 अक्टूबर को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' सभा भवन नाईयों की तलाई में विभिन्न धर्मगुरुओं की उपस्थिति में मनाया गया। मंगलाचरण साध्वी सुरेखा ने किया। इस अवसर पर शांतिलाल सिंघवी, प्रशांत अग्रवाल, सिख समुदाय के मनोहर सिंह सच्चर, मुस्लिम समुदाय के धर्मगुरु फिरोज बशीर मौलवी ने सारगर्भित विचार रखे। गणेश डागलिया ने सभी धर्मगुरुओं, अतिथियों एवं संभागियों का स्वागत करते हुए साम्प्रदायिक सौहार्द की बात कही। बी.पी. भटनागर महंत नरपतराम, मुख्य अतिथि रोहित आर., साध्वी सुमनश्री अपने विचार रखे। संचालन राजकुमार फत्तावत ने किया। आभार प्रकट ओमप्रकाश तोषनीवाल एवं

प्रेम के द्वारा किसी का भी दिल जीता जा सकता है

अरूण कोठारी ने किया। दिनेश तरवाड़ी, प्यारे भाई, राजेन्द्र सेन, आर.के. जैन, सुबोध कोठारी, सुनील खोखावत, राकेश चित्तौड़ा, जमनालाल दशोरा, राधाकिशन व्यास, भवर भारती, अरविंद चित्तौड़ उपस्थित थे।

■ पचपदरा

● ''नशामुक्ति दिवस'' का आयोजन महावीर विद्यालय में हुआ। मुनि प्रशांतकुमार ने कहा नशे की समस्या से पूरा विश्व आक्रांत है। अणुव्रत के माध्यम से देशभर में हजारों लोगों को नशामुक्ति के संकल्प दिलवाए जा चुके हैं। आज जरूरत है कि समाज के सभी वर्ग एकजुट होकर इस बुराई को मिटाने का प्रयास करें, तभी इस बुराई को जड़ से उखाड़ कर फेंका जा सकता है। मुनि कुमुदकुमार ने कहा प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से नशे की आदत को छोड़ने का प्रयास करें। मुनिश्री ने उपस्थित विद्यार्थियों को जीवन भर नशा नहीं करने की प्रतिज्ञा करवाई।

अणुव्रत समिति पचपदरा द्वारा विद्यालय की लायब्रेरी हेतु अणुव्रत साहित्य भेंट किया गया। प्राचार्या सरस्वती श्रीमाल ने मुनिश्री का स्वागत किया। प्राध्यापक चंदनराम एवं मेवाराम ने भी विचार रखे। अणुव्रत समिति के मंत्री दिलीप भदाणी ने मुनिश्री का परिचय दिया। कार्यक्रम में भंवरलाल चोपड़ा, कांतिलाल छाजेड़, इंद्रचंद सेठिया, मोहनलाल मोदी सहित अनेक लोग उपस्थित थे।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द'' दिवस पर समिति द्वारा 'अणुव्रत रैली' निकाली गयी। रैली का प्रारंभ आदर्श विद्यामंदिर और महावीर विद्या मंदिर से एक साथ हुआ। रैली के माध्यम से मिलजुल कर प्रेम से रहने का संदेश दिया गया। विद्यार्थी रैली में अणुव्रत के घोष 'निज पर शासन फिर अनुशासन', 'संयम ही जीवन है', 'इंसान पहले इंसान फिर हिन्दू या मुसलमान' इत्यादि नारों से लिखी पटियां लेकर चल रहे थे। यह रैली शहर के मुख्य मार्गों से होती हुई सभा भवन में मुनि कुमुदकुमार के सान्निध्य में सभा के रूप में परिवर्तित हो गयी। मुनिश्री ने सभा को संबोधित करते हुए कहा हमें अपने देश में सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता को बनाए रखना होगा। तभी साम्प्रदायिक सौहार्द की बात फलीभूत होगी। इस अवसर पर बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

● ''अहिंसा दिवस'' मुनि प्रशांतकुमार के सान्निध्य में नवोदय विद्यालय में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा अहिंसा में बहुत बड़ी शक्ति होती है। शस्त्र द्वारा किसी को खत्म किया जा सकता है किन्तु जीता नहीं जा सकता। लेकिन प्रेम के द्वारा किसी के भी दिल को जीता जा सकता है, दुश्मन को भी अपना बनाया जा सकता है। मुनि कुमुदकुमार ने कहा अपने स्वार्थ और क्षणिक मनोरंजन के लिए दूसरों का अहित करने से नहीं हिचकिचाता, वह सज्जन आदमी नहीं हो सकता। मुनिश्री ने सैकड़ों बच्चों से दीपावली पर पटाखे नहीं फोड़ने का संकल्प करवाया। अणुव्रत समिति के मंत्री दिलीप भदाणी एवं गुलाब खां ने विद्यालय को अणुव्रत साहित्य भेंट किया। नवोदय विद्यालय के प्राचार्य महबूब अली ने अपने विचार रखे। अणुव्रत समिति के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक चोपड़ा, इन्द्रचंद सेठिया, प्रेम कोठारी उपस्थित थे।

■ लाडनूं

अणुव्रत समिति लाडनूं के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम शहर के विभिन्न स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर उल्लासपूर्वक मनाया गया।

● 27 सितंबर को ''जीवन विज्ञान दिवस'' भूतोड़िया गर्ल्स स्कूल में मनाया गया। समिति के मंत्री डॉ. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा आज का विद्यार्थी भावावेश में आकर कुछ गलत कर बैठता है अतः इससे बचने के लिए भावात्मक विकास की अपेक्षा है। मानसिक दृढ़ता के विकास से विद्यार्थी में निर्णय लेने की क्षमता का विकास होता है। यह सब जीवन विज्ञान की शिक्षा द्वारा संभव है। अतः जीवन विज्ञान को संतुलित शिक्षा के रूप में माना जाता है। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा जीवन विज्ञान की शिक्षा से विद्यार्थियों का सम्पूर्ण व्यक्तित्व विकास संभव है। इस अवसर पर विजयसिंह बरमेचा, विद्यालय की प्राचार्या अलका ने जीवन विज्ञान शिक्षा की चर्चा की। कार्यक्रम में बच्चों को पुरस्कृत भी किया गया।

● 28 सितंबर को ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' झिनकू देवी से. स्कूल में मनाया गया। समिति के अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा अणुव्रत के मूल्य सभी जाति, वर्ग, सम्प्रदाय के लिए हैं। यह एक असाम्प्रदायिक मानव धर्म है। अणुव्रत आचार संहिता के 11 नियम किसी भी धर्म का व्यक्ति अपना सकता है। इस अवसर पर समिति के मंत्री डॉ. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, संरक्षक विजयसिंह बरमेचा, जसकरण लोहिया, विद्यालय की प्रधानाध्यापिका सरोज ने अपने विचार रखे। विद्यालय के सभी शिक्षक-शिक्षिकाएं उपस्थित थे।

● 29 सितंबर को ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' राजकीय माध्यमिक विद्यालय मंगलपुरा में मनाया गया। मुख्य अतिथि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के निदेशक डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा साम्प्रदायिक सौहार्द मानवीय एकता का प्रतीक है। अणुव्रत मानव को मानव बनाने की शिक्षा प्रदान करता है। पत्रकार वीरेन्द्र भाटी मंगल ने कहा संपूर्ण देश भर में अणुव्रत आंदोलन के माध्यम से मानवीय एकता के लिए कार्य किये जा रहे हैं। अणुव्रत इंसानियत के लिए संजीवनी है। संस्था अध्यक्ष ओमप्रकाश सोनी ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों को

अनुशासन में चलने से ही स्थायी तरक्की संभव

अपनाकर प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन को सुरभित बना सकता है। अणुव्रत जीने की सच्ची राह दिखाता है। विजय सिंह बरमेचा ने छात्र-छात्राओं को पुरस्कृत किया। शिक्षक अब्दुल हमीद ने विचार रखे। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाध्यापक रामेश्वरलाल शर्मा, बंशीधर सैनी उपस्थित थे।

● 30 सितंबर को ''नशामुक्ति दिवस'' का कार्यक्रम रा.प्रा.वि. नं. 3 में रखा गया। अध्यक्षता रा.उ.प्रा. वि. के प्रधानाध्याक ने की। जगदम्बा शर्मा ने सामूहिक अणुव्रत गीत का संगान किया। राजेश कुमार नाहटा अध्यापक ने नशे से होने वाली हानियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नशा नाश का द्वार है। गुटखे खाना और शराब पीना सेहत के लिए हानिकारक है। शाला प्राचार्य नंदलाल वर्मा ने कहा अणुव्रत अच्छे संस्कार देता है। अध्यक्ष रामजी ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की व्याख्या की।

● 2 अक्टूबर को ''अहिंसा दिवस'' समारोह के रूप में समापन दिवस लाड मनोहर बाल निकेतन उच्च माध्यमिक विद्यालय में साध्वी रामकुमारी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा अणुव्रत मानव जीवन की संजीवनी है। अणुव्रत के नियमों को अपनाकर व्यक्ति अपने जीवन को परिष्कृत कर सकता है। महात्मा गांधी के अहिंसात्मक चिंतन की मीमांसा करते हुए कहा कि उन्होंने अहिंसा के बल पर देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अहिंसा प्रत्येक व्यक्ति का मानवीय स्वभाव है। डॉ. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने कहा अहिंसा जीवन का सत्य है, जिसे अपनाकर व्यक्ति जीवन का विकास कर सकता है। कार्यक्रम में विजय सिंह बरमेचा, ओमप्रकाश सोनी, आलोक खटेड़, सुरेश मोदी ने विचार रखे। विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने अणुव्रत गीत का संगान किया। कार्यक्रम में लक्ष्मीपत बैंगानी, जगमोहन माथुर, जयचंदलाल सोनी उपस्थित थे। संयोजन वीरेन्द्र भाटी मंगल ने किया। आभार ज्ञापन प्राचार्या कंचनलता शर्मा ने किया।

■ फतेहपुर-शेखावटी

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र फतेहपुर शेखावटी के प्रशिक्षक सतीश शाण्डिल्य के नेतृत्व में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह शहर के विभिन्न क्षेत्रों में मनाया गया।

0 ''जीवन विज्ञान दिवस'' स्थानीय मारूति उच्च माध्यमिक शिक्षा निकेतन में मनाया गया। मुख्य अतिथि आयुर्वेद विभाग के पूर्व निदेशक बैद्य रामावतार शर्मा थे। अध्यक्षता शिक्षाविद् घीसाराम जांगिड़ ने की। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य मनोज शर्मा, मोहित शर्मा एवं अहिंसा प्रशिक्षक सतीश शांडिल्य ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम का समापन अणुव्रत गीत ''संयममय जीवन हो'' के संगान से हुआ।

● ''अनुशासन दिवस'' प्रिंस शिक्षण संस्थान में मनाया गया। मुख्य अतिथि उपखंड अधिकारी फतेह मोहम्मद खां ने कहा अनुशासन से मनुष्य में अच्छे संस्कारों का निर्माण होता है। इस अवसर पर आचार्य रामगोपाल सैनी, विशिष्ट अतिथि कालूराम तानन, छात्रा सरिता, मनोज महीच एवं डॉ. शंकरलाल ने अपने विचार रखे। सतीश शाण्डिल्य ने कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। संस्था निदेशक करण सिंह जाखड़ ने आभार व्यक्त किया।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' रिसावा ग्राम के रासी स्कूल में मनाया गया। मुख्य अतिथि यूथ क्लब के अध्यक्ष इस्लाम खां ने कहा साम्प्रदायिक सौहार्द बनाए रखने के लिए हर व्यक्ति को प्रयासरत होना चाहिए। सभी धर्मों के लोगों की एकजुटता से देश व समाज का विकास होगा। अध्यक्षता स्कूल के प्राचार्य शिशुपाल सिंह ने की। सतीश शाण्डिल्य ने कार्यक्रम की गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

● ''अहिंसा दिवस'' के आयोजन के साथ उद्‌बोधन सप्ताह का समापन हुआ। मुख्य अतिथि गोयनका महाविद्यालय की व्याख्याता रेखा जोशी ने कहा अहिंसा शाश्वत सत्य है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रधानाचार्य प्रमोद माहेश्वरी ने कहा महापुरुषों के बताए मार्ग पर चलकर ही जीवन शैली को बदला जा सकता है। सतीश शाण्डिल्य ने भी अपने विचार रखे। संचालन अध्यापिका सविता ने किसा।

■ सायरा/गोगुन्दा

अणुव्रत समिति सायरा एवं गोगुन्दा सभा के संयुक्त तत्वावधान में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों में उल्लासपूर्वक मनाया गया।

● 27 सितंबर को विद्या निकेतन विद्यालय में ''अनुशासन दिवस'' साध्वी सम्यक्‌प्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा अनुशासन जीवन का प्राणतत्व है। बच्चों को माता-पिता का कहना मानना, गुरुजनों का सम्मान करना चाहिए। मुख्य अतिथि सोहनलाल कोठारी थे। विशिष्ट वक्ता सुखबाल मंदिर उ.प्रा.वि. के प्रधानाध्यापक एवं सभा के मंत्री नेमीचंद सुराणा थे। साध्वी संकल्पप्रभा ने वाणी संयम की प्रेरणा दी। कार्यक्रम में विद्यालय के 522 बच्चों ने भाग लिया।

● 28 सितंबर को ''जीवन विज्ञान दिवस'' रा.मा. बालिका विद्यालय में साध्वी सम्यक्‌प्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जीवन विज्ञान सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास का पाठ्यक्रम है। कार्यक्रम में 232 बालिकाओं ने भाग लिया। संयोजन नेमीचंद सुराणा ने किया।

● 29 सितंबर को

अणुव्रत मानव जाति के विकास का पथ दर्शन है

''नशामुक्ति दिवस'' का कार्यक्रम आदर्श रा.उ.प्रा. विद्यालय में रखा गया। साध्वी सम्यक्प्रभा एवं संकल्पप्रभा ने विद्यार्थियों को व्यसन से दूर रहने की प्रेरणा देते हुए कहा कि मनुष्य जीवन दुर्लभ है अतः बुरी आदतें नहीं पालनी चाहिएं। नेमीचंद ने शराब से होने वाली हानियों की गीत के माध्यम से व्याख्या की। संस्थाप्रधान रामलाल मेघवाल, सोहनलाल कोठारी, चंदना मुखर्जी मौजूद थे। इस अवसर पर 150 विद्यार्थियों ने नशामुक्ति के संकल्प ग्रहण किये।

● 30 सितंबर ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' का आयोजन रा. उ.मा. विद्यालय में हुआ। साध्वी सम्यकप्रभा एवं मलयप्रभा ने विद्यार्थियों को अणुव्रत के वर्गीय नियमों से परिचित करवाया। प्राचार्य माधवलाल पालीवाल ने भी विद्यार्थियों को संबोधित किया। नेमीचंद सुराणा एवं संरक्षक सोहनलाल कोठारी ने विचार रखे। कार्यक्रम में 475 छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

● 1 अक्टूबर को साध्वी सम्यक्प्रभा के सान्निध्य में बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में ''सांप्रदायिक सौहार्द'' दिवस मनाया गया। साध्वीश्री ने कहा जीवन निर्माण के लिए सेवा, विनय, विवेक, अनुशासन इत्यादि गुणों का समावेश जरूरी है। साध्वी मलयप्रभा ने अणुव्रत के छोटे छोटे नियमों की व्याख्या की। इस अवसर पर सोहनलाल कोठारी, नेमीचंद सुराणा एवं मुखर्जी ने अपने विचार रखे।

● 2 अक्टूबर को ''अहिंसा दिवस'' मेवाड़ पब्लिक स्कूल में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह एवं विश्व अहिंसा दिवस का कार्यक्रम साध्वी सम्यकप्रभा के सान्निध्य में रखा गया। साध्वीश्री ने छात्रों को अच्छी बातें ग्रहण कर ज्ञान प्राप्त करते हुए सत्य एवं अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी। साध्वी मलयप्रभा ने शिक्षा के साथ-साथ जीवन में अच्छे संस्कारों को ग्रहण करने पर बल दिया। सोहनलाल कोठारी, चंदना मुखर्जी ने विचार रखे। कार्यक्रम के द्वितीय चरण में रा. उ.मा. विद्यालय सायरा में लालबहादुर शास्त्री एवं गांधी जयन्ती मनाई गयी। छात्रों को अणुव्रत के नियमों की जानकारी दी गयी। इस अवसर पर अध्यापकों ने भी अपने विचार रखे। संचालन राजेन्द्र कुमार गोरवाड़ा ने किया। उद्बोधन सप्ताह के सभी कार्यक्रमों में 'अणुव्रत सेवी' जसराज जैन का मार्गदर्शन रहा।

■ चित्तौड़गढ़

अणुव्रत समिति चित्तौड़गढ़ के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का उद्घाटन मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्रा ने किया। मुख्य अतिथि विधायक सुरेन्द्रसिंह जाड़ावत थे। पन्नाधाय कॉलोनी सभा भवन में आयोजित कार्यक्रम में मुनि विनयकुमार 'आलोक' ने कहा राष्ट्र की समस्याओं का समाधान अणुव्रत के माध्यम से किया जा सकता है। अणुव्रत से जीवन की दशा और दिशा बदल सकती है।

मुख्य अतिथि क्षेत्रीय विधायक सुरेन्द्र सिंह जाड़ावत ने कहा वर्तमान की ज्वलंत समस्याओं का निदान अणुव्रत ही है। अणुव्रत से ही समाज का कल्याण संभव है। मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्रा ने कहा अणुव्रत को अपनाकर हम जीवन में अनुशासन, शिष्टाचार ला सकते हैं। अणुव्रत एक ऐसी शक्ति है जो व्यक्तित्व निर्माण में पूर्णरूप से योगदान दे सकती है। मुनि गिरीशकुमार ने अणुव्रत गीत का संगान किया। अणुव्रत समिति के उपाध्यक्ष बी.एल. खाब्या ने स्वागत किया। विजयकुमार सिंघवी ने अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया। कार्यक्रम में मेवाड़ विश्वविद्यालय की छात्राओं ने भाग लिया। आभार ज्ञापन समिति के मंत्री पवन पटवारी ने एवं संयोजन कमल जैन ने किया।

0 ''जीवन विज्ञान दिवस'' राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सेंती में मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता नगरपालिका अध्यक्ष गीतादेवी ने की। इस अवसर पर मुनिश्री के अलावा कई वक्ताओं ने जीवन विज्ञान पर अपने विचार रखे।

● ''अनुशासन दिवस'' मेवाड़ गर्ल्स कॉलेज में मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा अणुव्रत आंदोलन चरित्र निर्माण का सशक्त माध्यम है। संचालन मेवाड़ गर्ल्स कॉलेज के निदेशक प्रो. एच.एन. गौड़ ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता मेवाड़ ऐजुकेशन सोसायटी के अध्यक्ष भंवरलाल गादिया ने की। मुख्य अतिथि मेवाड़ विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेश चन्द्रा थे। कार्यक्रम के सूत्रधार गोविंदलाल गादिया थे। मुनिश्री ने विद्यार्थी अणुव्रत आचार संहिता पर विस्तार से प्रकाश डाला। लगभग 600 छात्राओं ने भ्रूणहत्या एवं दहेज अनुबंधित विवाह न करने का एवं 50 प्राध्यापकों ने अणुव्रत आचार संहिता की पालना का संकल्प लिया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' सामायिक भवन मीरानगर में मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में मनाया गया। मुनिश्री ने कहा संयम को जितना धारण किया जाय उतना ही व्यक्तित्व में निखार आता है। संयम से आत्मा की पवित्रता बढ़ती है और उसके साथ-साथ समाज में भी सुंदर वातावरण बनता है। इस अवसर पर पर्यावरण चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में पुलिस उप अधीक्षक विक्रम सिंह, शिक्षा अधिकारी बजरंग राव, सह शिक्षा अधिकारी दशोरा तथा मेवाड़ गर्ल्स कॉलेज के निदेशक एच. एन. गौड़, वीरू जैन, अरविंद जैन, आशीष डांगी, छगन देवासी उपस्थित थे। विजयकुमार सिंघवी ने विचार रखे। संचालन एवं आभार ज्ञापन पवन पटवारी ने किया।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' पर मुनि विनयकुमार 'आलोक' के सान्निध्य में अणुव्रत समिति के तत्वावधान में सर्वधर्म सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसमें रामस्नेही संप्रदाय के संत रमताराम, हजारेश्वर मंदिर के चन्द्र भारती महाराज, गुंदी रोड़ मस्जिद के इमाम मो. इब्राहिम अशरफिया, सरदार सुरेन्द्र सिंह सोनी, फादर अब्राहिम जॉन ने भाग लिया। सभी धर्मगुरुओं ने समाज में भाईचारा एवं शांन्ति से रहने पर बल दिया।

नशा अंततः नाश का ही रास्ता है

■ हांसी

अहिंसा प्रशिक्षण केन्द्र हांसी के तत्वावधान में साध्वी विनयवती के सान्निध्य में अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह उल्लासपूर्वक मनाया गया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर सैनिक स्कूल में एक सेमिनार का आयोजन हुआ। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप जैन ने जीवन विज्ञान को व्यवस्थित जीवन जीने की कला बताया। अहिंसा प्रशिक्षक अवधेश कुमार ने जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाए। प्राचार्य प्रेम खुराना ने अपने विचार रखे।

● ''पर्यावरण दिवस'' सीनियर सेकेण्डरी स्कूल सोरखी में मनाया गया। प्रदीप जैन ने वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण एवं मानसिक प्रदूषण से बचने के उपाय बताये। प्रेक्षा प्रशिक्षक लाजपतराय जैन ने पर्यावरण के प्रति सतर्क रहने की बात कही। अवधेश कुमार ने पर्यावरण गीत के माध्यम से हरे-भरे वृक्ष न काटने का आह्वान किया। विद्यार्थी अणुव्रत नियमों का संकल्प दिलाया गया। संयोजन प्राध्यापक सुरेश ठक्कर ने किया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' हाई स्कूल वाडली में मनाया गया। अहिंसा प्रशिक्षक सह-पर्यवेक्षक अवधेश कुमार द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। लाजपतराय जैन ने नशामुक्ति के लिए अनुप्रेक्षा के प्रयोग करवाए। प्रदीप जैन ने नशामुक्ति के संकल्प करवाए। संयोजन राजेश जैन ने किया। कार्यक्रम में शीतल जैन, शिक्षक-शिक्षिकाएं एवं विद्यार्थी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

● ''अनुशासन दिवस'' ममता पब्लिक स्कूल में मनाया गया। प्रदीप जैन, लाजपत राय जैन एवं अहिंसा प्रशिक्षक अवधेशकुमार ने विद्यार्थियों को अनुशासित एवं संयमित जीवन जीने की प्रेरणा दी। विद्यार्थियों ने संकल्प, स्फूर्ति, हास्य कौशल का प्रदर्शन किया।

● ''अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस'' सभा भवन में आयोजित हुआ। यहां सिलाई प्रशिक्षण के संभागियों ने अणुव्रत गीत, महाप्राण ध्वनि, नमस्कार मंत्र का प्रदर्शन किया। डालचंद जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष प्रदीप जैन, मंत्री संजय जैन, अशोक जैन ने विचार रखे। कार्यक्रम में जितेन्द्र जैन, सुमन जैन, शारदा कंवर, ममता, सुनिता उपस्थित थे। संयोजन अवधेश कुमार ने किया।

■ संगरूर

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह मुनि सुमेरमल 'लाडनूं', मुनि उदितकुमार के सान्निध्य में अणुव्रत समिति एवं सभा संगरूर के संयुक्त तत्वावधान में 26 सितंबर 2010 से 2 अक्टूबर 2010 तक मनाया गया। वक्ताओं ने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन को नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का संवाहक बताया।

● ''पर्यावरण दिवस'' पर मुनि सुमेरमल ने कहा जीवन के हर क्षेत्र में पर्यावरण की विशुद्धि जरूरी है। आज विकास के नाम पर प्रदूषण को फैलाया जा रहा है। स्वार्थ के नाम पर धरती का अवैध उत्खनन एवं अन्य विकृतियां बढ़ रही हैं। यह प्राणी मात्र के लिए खतरनाक है।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' गवर्नमेंट गर्ल्स सी.से. स्कूल परिसर में मनाया गया। इसमें 85 अध्यापिकाओं एवं 1800 छात्राओं ने भाग लिया। मुनि उदितकुमार ने कहा मात्र पढ़ाई करना, अच्छे अंक पा लेना, उच्च डिग्री हासिल कर लेना ही पर्याप्त नहीं है। इसके साथ विद्यार्थी का जीवन आदर्श युक्त होना चाहिए। स्कूल की प्राचार्या मनजीत कौर ने मुनिश्री का स्वागत किया। अध्यापिका उपासना ने आभार ज्ञापन किया। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. जगदीश राय जैन ने अणुव्रत आंदोलन का परिचय दिया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' अगरनगर अमृतकुंज में मनाया गया। मुख्य वक्ता समाज सेवा मंच के अध्यक्ष प्रो. उदयप्रताप सिंह ने कहा अणुव्रत एक रचनात्मक कार्यक्रम है, इसे अपनाने से देश की तरक्की स्थायी होगी। सरकार को अणुव्रत आचार संहिता के अनुरूप चलना चाहिए। मुनि उदितकुमार ने अणुव्रत नियमों की जानकारी दी। मुनि विजयकुमार ने गीत का संगान किया।

मुनि सुमेरमल ने कहा आचार्य तुलसी ने चारित्रिक एवं मानवीय मूल्यों के विकास हेतु अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत नियमों के अनुरूप हर व्यक्ति आगे बढ़े। इस अवसर पर सुनीता ढींगरा, सरदार हरमिलापसिंह, विपुल मित्तल, डॉ. रविकांत का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' का आयोजन जिला जेल संगरूर में 735 पुरुष एवं 93 महिला कैदियों के मध्य हुआ। जेल के एस.पी. सरदार जोगासिंह ने सभी का स्वागत किया। मुनि उदितकुमार ने कैदियों को संबोधित करते हुए कहा नशा अंततः नाश का ही रास्ता है। आदमी अपने तनाव को दूर करने के लिए नशे का सहारा लेता है फिर वह उसमें डूब जाता है तथा वह अपना एवं अपने परिवार कर

प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना से ही मैत्री संभव

नाश कर लेता है। दृढ़ संकल्प बल के सहारे नशे को छोड़ा जा सकता है। मुनिश्री के आह्वान पर 400 कैदियों ने नशा छोड़ने, चोरी न करने के संकल्प लिये। फादर ई.एस. फ्रांसिस, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. जगदीश जैन के प्रासंगिक वक्तव्य हुए। इस अवसर पर विजय गुप्ता, राहुल जिंदल, राजू जैन, अमन चौधरी, रमेश शर्मा उपस्थित थे।

● ''अनुशासन दिवस'' का कार्यक्रम स्प्रिंगडेल्स स्कूल में रखा गया। वरिष्ठ प्राध्यापक विशाल सिंगला, सुभाष शर्मा, संजीव शर्मा उपस्थित थे। मुनि उदितकुमार ने कहा अनुशासन में चलने से ही तरक्की स्थायी होती है। श्रद्धा, समर्पण एवं विकास के लक्ष्य को लेकर चलने वाला अनुशासन का पालन कर सकेगा। मुनि विजयकुमार ने गीत का संगान किया।

● ''अहिंसा दिवस'' पर अमृतकुंज में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए मुनि विजयकुमार ने कहा हिंसा मात्र किसी को मारने तक ही सीमित नहीं है, अपितु किसी को दुःख देना, मानसिक उत्पीड़न करना भी हिंसा के दायरे में माना गया है। प्राणी मात्र के प्रति अहिंसा की भावना पनपने से ही मैत्री सध सकती है। कार्यक्रम की सफलता में सभाध्यक्ष विजय गुप्ता, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष डॉ. जगदीश राय जैन, डॉ. आर.सी. जैन एवं संदीप चौधरी का सराहनीय योगदान रहा।

■ कालांवाली

अणुव्रत समिति कालांवाली के तत्वावधान में साध्वी मधुरेखा के सान्निध्य में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम साध्वी कीर्तियशा, साध्वी सुव्रतयशा, साध्वी मधुयशा की प्रेरणा से शहर के विभिन्न स्थानों पर उल्लासपूर्वक मनाया गया।

● 26 सितंबर 2010 को ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' का कार्यक्रम कई संस्थाओं के सहयोग से आयोजित किया गया। इसमें हीरा सिंह, धर्मपाल, शिक्षा समिति के कार्यकर्ता दिनेश गर्ग, कश्मीरी लाल, तीर्थ लवली, सुशील, मोहनलाल ने भाग लिया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के सभी कार्यक्रमों की सफलता में कश्मीरी लाल गर्ग, मोहनलाल बंसल, देव राज, तीर्थ राम, मोहन बिंदल, सुशील गोयल, दिनेश गर्ग, रमन जैन, मनोज गोयल, अनिल गुप्ता, हनुमान दास का सराहनीय श्रम रहा। सुशील गोयल ने जीवन विज्ञान की जानकारी दी। समिति के अध्यक्ष दीवानचंद गोयल ने संभागियों का स्वागत किया।

■ तोशाम

साध्वी विनयश्री के सान्निध्य में तोशाम के विभिन्न स्कूलों में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह के अंतर्गत बहुआयामी कार्यक्रम आयोजित हुए। आदर्श सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के 1400 विद्यार्थियों ने साध्वी विनयश्री की प्रेरणा से नशामुक्त रहने का संकल्प किया। इसी क्रम में अग्रसेन हाई स्कूल के 1000 एवं जिन्दल सीनियर सेकेण्डरी स्कूल के 450 विद्यार्थियों को साध्वी पवनप्रभा एवं साध्वी आत्मयशा ने जीवन विज्ञान एवं अनुशासन का पाठ पढ़ाया। साध्वीश्री के सान्निध्य में ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' मनाया गया। इसमें सनातन धर्म, ब्रह्मकुमारी, इस्लाम धर्म एवं समाज के प्रतिनिधियों ने विचार रखे।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस पर लगभग 108 भाई-बहनों ने सामूहिक रूप से पर्यावरण संरक्षण की बात कही। सभी संभागियों ने साध्वीश्री के समक्ष घरेलू हिंसा न करने-करवाने एवं हरे-भरे पेड़-पौधों को बचाने की बात कही।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर साध्वी विनयश्री ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा अच्छे नागरिक बनने के लिए अणुव्रतों का पालन करना आवश्यक है। शिक्षा के साथ-साथ आचार, अनुशासन एवं मर्यादा का होना जरूरी है। आचार्य तुलसी के प्रमुख घोष ''निज पर शासन फिर अनुशासन'' को जीवन में अपनाकर ही जीवन को सफल बनाया जा सकता है। साध्वी पवनप्रभा ने कहा बच्चे देश के कर्णधार हैं। बच्चों में बौद्धिक विकास के साथ-साथ भावात्मक विकास का होना भी जरूरी है। साध्वी आत्मयशा ने बच्चों को जीवन विज्ञान के प्रयोग करवाये। अग्रवाल सी. से. स्कूल, आदर्श सी.से. स्कूल एवं जेपीएस हाई स्कूल के प्राचार्यों ने साध्वीवृंद का स्वागत किया। तीनों ही विद्यालयों के लगभग 3000 बच्चों ने अणुव्रत नियमों पर चलने का संकल्प किया। इस अवसर पर अणुव्रत समिति के अध्यक्ष नानकचंद सरपंच, नरेन्द्र जैन, मुकेश जैन, मनोज जैन उपस्थित थे।

● ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' का प्रारंभ कन्यामंडल द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। इस अवसर पर सनातन धर्म मंदिर के पंडित विनोद शास्त्री, ब्रह्मकुमारी आश्रम से मंजू बहन व शोभा बहन, मुस्लिम समुदाय से उमादीन मौलवी ने साम्प्रदायिक सौहार्द पर अपने विचार रखे। साध्वी विनयश्री ने नैतिकता, प्रामाणिकता, ईमानदारी एवं अणुव्रत की व्याख्या करते हुए कहा अणुव्रत असत्य से सत्य की ओर, अंधेरे से प्रकाश की ओर एवं भोग से त्याग की ओर जे लाने वाला राजमार्ग है। इस अवसर पर साध्वी विनयश्री ने कहा मैत्री एवं प्रमोद भावना का जन-जन में विकास हो। साध्वी पवनप्रभा ने कहा आपसी संबंधों को मधुर बनाने के लिए सकारात्मक सोच की महत्ती आवश्यकता है। इस अवसर पर साध्वी आत्मयशा, मुस्लिम समुदाय के मौलवी ने विचार रखे। सभी धर्मगुरुओं ने मैत्री, सहिष्णुता एवं भाईचारे की एकता को बनाए रखने की प्रेरणा दी। संयोजन पवन जैन ने किया।

मानवीय एकता की दिशा में अणुव्रत की शाश्वत अपेक्षा

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर साध्वीश्री ने कहा नशा करने वाला व्यक्ति न केवल शरीर का विनाश करता है। बल्कि अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाता है। साध्वी आत्मयशा ने कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। ज्ञानशाला के बच्चों ने 'नशा नाश का द्वार' नाटिका प्रस्तुत की। उपस्थित भाई-बहनों ने नशामुक्ति का संकल्प लिया।

■ बैंगलोर

● ''अनुशासन दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा जीवन विकास का सर्वोपरि तत्त्व है अनुशासन। अनुशासन जीवन का प्राण एवं त्राण है। अणुव्रत का उद्घोष है ''संयम ही जीवन है। अनुशासन में रहने वाला ही प्रगति करता है। क्योंकि अनुशासन से भावशुद्धि होती है। मुनि परमानंद ने कहा सुनीति से युक्त मार्ग सुख और संतोष की ओर ले जाता है। अणुव्रत सुनीति का मार्ग दिखाता है।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा अगर विद्यार्थी के भीतर विवेकशीलता, सहनशीलता, विनम्रता, मृदुता हो तो वह शिक्षा की डिग्री उपयोगी बन जाती है। ये सब जीवन विज्ञान के द्वारा आते हैं। कांता लोढ़ा ने कहा व्यक्ति विवेक व संस्कार की डोर को हाथ में रखते हुए डिग्री की पतंग को ऊपर उठाए तो अपने जीवन को आलोकित कर सकता है। इस अवसर पर वाद-विवाद प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। कार्यक्रम में शांतिलाल मांडोत, राजेश चावत उपस्थित थे। संचालन मीनाक्षी दक ने किया।

● ''अहिंसा दिवस'' पर मुनि जिनेशकुमार ने कहा आज हिंसा की समस्या से समूचा विश्व त्रस्त है। हिंसा को मिटाने का अचूक अस्त्र है अहिंसा। अहिंसा के समान कोई धर्म नहीं है। अहिंसा सनातन धर्म है। अहिंसा क्षेमंकारी है। अहिंसा मानवता के विकास की पहली सीढ़ी है। सभी जीवों के प्रति संयम रखना ही अहिंसा है। महात्मा गांधी अहिंसा एवं सत्य के पुजारी थे। उन्होंने साम्प्रदायिक एकता के लिए महनीय प्रयत्न किये एवं देश की आजादी में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। मुनि परमानंद ने अहिंसा को सबके लिए कल्याणकारी बताया। मुनि सुबोधकुमार ने भी अपने विचार रखे। संचालन मदनलाल बरड़िया ने किया। अहिंसा दिवस के साथ ही उद्बोधन सप्ताह का समापन हुआ।

■ हैदराबाद

अणुव्रत समिति आन्ध्र प्रदेश द्वारा हिमायतनगर सभा भवन में ''सांप्रदायिक सौहार्द दिवस'' साध्वी सत्यप्रभा के सान्निध्य में 29 सितंबर 2010 को मनाया गया। इसमें गौतम मॉडल हाई स्कूल के 300 बच्चों एवं अध्यापकों ने भाग लिया। साध्वीश्री ने अणुव्रत आंदोलन पर प्रकाश डाला। उन्होंने विद्यार्थी अणुव्रत नियमों के तहत सभी बच्चों को अणुव्रत अपनाने की प्रेरणा देते हुए वर्गीय विद्यार्थी अणुव्रतों के संकल्प करवाए। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष उगमचंद सुराणा ने सभी का स्वागत करते हुए अणुव्रत से जुड़ने का आह्वान किया। दिलीप डागा ने अणुव्रत आंदोलन को जन-जन तक ले जाने में सभी से सहयोग करने का निवेदन करते हुए कहा अणुव्रत मानव जाति के विकास के लिए पथ दर्शन है, जिसकी आज शाश्वत अपेक्षा है। निर्मला बैद ने स्कूल परिवार का स्वागत किया। उन्होंने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि 30 सितंबर को नशामुक्ति दिवस, 1 अक्टूबर को अनुशासन दिवस एवं 2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस मनाया गया। इस अवसर पर हर्षवर्धन सेठिया, दिलीप डागा, रिद्धीश रमेश जागीरदार, संदीप बोहरा उपस्थित थे। संचालन प्रकाश भंडारी ने किया।

■ अहमदाबाद

गुजरात राज्य अणुव्रत समिति के तत्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह क्षेत्र के विभिन्न स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थलों पर धूमधाम से मनाया गया। ''अहिंसा दिवस'' पर साध्वी कनकरेखा ने कहा सुख व शांति का राजमार्ग है अहिंसा। विश्व में चहुंओर हिंसा व आतंकवाद का खुला तांडव हो रहा है। इसका स्थायी समाधान है अहिंसा। भुखमरी व शोषण की समस्याओं को सुलझाकर ही हिंसा व आतंकवाद पर काबू पाया जा सकता है। मुख्य अतिथि मनीष भाई शाह ने कार्यक्रम की प्रभावना से अणुव्रत आचार संहिता स्वीकार की। जवेरीलाल संकलेचा ने स्वागत भाषण किया। पूरणचन्द्र भाई ने विचार रखे। अतिथियों का सम्मान अशोक दूगड़ व नटवर कोठारी ने किया। इस अवसर पर व्यसनमुक्ति प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। मंगलाचरण कन्या मंडल ने किया। कार्यक्रम की सफलता में गौतम सजलानी, छीतरमल मेहता, दामोदर कोठारी, सुरेन्द्र लूणिया, सुरेश महनोत, भवरलाल चोरड़िया, नरेन्द्र माण्डोत का सराहनीय श्रम रहा।

■ सूरत

● 26 सितंबर 2010 को अणुव्रत समिति सूरत के तत्वावधान में उधना सभा भवन में ''साम्प्रदायिक सौहार्द दिवस'' विभिन्न धर्मगुरुओं की उपस्थिति में साध्वी कंचनप्रभा के सान्निध्य में मनाया गया। महिला मंडल ने अणुव्रत गीत का संगान किया। साध्वीश्री ने कहा विश्व के सभी महापुरुषों ने एक ही संदेश दिया वह है प्रेम का संदेश, आपसी सौहार्द का संदेश तथा मानवता का संदेश। उनके उपदेशों में कोई फर्क नहीं सत्य सर्वत्र एक होता है। इस अवसर पर उपस्थित सभी धर्मगुरुओं ने आपसी सौहार्द को बढ़ाने की बात कही। समिति के अध्यक्ष बालू भाई पटेल ने स्वागत किया। संचालन

www.terapanthinfo.com

जीवन विज्ञान द्वारा संस्कारों का सिंचन

समिति के मंत्री अर्जुनलाल मेड़तवाल ने किया।

● ''जीवन विज्ञान दिवस'' पर साध्वी कंचनप्रभा ने कहा जीवन विज्ञान मूल्य आधारित शिक्षा पद्धति का उपक्रम है। जीवन विज्ञान से संस्कारों का सिंचन होता है। यह सुखमय जीवन की बुनियाद है। इस अवसर पर साध्वी मंजूरेखा, रमण भाई पटेल, लीनाबेन ने अपने विचार रखे। समिति के अध्यक्ष बालू भाई पटेल ने अतिथियों का साहित्य द्वारा सम्मान किया। संचालन समिति के मंत्री अर्जुनलाल मेड़तवाल ने किया।

● ''अणुव्रत प्रेरणा दिवस'' पर साध्वी कंचनप्रभा ने कहा अणुव्रत हर इन्सान को चरित्रवान बनाता है। मनुष्य की सच्ची पहचान उसका अपना चरित्र है। इस अवसर पर साध्वी मंजूरेखा, वीर नर्मदा दक्षिण गुजरात विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अश्विन भाई कापड़िया ने कहा अणुव्रत का दर्शन आने वाले समय में हमारे भारत देश को आध्यात्मिक प्रगति के शिखर पर चढ़ाएगा। अंकेश भाई दोशी एवं विनोद बांठिया ने डॉ. अश्विन का साहित्य द्वारा सम्मान किया। बसंतीलाल नाहर ने अणुव्रत गीत का संगान किया। संचालन अर्जुनलाल मेड़तवाल ने किया।

● ''पर्यावरण शुद्धि दिवस'' पर साध्वी कंचनप्रभा ने कहा स्वयं की संयम साधना ही पर्यावरण शुद्धि में समाधायक बन सकती है। पर्यावरणविद् डॉ. मीनूभाई परबिया ने कहा वनस्पति, जल एवं पृथ्वी आदि हमारे जीवन के आधार हैं। अतः इनका संरक्षण जरूरी है। समागत अतिथियों का सुवालाल बोल्या एवं रामविलास ने साहित्य द्वारा सम्मान किया। संचालन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

● ''नशामुक्ति दिवस'' पर साध्वी केचनप्रभा ने कहा नशा केवल भारत ही नहीं पूरे विश्व की समस्या है। अणुव्रत अभियान के माध्यम से अनेकों ने वृत्तियों को परिमार्जित कर जीवन शैली को सुंदर बनाया है। इस अवसर पर साध्वी मंजूरेखा, डॉ.सी.पी. शाह, पारस संचेती, बालूभाई पटेल ने विचार रखे। संचालन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

● ''अनुशासन दिवस'' पर साध्वी कंचनप्रभा ने कहा किसी भी संगठन की प्राणवत्ता है अनुशासन। समणी निर्देशिका ज्योतिप्रज्ञा ने कहा अनुशासन को अपने जीवन में मूल्यवत्ता देने वाला शत-प्रतिशत सफल होता है। कार्यक्रम में अशोक भाई संघवी, लक्ष्मीलाल बाफना, बालचंद बैताला उपस्थित थे। संचालन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

● ''अहिंसा दिवस'' का प्रारंभ नेमीचंद कावड़िया द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। इस अवसर पर साध्वी कंचनप्रभा, साध्वी मंजूरेखा ने अहिंसा की व्याख्या की। प्रख्यात शिक्षाविद् लेखक एवं पत्रकार डॉ. शशिकांत शाह ने कहा कि सच्ची अहिंसा का अर्थ है हृदय परिवर्तन। इस अवसर पर आदिवासी क्षेत्र कपराड़ा के शबरी छात्रालय की 75 छात्राएं संचालक नितिन भाई सोनावाला के नेतृत्व में पहुंचकर कई रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किए। संचालन अर्जुन मेड़तवाल ने किया।

With Best Compliments From:

Chandu Jain

ETC

EXPRESS TRANSPORT CORPORATION

(Transportation & Handling for Project Cargo)

47-A, Zakaria Street, Kolkata - 700073

Tel. : 2235-8136/8137, **Fax :** 22215467

Mobile : 9830041942

E-mail : expresstransco@rediffmail.com

www.terapanthinfo.com

61वां वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन संपन्न

राजनीति में जाने वाले नैतिक मूल्यों को नजरअंदाज न करें

सरदारशहर, 12 अक्टूबर। अणुव्रत महासमिति का 61वां वार्षिक अणुव्रत अधिवेशन 9, 10, 11 अक्टूबर 2010 को अणुव्रत महासमिति, अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास एवं अणुव्रत विश्व भारती के संयुक्त तत्वावधान में सरदारशहर (चुरू-राजस्थान) में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में आयोजित हुआ।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा आज देश के सामने असंयम की ज्वलंत समस्या है। ऐसी परिस्थिति में अणुव्रत आंदोलन संयम का संदेश बांट रहा है। संयम की चर्चा देश में निरंतर हो रही है, यह कोई कम बात नहीं है। अधिवेशन में हमें गहराई से विचार करना है कि संयम की आवाज को कैसे बुलंद किया जा सकता है। आज नई ऊर्जा के साथ इस आंदोलन को आगे बढ़ाना है। मुनि किशनलाल ने कहा कि अणुव्रत जीवन की दिशा बदलता है। आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आंदोलन के द्वारा नैतिकता, संयम और अहिंसा को नये रूप में प्रस्तुत किया। धर्म को साम्प्रदायिक कटघरे से निकालकर जन-जन तक पहुंचाने का कार्य किया।

मुनि मोहजीतकुमार ने कहा अणुव्रत से जुड़े सभी कार्यकर्ताओं में कार्य की निष्ठा पैदा होनी चाहिए। कार्यकर्ताओं में नाम, ख्याति की भावना न रहे बल्कि काम करने का जुनून सवार होना चाहिए।

इस अवसर पर बालूभाई पटेल, डॉ. कुसुम लूणिया, अर्जुन मेड़तवाल, डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी, अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने अपने विचार रखे।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोथरा एवं अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका ने अणुव्रत समिति भिवानी को श्रेष्ठ अणुव्रत समिति सम्मान 2010 एवं दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति को प्रोत्साहन सम्मान प्रदान किये। अणुव्रत समिति सरदारशहर के मंत्री मनीष पटावरी ने अणुव्रत गीत का संगान किया। स्वागत भाषण डालचंद चिंडालिया ने दिया। कार्यक्रम का संयोजन अणुव्रत इकाई प्रभारी राजेन्द्र सेठिया ने किया।

द्वितीय दिवस

अधिवेशन के दूसरे दिन अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा सत्य भगवान और लोक का सारभूत तत्त्व है। अणुव्रत आंदोलन का मुख्य घोष है ''संयमः खलु जीवनम्'' अर्थात संयम ही जीवन है। संयम के द्वारा ही विश्व की समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। जो इन्द्रिय, मन, वाणी का संयम करता है वह समस्या समाधान में सहायक बनता है। आचार्य महाश्रमण ने आचार्य तुलसी एवं आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा संयम और अहिंसा के संदेश को फैलाने के लिए की गयी सम्पूर्ण देश की पद-यात्राओं का भी उल्लेख किया। यदि अनुकंपा की चेतना जागृत हो जाए तो अपराध नियंत्रण अपने आप हो जायेगा।

आचार्य महाश्रमण ने आगे कहा राजनीति अस्पृष्य नहीं है। राजनीति आवश्यक है, पर इस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए कि राजनीति में जाने वाले लोग नैतिक मूल्यों को नजरअंदाज न करें। मूल्यों के प्रति निष्ठा रखने वाला राजनीति का दुरुपयोग नहीं करता। उन्होंने मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की ओर इंगित करते हुए कहा कि राजस्थान अपराध मुक्त बने इस ओर ध्यान देना आपका कर्त्तव्य है। व्यापारी वस्तु का वितरण कर सेवा करता है। उसके सामने सेवा करना प्रथम लक्ष्य और पैसा दूसरा लक्ष्य होना चाहिए। अधिकारियों के सामने भी व्यवस्था बनाकर जनता की सेवा प्रथम लक्ष्य होना चाहिए।

साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा ने कहा अणुव्रत सम्प्रदायविहीन धर्म है। कथनी-करनी की समानता, मानवीय एकता, ज्ञान आचार की समन्विति अणुव्रत है।

मुख्य अतिथि राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा अणुव्रत असाम्प्रदायिक संगठन है, इसकी पूरे देश में चर्चा है। जो अनुशासित होता है, वही दूसरों पर अनुशासन कर सकता है। जहां सत्य है वहीं अहिंसा है और जहां अहिंसा है वहीं सत्य है। मुख्यमंत्री ने बढ़ती मूल्यों में गिरावट पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने गोधरा कांड के बाद गांधी की भूमि से अहिंसा का जो संदेश दिया वह मूल्यों की गिरावट को रोकेगा और अहिंसा की आवाज को बुलंद करेगा।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अणुव्रत विश्व भारती के अध्यक्ष तेजकरण सुराणा ने कहा दसवें साल के दसवें महीने की दस तारीख को मुख्यमंत्री यहां आए हैं। आज ज्योतिष गणना के अनुसार राजयोग भी है। आचार्य महाश्रमण के रूप में महान अणुव्रत अनुशास्ता का सान्निध्य प्राप्त है। ऐसे समय में अणुव्रत आंदोलन द्वारा प्रेषित संयम का संदेश सम्पूर्ण विश्व में व्यापत होगा ऐसा विश्वास है।

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने अणुव्रत प्रवक्ता डॉ. छगनलाल शास्त्री एवं अणुव्रत सेवी मोहन भाई जैन का सम्मान किया।

www.terapanthinfo.com

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल एम. रांका एवं स्थानीय समिति के अध्यक्ष रावतमल सैनी, आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष सुमतिचंद गोठी ने साहित्य द्वारा मुख्यमंत्री का सम्मान किया। इस अवसर पर अमेरिकन गांधी के रूप में विश्वयात्रा कर अहिंसा का संदेश फैलाने वाले ने अपने विचार रखे। प्रारंभ अब्दुल जब्बार द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने आभार ज्ञापित किया। संचालन अणुव्रत विश्व भारती के महामंत्री संचय जैन ने किया।

अणुव्रत भवन का लोकार्पण

मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने रतनीदेवी गोठी धर्मपत्नी स्व. तोला राम गोठी द्वारा नवनिर्मित अणुव्रत भवन का लोकार्पण किया। अध्यक्षता सुमतिचंद गोठी ने की।

तृतीय दिवस

अधिवेशन के तीसरे दिन समापन समारोह को संबोधित करते हुए अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने कहा अणुव्रत से जीवन में परिवर्तन होता है। अणुव्रत को स्वीकार करने वाला अपने जीवन में परिवर्तन कर आत्मा की शुद्धि करता है। व्रत भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण तत्त्व है। आचार्य तुलसी ने सैकड़ों लोगों को इस ओर प्रेरित किया। इसलिए हमें अणुव्रत आंदोलन को गति देने के लिए समर्पित भाव से एकजुट होकर कार्य करना होगा। इसके साथ-साथ यह भी आवश्यक है कि अणुव्रत समितियों से जुड़े कार्यकर्ताओं का नशामुक्त होना जरूरी है। स्वयं नशामुक्त रहकर ही हम दूसरों के समक्ष अणुव्रत की नशामुक्ति की बात समझा सकते हैं। आचार्यश्री ने घरेलू हिंसा के कारणों पर भी प्रकाश डाला।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा कि हजारों लोग अणुव्रत से जुड़े हुए हैं, अणुव्रत ने अंतर्राष्ट्रीय छवि बनाई है। अणुव्रत में किसी प्रकार का जातिवाद नहीं है और यह आंदोलन संप्रदायविहीन है।

इस अवसर पर अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम', डॉ. महेन्द्र कर्णावट, संपत शामसुखा, प्रो. हुबनाथ पांडेय, बर्नी मेयर (अमेरिकन गांधी), निर्मल एम. रांका ने अपने विचार व्यक्त किये। संयोजन अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा ने किया। **अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण ने इस मौके पर निम्न कार्यकर्ताओं को अणुव्रत सेवी के संबोधन से संबोधित किया**

- **सरदारअली, बीकानेर**
- **गणेश डागलिया, उदयपुर**
- **महेन्द्र जैन, जयपुर**
- **माला कातरेला, चेन्नई**
- **धनराज बोथरा, दिल्ली**
- **निर्मला बैद, हैदराबाद**

सुषमा जैन को अणुव्रत लेखक पुरस्कार की घोषणा

अणुव्रत महासमिति के 61वें वार्षिक अधिवेशन में शासन भक्त स्व. हुकमचंद सेठिया जलगांव (श्रीडूंगरगढ़) की पुण्य स्मृति में सुपुत्र सर्वश्री ताराचंद, दीपचंद, ठाकरमल सेठिया के सौजन्य से अणुव्रत महासमिति द्वारा दिये जाने वाले अणुव्रत लेखक पुरस्कार-2009 की घोषणा के तहत इस वर्ष अणुव्रत पाक्षिक की वरिष्ठ साहित्यकार एवं लेखिका सुषमा जैन को प्रदत्त किया जायेगा। सुषमा जैन को इससे पूर्व भी डॉ. भीमराव अंबेडकर फैलोशिप-1999, पर्यावरण विद्, विद्याश्री, ज्ञानश्री, क्रान्तिश्री, कलम का सिपाही, हिन्दी साहित्य रत्न, महिला रत्न, शहीद उद्यम सिंह क्रांतिकारी सम्मान, सर्वश्रेष्ठ प्रवक्ता इत्यादि उपाधियां एवं सम्मान मिल चुके हैं। सुषमा जैन की इस उपलब्धि पर अणुव्रत परिवार की हार्दिक बधाई।

अध्यक्षीय वक्तव्य

अणुव्रत का 61 वां संयुक्त अणुव्रत अधिवेशन 9,10,11 अक्टूबर 2010 को त्रिदिवसीय आयोजन के साथ अणुव्रत आंदोलन की जन्मभूमि सरदारशहर में अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमणजी के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। देशभर के लगभग 180 कार्यकर्ताओं ने इस अधिवेशन में भाग लिया। आचार्य महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलालजी व कई कर्मठ कार्यकर्ताओं ने अणुव्रत के प्रचार-प्रसार हेतु अपना चिंतन दिया।

मेरा मानना है कि अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड स्कूलों एवं सार्वजनिक स्थानों पर लगाए जाएं। अणुव्रत में विश्वास रखने वाले हर घर-परिवार में भी अणुव्रत आचार संहिता के बोर्ड लगने चाहिएं। देश के चारों कोनों में अणुव्रत केन्द्र बनें एवं वहीं से अणुव्रत का पैगाम पूरे देश में जाए। परम पूज्य गुरुदेव तुलसी शताब्दी वर्ष तक 10000 पाठकों के हाथों में अणुव्रत पत्रिका जानी चाहिए। देश के हिन्दी भाषी विधायक व सांसदों को अणुव्रत पत्रिका जानी चाहिए। राजस्थान एवं तमिलनाडु में यह कार्य प्रारंभ हो गया है। अब हमें गुजरात-महाराष्ट्र-पंजाब व हरियाणा के लिए प्रायोजक खोजने हैं।

अधिवेशन में अणुव्रत अनुशास्ता ने इंगित किया कि अणुव्रत महासमिति से संबद्ध जो अणुव्रत समितियां सक्रिय नहीं हैं, उन्हें सक्रिय करना चाहिए और देशभर में कम से कम 500 सक्रिय अणुव्रत समितियों का गठन होना चाहिए। अणुव्रत आंदोलन विगत 61 वर्षों से देश में नैतिकता-प्रामाणिकता एवं चरित्र उत्थान के लिए कार्य कर रहा है। जन-जन को मानवीय एकता का पाठ पढ़ा रहा है। अहिंसा के मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित कर रहा है। अणुव्रत आंदोलन को प्रभावी बनाने के लिए भारत सरकार से डाक टिकट निकलवाना चाहिए। दिल्ली से बीकानेर तक नई रेलवे लाइन बन रही है हम चाहते हैं कि इस मार्ग पर अणुव्रत एक्सप्रेस नाम की एक रेलगाडी हो। क्योंकि सरदारशहर अणुव्रत की जन्मभूमि है।

आचार्य तुलसी शताब्दी वर्ष नजदीक आ रहा है। छापर, जहां से अणुव्रत का उद्भव हुआ, सरदारशहर से पहला कदम उठा है और आचार्य तुलसी ने पूरे देश की अणुव्रत पदयात्रा की हैं अतः भारत का अंतिम छोर कन्याकुमारी इन तीनों स्थानों पर शिलालेख लगने चाहिएं। विकास परिषद के सरदारशहर अधिवेशन में हमने आह्वान किया था कि सरदारशहर में अणुव्रत भवन होना चाहिए। सरदारशहर में राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के कर कमलों से अणुव्रत भवन का लोकार्पण शुभता का प्रतीक है।

देशभर की तेरापंथी सभाएं अपना दायित्व समझकर अणुव्रत आंदोलन में सहभागिता प्रदान करें और हम सब मिलकर देश में नैतिकता की गूंज करें। अणुव्रत अधिवेशन में पधारे सभी प्रतिनिधियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूं। अणुव्रत समिति सरदारशहर के प्रति भी विशेष रूप से आभारी हूं, वयोवृद्ध कार्यकर्ता श्री रावतमल सैनी व श्री डालचंद चिंडालिया का भी पूर्ण योगदान मिला। आचार्य महाश्रमणजी, साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी, मुनि सुखलालजी का मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूं कि उनकी प्रेरणा और आशीर्वचन मिला। आपका मार्गदर्शन हमारी गति को ओर तेज करेगा, इसी मंगल कामना के साथ।

निर्मल एम. रांका

www.terapanthinfo.com